Ektisabat - Hazrat moulana yousuf Kandhlvi R.A.

नबूवत की मेहनत इक्तिसाबात के आईने मे

तर्तीब

हाफिज यूसुफ

एक्तिसाबात

हजरत मौलाना यूसुफ कान्धलवी रह0

नबूवत का काम एक्तिसाबात के आईने मे

तर्तीब

हाफिज यूसुफ

अर्जे मुअल्लिफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस किताब (नबूवत का काम एक्तिसाबात के आईने मे) मे दर्ज किये जा रहे ज्यादातर एक्तिसाबात हजरत मौलाना मुहम्मद यूसुफ रह0 के उन बयानात से लिये गये है जिन बयानात को मुसलमानों के सामने अब तक किसी ने पेश नही किया, ये बयानात जिस बयाज मे दर्ज है वो बयाज इस वक्त बंगले वाली मस्जिद मे मौजूद है। ऐसा नही है कि ये बयानात और लोगो के पास नही हैं इसलिये कि जिस बयाज मे ये बयानात दर्ज हैं उसी बयाज मे दर्ज दूसरे सारे बयानात किताबों मे हर्फ ब हर्फ शाया हो चुके हैं तो आखिर इन बयानात को मुसलमानों के सामने क्यों नही लाया गया ? इस सिलसिले मे मैं यहॉ पर चन्द बातें लिखकर फिर हजरत रह0 के एक्तिसाबात के मफहूम को आपके सामने पेश करता हूँ।

बात शुरू करता हूँ इस काम के बानी हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 के मलफूजात से कि हजरत रह0 ने फरमाया ! मुसलमानों ने गलतफहमी से समझ लिया है कि ईमान तो हमारे अन्दर मौजूद ही है इसलिये ईमान के बाद जिन चीजों का दर्जा है मुसलमान उनमे मशगूल हो गये (नमाज, रोजा, तस्बीह, तिलावात, हज और जकात वगैरह मे) हालॉकि ये मेहनत सिरे से ही ईमान पैदा करने के लिये है। (दीनी दावत सफा न0 283)
इसी बात को सामने रखकर फरमाया !

"मैंने इस काम का कोई नाम नही रखा अगर इस काम का कोई नाम रखता तो तहरीक ए ईमान रखता""

ये कह कर हजरत रह0 ने इस काम को तमाम फित्ना से महफूज रखने की पेशबन्दी की, एक मौके पर फरमाया ! हमारी ये तहरीक हकीकत मे ईमान की तहरीक है, आज कल आम तौर से जो इज्तेमाई काम होते हैं उनके करने वाले ईमान को सरसरी तौर पर फर्ज बतला कर उम्मत की ऊपरो सतह (नमाज, रोजा, तस्बीह, तिलावात, हज और जकात वगैरह) की तामीर करते हैं और ऊपर के दर्जे की जरूरियात की फिक्र करते हैं पर हमारे नजदीक उम्मत की पहली जरूरत यही है कि मुसलमानों के दिलों मे पहले सही ईमान की रोशनी पहुँच जाये। (मलफूजात हजरत मौलाना इलयास साहब रह0)
फिर एक मौके पर मौलाना जहीरूल हसन साहब से फरमाया ! जहीरूल हसन मेरी मंशा कोई समझ नही पा रहा है, लोग समझते है कि ये काम तहरीक ए सलात का है, मैं कसम से कहता हूँ कि ये काम हर्गिज तहरीक ए सलात नही है, मियॉ जहीरूल हसन इस काम से हमे एक नई कौम पैदा करनी है। (दीनी दावत)

हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 की इस मंशा को हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 ने समझा और फिर ईमान को समझाना शुरू किया यानी खुलआम अल्लाह के गैर की धज्जियॉ उधेड़नी शुरू की जिसके नतीजे मे लोग अल्लाह को तरफ मुतवज्जाह होने लगे और नबूवत की बात चल पड़ी। एक दिन बंगले वाली मस्जिद में फज्र की नमाज के बाद इस काम के करने वालों को इन अल्फाजों के साथ मुतवज्जाह किया और फरमाया ! इस काम क करने वालों के तीन तबके हैं जिसमे दो तबके अक्सरियत में है और एक तबका बहुत मुख्तसर लोगों का है। ये अक्सरियत वाले दोनो तबके सारी जिन्दगी इस मेहनत को करें पर खुदा इन्हें ईमान की हकीकत से नही नवाजेगें और वो तबका जो मुख्तसर लोगों का हैं, उनकी मेहनत पर खुदा उन्हे ईमान की हकीकत से मालामाल कर देगा। एक साहब बयान के बाद हजरत से मिले और कहा कि हजरत आपने काम करने वालों के जो तीन तबके बतलायें हैं उनका खुलासा कर दीजिये।

हजरत ने फरमाया ! एक तबका वो है जो इस काम को फुर्सत की वजह से कर रहा है (कि आज कल धंधा मन्दा है, कारोबार ठीला है, बारिश का मौसम है, खेती में कोई काम नही है, सीजन नही है वगैरह-वगैरह) और एक तबका इस काम को गर्ज की वजह से कर रहा है (कि डाक्टरों से थक हार चुके हैं कहीं से कोई फायदा नही हो रहा है तो चलो शायद इस काम के करने स ही बीमारी दूर हो जाये या आमदनी से घर का खर्च पूरा नही पड़ रहा हैं शायद इस काम के करने से

आमदनी में बरकत हो जाये या लड़की लड़कों की शादी के कोई रिश्ते नही आ रहे है शायद इस काम को करने से कोई रिश्ता मिल जाये या कर्जो का इतना बोझ है कि जिसकी वजह से हर वक्त उलझन और परेशानी रहती है, चलो इस काम को करते हैं कि शायद कोइ रास्ता खुल जाये वगैरह-वगैरह ये दोनो तबके जो अक्सरियत में हैं ये सारी जिन्दगी इस काम को करें खुदा इन्हे ईमान की हकीकत से नही नवाजेगें।

हां एक तबका जो बहुत कम लोगों का है ये वो लोग हैं जो अल्लाह से अपना रिश्ता सही करना चाहते हैं, अल्लाह के होकर रहना चाहते है, उसकी मंशा और मर्जी पर अपने आपकों चलाना चाहते है, इस काम से वो अपनी इस्लाह अपनी तरबियत चाहते है और अल्लाह के करीब पहुंचना चाहते हैं, यही वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह जल्लाशानुहु ईमान की हकीकत से नवाजने वाले है।

फिर एक दिन काम करने वालों को لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّٰهِ के मफहूम को बहुत आसान जुबान मे समझाया कि दुनियॉ में इन्सानियत की तीन किस्में हैं जो अल्लाह तआला को अपना रब मानती हैं पर ये तीनों किस्म के लोग अल्लाह तआला की जात स दुनियॉ व आखिरत मे कभी फायदा नही उठा सकते।

पहली किस्म मे वो लोग हैं जो जुबान से कहते और मानते हैं कि परवरिश करने वाली (यानी हर मख्लूक की हर जरूरत को पूरा करने वाली जात) जात सिर्फ अल्लाह ही की है पर अल्लाह तआला की जात बुतों के रास्ते से अपनी मख्लूकात की जरूरतों को पूरा करता है, ऐसा कहने वाले मुश्रिकीन-ए-मक्का के लोग थे और आज भी जो लोग इस अकीदे को मानने वाले हैं ये लोग भी इसी किस्म में दाखिल है।

दूसरी किस्म मे वो लोग हैं जो जुबान से कहते और मानते हैं कि परवरिश करने वाली जात सिर्फ अल्लाह की है पर अल्लाह तआला की जात अपनी मख्लूकात की जरूरतों को वलियों के रास्ते से यानी अल्लाह वालों के रास्ते से पूरा करता है, ये लोग मुर्तीदीन है।

तीसरी किस्म मे वो लोग हैं जो जुबान से कहते और मानते हैं कि परवरिश करने वाली जात सिर्फ अल्लाह ही की है पर अल्लाह तआला की जात अपनी मख्लूकात की हर जरूरत को कायनात के रास्ते से यानी दुनियावी असबाब के रास्ते से पूरा करता है, ये वो लोग हैं जिन्होने अपना किब्ला और अपना माबूद इस कायनात को बना रखा है।
पर 2 अप्रेल सन 1965 से (जिस दिन हजरत रह0 का पाकिस्तान मे इन्तेकाल हुआ) दावत के काम का रूख बदलना शुरू हो गया, रूख बदलने की वजह ये बनी कि बयान करने वालां ने हजरत की बातों और हजरत की मंशा से अपनी ऑखें बन्द करके अपनी इस्लाह और अपनी तर्बीयत से गाफिल होकर, मुसलमानों को इस काम मे लगाने की गर्ज और नियत करके, अपने-अपने इल्म के एतबार से बयानात कर-करके नबूवत की इस आली मेहनत को माल वालों और ओहदें वालों के हवाले कर दिया। जिसका नतीजा ये हुआ कि इन असबाब परस्तों ने काम के रूख को बदल कर नबूवत की इस मेहनत को इस्लाहुल मुस्लिमीन की एक तंजीम बना डाला जो आज आलमी सतह पर इन्तेशार का जरिया बन गयी हालॉकि हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 ने फरमाया था कि "यही काम खैरों को लाने वाला है और यही काम फित्नों को भी लाने वाला है, इस काम के करने वाले जो दोजखी लोग होगें वो भी काम करने वाले ही होगें इसलिये ये काम अपनी इस्लाह और अपनी तर्बियत के लिये है।" एक बार फरमाया कि

" तब्लीग के उसूलों मे से एक उसूल ये भी है कि उमूमी बयानात मे पूरी सख्ती हो (खुलेआम अल्लाह के गैर की धज्जियॉ उधेड़ी जाये) बल्कि जहॉ तक हो सके खास लोगों की इस्लाह के लिये भी उमूमी बयान ही किया जाये"

(मलफूजात हजरत मौलाना इलयास साहब रह0)

इन्ही सब बातों को सामने रखकर खुदा तआला ने 26 दिसम्बर सन 2016 मे संम्भल मुरादाबाद उ0प्र0 मे सारे आलम के काम करने वाले साथियों को ये हिदायत दिलवायी कि

"इस काम के लिये जिस साथी की बात तय हो, उसे बात करने से पहले हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात का मुताला करके कि हजरत की मंशा क्या थी और हजरत मुसलमानों से क्या चाहते थे उन्ही बातों को बयान करे वरना हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात का मुताला किये बगैर दावत के मिम्बर से किसी को बात करने की गुंजाईश नही है बल्कि ऐसा करना इस काम के साथ और मज्मे के साथ खयानत है।"

जब हम हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात का मुताला करेगें तब पता चलेगा कि हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 उम्मत को किस बुनियाद पर उठाना चाह रहे थे अगर बयानात का मुताला नही करेगें तो किसी बड़े खतरे का शिकार हो जायेगें, हम समझेगें कि हम तब्लीग का काम कर रहे हैं पर हमारे अन्दर शिर्क का माददा पैदा हो रहा होगा। हजरत अली रजि0 ने मुसलमानों को खतरे से बचाने के लिये ही (कि जिसकी जो समझ मे आये वो मस्जिद के मेंम्बर से बयान कर दे ओर लोग बयान सुनकर खतरे का शिकार हो जाये) बसरा की सारी मस्जिदों के मिम्बरों को तुड़वा दिया था कि कोई बयान करने वाला कहीं कोई बयान नही करेगा सिर्फ हसन बसरी रह0 को बयान करने की इजाजत दी थी। हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 के बयानात पर आज तक दुनियॉ मे किसी ने उगंली नही उठाई, इस सदी के सबसे बड़े अहल ए इल्म हजरत मौलाना सैययद अबुल हसन नदवी रह0 (अली मिंयॉ) और हजरत मौलाना मंजूर नोमानी रह0 जैसी हस्तियॉ भी हजरत रह0 के बयानात की कायल थी इसलिये कि हजरत रह0 ने ईमान के साथ अमल को समझाया है पर आज हमारे बयान करने वालों पर उगंलियॉ उठने के साथ फत्वे भी जारी होने लगे आखिर इसकी वजह क्या है ? इसकी वजह ये है कि बयान करने वाल मुसलमानों को खुद उनकी जरूरत ना समझा कर उम्मत की जिम्मेदारी समझा रहे है हालॉकि हर एक शख्स की सबसे पहली जरूरत ईमान है। हजरत रह0 ने हमेशा अपने बयान का मौजू ईमान को ही बनाया फिर ईमान के साथ अमल को समझाया है, हजरत ने कुरआन पाक की जिन आयतों पर कभी बयान नही किया आज उन्ही आयतों से बात शुरू होती है फिर उन्ही आयतों पर बात खत्म करके अल्लाह के रास्ते म निकलने की तश्कील की जा रही है अगर ईमान के मौजू से गाफिल होकर अमल को समझाया जायेगा तो ये बात याद रखने की है कि अमल के साथ मसाएल और फत्वे हैं और इन्ही दो चीजों पर मुसलमानों के अलग अलग मसलक बने हैं पर ईमान के साथ ऐसा नही है क्यों कि ईमान का तआल्लुक तक्वे से है। बस अल्लाह पाक हम सबको हजरत मौलाना इलयास साहब रह0 और हजरत मौलाना यूसुफ साहब रह0 की बातों और उनकी मंशा को ही सामने रखकर नबूवत की इस आली मेहनत को करने की तौफीक अता फरमाये।

मुहम्मद यूसुफ

नबूवत का काम एक्तिसाबात के आईने मे

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1

अल्लाह रब हैं यह लफज नही एक मेहनत है

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे फरमाया ! अल्लाह रब हैं यह लफज नही एक मेहनत है अगर कोई आदमी ये कहे कि मै दुकान से पलता हूँ या खेती से पलता हूँ या मुलाजमत से पलता हूँ या हुकुमत से पलता हूं तो यह “ पलता हूँ ” कहना लफज नही बल्कि एक मेहनत है, इतना कहने के बाद मेहनत शुरू हो जाती है कि खेती के लिये जमीन खरीदता है, हल चलाता है, गल्ला पैदा करके उसे ल जाकर बेचता है फिर जानवर और मकान खरीदता है, निकाह करता है, गरज इस लफज के पीछे एक लम्बी चौड़ी मेहनत की जिंदगी है। ऐसे ही जब कोई कहा कि हमारे रब अल्लाह हैं तो “रब अल्लाह हैं” कहकर बात खत्म नही हुई बल्कि यहां से बात शुरू हुई कि जब अल्लाह पालने वाले हैं तो सबसे पहले गैरों से पलने का यकीन बदल से निकालो यह“रब अल्लाह हैं” पर पहली मेहनत है कि मैं जमीन व आसमान और उसके अन्दर की चीजों से नही पलता बल्कि अल्लाह से पलता हूं अब इसको मेहनत करके दिल का यकीन बनाओ। इस यकीन को रग व रेशा में उतारने के वास्ते मुहम्मद सल्ल0 के अमल हैं, अल्लाह से पलता हूं इस बोल की हकीकत दिल में उतारने के लिए मुल्क व माल तिजारत व खेती की मेहनत नही है बल्कि वह तो दिल से निकल कर जुबान पर आ जायेगी पर जब इन्सान अल्लाह की रबूबियत के यकीन वाली मेहनत को छोड़ कर मुल्क व माल वाली मेहनत पर लगता है तो अल्लाह की रबूबियत दिल से निकल कर जुबान पर रह जाती है। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

2

हमें सीधे सीधे अल्लाह से पलना है

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे ही फरमाया ! नबियों वाली मेहनत और हुजूर सल्ल0 वाली मेहनत लफज “ रब ” पर करनी होगी कि मेहनत करके इस हकीकत तक पहुंचो कि हमें सीधे सीधे अल्लाह से पलना है, खुदा को पालने में खेती और दुकान की जरूरत नही वह अपने हुक्मों से पालता है अगर इसकी हकीकत दिल मे पैदा हो जाए तो अमरीका और रूस भी तुम्हारी जूतियों में होगा बस शर्त इतनी है कि ये सिर्फ जुबान का बोल न हो दिल के अन्दर की हकीकत हो फिर दुनिया में कामयाबी मिलेगी और कब्र के अजाब से बचोगें हूरें बाग और सोना चादी के मकान हमेशा की जवानी हुस्न व जमाल सब इसी पर मिलेगा। इसी को दिल में फिट करने के लिए हुजूर सल्ल0 की रिसालत है, कायनात में जो कुछ है वह फानी है और अल्लाह के पास लामहदूद गैरफानी है, परवरिश उस लामहदूद की तरफ से है इसलिए हुजूर सल्ल0 के तरीका ए अमल पर मेहनत करो तो अल्लाह तर्बियत करने वाले है। अल्लाह को माबूद बनाकर अल्लाह की इबादत करके पलना है अगर इबादत से पलने पर मेहनत करोग तब दिल में उतरेगा कि अल्लाह रब हैं और इबादत नमाज है। नमाज तुम्हारे अपने इस्तेमाल का तरीका है जमीन या मोटर या जानवरों के इस्तेमाल के तरीके का नाम नमाज नही बल्कि अपनी आंख कान नाक वगैरह को इस तरह इस्तेमाल करना सीखो जैसे आप सल्ल0 ने इस्तेमाल किया है। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

3

जुबान पर रहेगा कि अल्लाह रब है

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे ही फरमाया ! अल्लाह हमारे रब हैं इसकी हकीकत यह है कि नमाज के जरिये मसले हल कराओ वना जुबान पर रहेगा कि अल्लाह रब है लेकिन जब नमाज पर मेहनत करके रोटी, औलाद, मकान, सेहत, इज्जत, और अम्न के मसाइल हल कराये जाएं तो नमाज से होगा, शख्सी मसलों का हल शख्सी

नमाज से होगा और मुल्क के मसले मुल्की नमाज से हल होगें। इंफिरादी शहरी देहाती मसलों को नमाज पर मेहनत करके अल्लाह से हल कराओं यह रब होने की मेहनत है। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

4

हम ऐसे रब के बन्दे नही हैं जो हमारी जरूरतों को पूरा करने में अपनी बनाई हुई किसी मख्लूक का मोहताज हो

27 जनवरी 1962 को बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! आज मुसलमानों का ये अकीदा कि पालने वाले तो अल्लाह हैं मगर दुनिया के अन्दर अल्लाह रब्बुल इज्जत मख्लुकात के रास्ते से पालेगें तो ये अकीदा गैरों का है हमारा नही है। हम ऐसे रब के बन्दे नही हैं जो हमारी जरूरतों को पूरा करने में अपनी बनाई हुई किसी मख्लूक का मोहताज हो हमारा रब कययूम और कादिर है। ये उम्मत दुनियां में इसलिए भेजी गयी थी कि इन्सानों के इस बावलेपन और पागलपन को दूर करे जो इन मिटटी के खिलौनों से बनना बिगड़ना और परवरिश का होना जान रहे है। हमने सवारी के और आवाज पहुंचाने के जो जराये बनाये हैं अल्लाह रब्बुल इज्जत बगैर इन आलात के अपनी कुदरत से करत है। जैसे हजरत उमर रजि0 की आवाज हजरत सारिया रजि0 तक पहुंचायी और हजरत इब्राहीम अलै0 की आवाज को आलम-ए-अर्वाह तक पहुंचाया। अल्लाह तआला ने अपनी जात से बराये रास्त लेने के तरीका ए अमल मुहम्मद सल्ल0 के जरिये हमे बतलाये हैं जैसे किसान जमीन से और ताजिर दुकान स लेना जानता है इसी तरह अल्लाह जल्ले शानुहु ने अपनी जात से लेने के तरीके अपने बन्दों को बतलायें है मगर हमारी आंखें उससे अंधी हो गयी, अल्लाह की कसम एक सलतनत सुब्हानअल्लाह कहने पर ले सकता है बशर्ते कि ये सुब्हानअल्लाह की हकीकत जानता हो और एख्लास से कहता हो।

5

कभी तुमने जमीन से पके हुए खाने निकलते हुए नही देखा होगा

27 जनवरी 1962 को बंगले वाली मस्जिद मे ही फरमाया ! जमीन अल्लाह तआला से पेट्रोल लेती है, सोना चांदी लेती है, अनाज लेती है मगर जब इन्सान कलिमे पर मेहनत करके अपने रब से लेने वाला बनता है तो अल्लाह तआला से इतना लेता है कि कोई मख्लूक भी इतना नही ले सकती। जमीन से तुमने कभी पके हुए खाने निकलते हुए नही देखा होगा पर कलिमे पर मेहनत करने वाले इन्सानों ने पके-पकाये और बेहतरीन खाने अल्लाह तआला स लिये हैं। बस बात इतनी है कि इन्सानों ने अपनी मेहनतो के रूख को बदल लिया है ये अम्बिया वाली मेहनत से हटकर मुल्क व माल वाली मेहनत पर आ गये है। आप जानते हैं कि मुल्क व माल वालों की मेहनत के तरीके आपस में मुख्तलिफ हैं, वो एक दूसरे के तरीकों को काटते रहते हैं और जिन्होने अम्बिया अलै0 वाले मेहनत के तरीके का अख्तियार किया अल्लाह तआला ने उन्हे दुनिया और आखिरत में कामयाब किया।

6

सब कुछ अल्लाह से होता हुआ दिखायी दे कि अल्लाह कर रहे है तो ये हिदायत है

17 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जो कुछ तुम्हे जमीदारों, मुल्कों, फौजों, डाक्टरों, फासिका और कातिलों से गरज जहॉ कहीं से होता हुआ दिखायी दे रहा है वो सारा सिलसिला अल्लाह से चल रहा है, ये सब अल्लाह कर रहे हैं। जो अल्लाह के करने से हो रहा हैं जलालत आपको ये बातें चीजों से दिखायेगी कि फौज यूॅं कर देगी, खेती यूॅं कर देगी, डाक्टर यूॅं कर देगें अगर यही नजर आ रहा है और यही समझ मे आ रहा है तो ये गैरूल्लाह का वजदान है यही जलालत है। सब कुछ अल्लाह से होता हुआ दिखायी दे कि अल्लाह कर रहे है तो ये हिदायत है।

7

हमे यकीन नही है इसलिये अल्लाह हमारा खर्च नही उठा रहे हैं

4 मुहर्रम 1384 हिजरी का मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! अगर कोई किसी की तरफ बुलाता है तो जिसकी तरफ ये लोगों को बुला रहा है वो इसके खर्चे का जिम्मेदार होता है। इलेक्शन मे तुमने देखा होगा कि पार्टी एक आदमी को नामजद करती

है अब ये जो मेम्बरी के वास्ते नामजद किया गया है उसकी तरफ वोट दिलवाने के लिये वर्कर होते है, वो वर्कर ही पब्लिक मे जाते है। जिस जमाने मे ये वर्कर पब्लिक को उस नामजद आदमी की तरफ बुलाते हैं तो दिन भर मोटरों मे फिरते रहते है, होटलो पर नाश्ता और खाना खा रहे है उनसे कहो कि अरे वर्करो तुम्हारे घरों मे तो चूहे कूद रहे हैं तुम कहॉ से मजे कर रहे हो ? तो जवाब ये मिलेगा कि तुम्हे पता नही है कि हम काग्रेंस की तरफ बुला रहे हैं। काग्रेंस की तरफ बुलाने पर पलने का यकीन है पर अल्लाह की तरफ बुलाने पर पलने का यकीन नही है। गलत यकीन को अपने अन्दर से निकालो और अमलों का यकीन बनाओ कि मैं जितना खुदा की तरफ बुलाने मे फिरूँगा, कलिमा सीखूँगा, लोगो को सिखाऊँगा ओर इसको फैलाऊँगा अल्लाह मुझे पालेगा, आज हमे यकीन नही है इसलिये अल्लाह हमारा खर्च नही उठा रहे हैं।

8

अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर नमाज का कियाम

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे फरमाया ! सहाबा किराम के जमाने में जबरदस्त मेहनत करके अल्लाह से पलने के मैदान कायम किए गए थे, अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर नमाज का कियाम था। शरीफ इंसानों का ऊपर आना और इंसानों की जिंदगी का बनाना यह सब जब होगा जब हुजूर सल्ल0 के तरीके की नमाज को दुनिया में कायम करने की मेहनत करो, ये तुम खुद न करोगे बल्कि खुदा करेगा दुकान व खेत से पलने के मंसूबे के बजाए अल्लाह से पलने के लिए नमाज पर मेहनत करनी होगी यह जबरदस्त मेहनत है पहले तो "ला रब-ब इल्लल्लाह" मेहनत का मदान है फिर ऐसी नमाज कर लो कि 'अल्लाह रब्बुना' की तर्तीब कायम हो, ऐसी नमाज बनाओ कि ईमान पर खात्मा हो और कब्र के अजाब से हिफाजत हो और कियामत में रोशनी मिले। नमाज को तर्बियत के लिए चालु करो, अपनी कमाई मे से वक्त निकालो और खेती से पलने के यकीन को खत्म करो। अल्लाह से पलने का यकीन पैदा करो इसी की दावत दो, जाते इलाही के खजानों की अज्मत और बड़ाई को सुनो और इतना सुनो कि वह जात तुम्हारी आखों के सामने आ जाए 'इन ताबुदुल्ला-ह क-अन्न-क तराहु' यानि अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि गोया कि खुदा को देखता है पर यह उस वक्त होगा कि ये अल्लाह की जात व सिफात को देखे इसके लिये कलिमा नमाज के फायदों का इल्म, जिक्र व इख्लास से लेना होगा, अपने अन्दर पैदा करना और दूसरों के अन्दर पैदा कराने की मेहनत करना यह मस्जिद का काम है कि दुकान और खेत से पलने का यकीन हटाना है और मस्जिद वाले आमाल से पलने का यकीन लाना है।

(हजरत जी की यादगार तकरीरें)

9

नमाज पर और नमाज की तालीम पर पालेंगे

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे ही फरमाया ! अगर अल्लाह को रब मानते हो तो यह मेहनत करो कि अल्लाह रब हैं वह नमाज पर और नमाज की तालीम पर पालेंगे। नमाज से ही सेहत देगें, कर्ज दूर करेगें इसको फजाईल की तालीम मे बैठकर सुनो तो मालूम होगा कि बाहर वालों का बचाव मस्जिद के अन्दर की आबादी से है वरना बेड़ा गर्क होगा यह हदीस है। ये बातें मुख्बिरे सदिक सल्ल0 की बातें हैं जो तालीम मे बैठने से तुम्हे मालूम होगी, इज्जत, हिफाजत और गिना कहां ढूंढ रहे है ? और यह इज्जत हिफाजत और गिना है कहां ? तुम्हें ये सब चीजें नमाज में मिलेगी। बस दावत, तिलावत, कुरआन वगैरह पर यकीन हो नमाज के बाहर और अन्दर यकीन भरा हो। अल्लाह अक्बर कहकर, सुब्हानन्काल्लाहुम्मा फिर अल्हमदुलिल्लाह रब्बिल आलमीन कहो यानी सारे आलम की तर्बियत करने वाले अल्लाह हैं 'इयया-क नअबुदु' यानी हम इबादत पर तर्बियत करेगें और कियाम व रूकुअ इबादत है इस पर खुदा पालेगें अगर मेरा रूकुअ और कुरआन पढ़ना और इस्तिकाले किबला आप सल्ल0 के तरीके पर आ गया तो अल्लाह मुझे पालेगा, पालने वाला इबादत पर पालेगा। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

10

ईमान व अमल से पलने का रिवाज नही है

17 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इस जमाने के अन्दर ईमान व अमल से पलने का रिवाज नही है,आम आदमी तो इससे बहुत दूर है ये बीमारी दीनदारों मे और पढ़े लिखो मे घुसी हुई है। आम आदमी तो दीनदारों और पढ़े लिखो को देखता है और दीनदार और पढ़े लिखे ये समझते हैं कि मेहनत से पैसा, पैसे से चीजें और चीजों से पलना, कहते भी हैं कि जिन्दगी तो पैसों से बनेगी और पैसे अपने जरिये से मिलेगें, यहाँ से बात बिगड़ी है, सारी बात का बिगाड़ यहीं से है। परवरिश का होना, चीजों का चीजों से मिलना, पैसों का पैसों से मिलना सबका सब मुतआरफ तरीकों (पहचाने हुए तरीके) से हो रहा है कि जब तक पैसा न मिलेगा चीजें न मिलेंगीं, चीजें न मिलेंगीं तो हालात ठीक न होंगें, इन्ही तख्यीयुलात (ख्यालात) ने हमारे ईमान व अमल को बरबाद किया है, ईमान व अमल तो वो मख्सूस तरीका है जो अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये मिला है। हुकूमत, पैसे, जमीन व आसमान के मुकाबले मे अल्लाह की कुदरत से फायदा लेने के लिये ईमान व अमल हैं।

11

तरदीद और इन्कार की जरूरत है

28 सितम्बर 1964 बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! यह कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ सीखना ज्यादा लम्बा-चौड़ा काम नही है, कामयाबी लेने के लिये लोहे, पीतल, दवाओं, फौजों, मेम्बरों, वजारतों की जरूरत नही है बल्कि इनकी तरदीद और इन्कार की जरूरत है। ये कलिमा नबियो वाला कलिमा है पर आज जमींदारों, दुकानदारों ने इस कलिमे को अपने नक्शो मे ढाल लिया कि अल्लाह ही करता है लेकिन अल्लाह बगैर मुलाजिमत, बगैर जमीन और बगैर दुकान के कैसे करेगे ? भाई जी ! अल्लाह अपनी कुदरत से करेगें, अरे जब पैसे ही नही होगें तो फिर कैसे करेगें ? भाई जी ये तो गैर मुसलमानो वाला खुदा है जा पैसो के बगैर नही करता, हमारा खुदा किसी का मोहताज नही है वो तो बेनियाज है बस एक हुक्म देगा हो जायेगा, यह है لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ बस इसे सीखना पड़ेगा। हाँ, इतनी बात याद रखना कि जुबान से बोलने को सीखना नही कहते, जुबान कहे कि जहर से नही होता और दिल कहे कि खालूगॉ तो मर जाऊँगा तो इसने لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ नही सीखा। जुबान बोले या न बोले जैसे ही कोई शक्ल तुम्हे सामने दिखे तो दिल फौरन ये कहे कि इससे नही होता ये है لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ आज मुसलमानों को खुदा का फेल गैर पर मौकूफ करते हुए शर्म नही आती कि अल्लाह बगैर मुलाजिमत, बगैर जमीन और बगैर दुकान के कैसे करेगे ? अरे ! खुदा जो कुछ करेगें अपनी कुदरत से करेगें कि साहब जमीन व आसमान नही होगा तो कैसे पैदा करेगें ? इस सवाल से ये मालूम होता है कि अल्लाह जमीन व आसमान के बगैर पैदा नही कर सकते हैं अगर ये बात है तो हमारे दिल मे जमीन व आसमान की अहमियत है खुदा की नही है।

12

शैतान मुसलमानो को अमल से नही रोकता

15 सितम्बर 1960 लाहौर मे फरमाया ! तब्लीग मे दो वजह से निकाला जाता है पहला ये कि हमारा यकीन कमाई से मिलने का खत्म हो कि कमाई से नही मिलता खुदा के देने से मिलता है और दूसरा आमाल से मिलने का हो कि चीजों के होने या न होने से हम नही पलेगें, आमाल-ए-नबूवत से खुदा हमे पालेगें, इस यकीन के बगैर अमल ऐसा जैसे बगैर करन्ट के बिजली का तार कि ईमान के बगैर अमल की कोई हैसियत नही अमल मुर्दार है और मुर्दा चीज से कोई फायदा नही उठाया जा सकता। आज शैतान मुसलमानो को अमल से नही रोकता वो जानता है कि अगर इसने अमल कर भी लिया तो इसके अन्दर खुशफहमी ही पैदा होगी, जिसकी वजह से ये मेरे जैसी नाफरमान किस्म तैयार हो जायेगी। इसी वजह से आज लोग अपने ईमान की तरफ से बेपरवाह है कि शैतान आदमी को अमल से बिगाड़ने की कोशिश करता है कि आदमी क पास ईमान की कूवत न हो, इसका यकीन कमजोर हो तो अमल से बिगाड़ता है कि अमल किया बड़ाई पैदा हो गयी, शोहरत का जज्बा आ गया फिर ऐसे ही अमल इसके मुँह पर खींच कर मारे जायेगें।

13

कलिमे से क्या-क्या हो सकता है

28 सितम्बर 1964 बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इस काम से हमे कलिमा नमाज सीखना है, इस कलिमा नमाज से सब कुछ होने के यकीन को ही ईमान कहते है। हमारे कान ईमान को इतना सुन रहे हो कि दिल तस्दीक कर दे कि अल्लाह

करते हैं, इसके लिये एक तरफ ईमान की दावत होगी, एक तरफ इल्म के हल्के होगें, अब रही बात कि किस चोज का इल्म ? इल्म इसका कि कलिमे से क्या-क्या हो सकता है ? अभी तक तो हमने जिहालत को जाना है इल्म तो जाना ही नही है, इस काम के लिये हमे लम्बे-चौड़े इल्म की जरूरत नही है बस एक इल्म कलिमे और नमाज का हमे चाहिये और दूसरा इल्म हमे तरदीद का और आमाल का चाहिये फिर अल्लाह का ध्यान पैदा करो कि सबका ध्यान निकल जाये सिर्फ अल्लाह का ध्यान बाकी रह जाये।

14

बजाय मालदार और दुकानदार बनने के इन्सान को सालेह बनना चाहिये

28 अप्रेल 1962 बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन्सान अगर अपने ऊपर मेहनत करे तो जौहर खिलते है और फिर इन्ही जाहरों की वजह से फरिश्ते और जानवर इसके सामने झुक जाते हैं। मेरा खुदा मुझसे क्या चाहता है ? इसे मालूम करने वालों के लिये सत्तर हजार फरिश्ते इनके सामने झुक जाते हैं और इनके पैरों के नीचे अपने परों को बिछा देते हैं जिन पर ये चलते है, इन सत्तर हजार फरिश्तो मे से हर फरिश्ता दिल्ली जैसे शहर को पलट सकता है। खुदा मुझसे क्या चाहता है इसे मालूम करने पर जब सत्तर हजार फरिश्ते इसके सामने झुक जाते हैं और इसके पैरों के नीचे अपने परों को बिछा देते है तो मालूम करके अमल करने पर क्या होने वाला है ? कि इसके लिये गैब के दरवाजे खुलेगें इसलिये बजाय मालदार और दुकानदार बनने के इन्सान को सालेह बनना चाहिये, ये ईमान का सीखना और अमलों को सही करना इसी की मेहनत है। (मज्मुआ बयानात जिल्द.4)

15

गैर का यकीन तोड़ना है

16 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! खाली गश्त करना और दावत देना मकसद नही है बल्कि अल्लाह की तरफ बुलाना, तालोम करना, अल्लाह के रास्ते मे जाना इन सबका मकसद गैर का यकीन तोड़ना है कि गैर का यकीन टूटे और गैर से नाउम्मीद होकर अल्लाह से अपने यकीन को जोड़ना है असल मसला यकीन का है कि सबसे ज्यादा यकीन बिगड़ा पड़ा है। जब तुम दावत दो, गश्त करो, तालीम करो तो ये यकीन पैदा करने की कोशिश करते रहा करो कि मैं अल्लाह की तरफ लोगों को बुलाऊँगा इस बुलाने पर अल्लाह मुझे पालेंगें। चॉदनी चौक मे लोगो को बुला बुलाकर दुकानों मे ले जाते हैं इन बुलाने वालो का खच दुकानदार उठाते हैं, हम लोगो को अल्लाह के घर मे बुला बुलाकर लायेगें तो अल्लाह हमारा खर्च उठायेगें।

16

छ नम्बरों का मतलब वो नही है जिनको लोग समझते है

बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन छ नम्बरों का मतलब वो नही है जिनको लोग समझते है बल्कि इन छ नम्बरों का जो मतलब हम समझते और बतलाते है उसके मुताबिक करने और लगने से इन्शाअल्लाह वो बात पैदा हो जायेगी जो बात खुदा अपने बन्दों से चाहते हैं। (तज्किराह हजरत जी नम्बर)

17

ईमान व अमल की मेहनत मे किसी भी दुन्यिावी चीज की जरूरत नही है

28 अप्रेल 1962 को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जिस दुकान, जमीन व मुल्क से सिर्फ मरने तक मिले उसके लिये तो मेहनत की जरूरत है और जिस ईमान व अमल से दुनियॉ व आखिरत दोनो जगह हमेशा के लिये मिले क्या उस ईमान व अमल पर मेहनत की जरूरत नही है ? ईमान व अमल की मेहनत मे किसी भी दुन्यिावी चीज की जरूरत नही है बस मुशाहदे से नजर हटाकर गैबी कुदरत का यकीन पैदा हो जाये। इसके लिये पैसों और कमाई की शक्लों व मुल्क और माल के नक्शों से यकीन हटाकर खुदा की कुदरत का यकीन पैदा करना पड़ेगा, नक्शों और चीजों का तुम्हारे पास होना या ना होना बराबर है लेकिन इन पर उम्मीद ना करना ये हर हाल मे जरूरी है बस इतनी सी बात पर खुदा की कुदरत तुम्हारा काम

कर देगी अगर कुदरत असबाब की पाबन्द हो तो ये कुदरत नाकिस है और खुदा कामिल कुदरत वालें हैं कि पहले कुछ ना था सब कुछ बना दिया कयामत लाकर सब खत्म कर देगें और फिर सब कुछ एक साथ बना देगें।

(मज्मुआ बयानात जिल्द.4)

18

कमाना और न कमाना

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे फरमाया ! नुबूवत मिलने के बाद हुजूर सल्ल0 ने इंसानों से लेने का काई रास्ता अख्तियार नही फरमाया, आपने तायफ, तबूक, यमन हजरमौत और नज्द वालों को नमाज बताई जो कलिमा बोले नमाज बनाने की मेहनत करे जब यकीन बने कि अल्लाह रब है ओर रास्ता नमाज है, यह बात दुनिया में चले तो दुनिया की तर्तीब बदलेगी। नमाज को अन्दर से बनाओ, मसल का ताल्लुक अन्दर से है। जब यह बना लो तो नमाज की बुनियाद पर तीन लाइन ठीक करो घर, कारोबार और मुआशरत। हुजूरे अक्दस सल्ल0 के वे तरीका ए अमल लाओ जो अल्लाह की जात से पलने के लिए है, आप सल्ल के रास्ते में भी कमाई और घर है और इंसानों के रास्ते में भी कमाई और घर के नक्शे है। रब की बुनियाद पर नमाज और नमाज की बुनियाद पर कमाई यानी जब कमाई से परवरिश नही बल्कि अल्लाह से परवरिश है तो अल्लाह का हुक्म मान कर लेगें। जब यह बात है तो फिर क्यों कमा रहा है?

कि पहले नमाज से परवरिश ली लेकिन नमाज के बाद दा रास्ते है कमाना और न कमाना अगर न कमाये बस सिर्फ नमाज पढ़कर अल्लाह से ले तो ठीक है पर इसमें शर्त सिर्फ यह है कि अगर न कमाओ तो 1-किसी मख्लूक का माल न दबाना, 2-हाल का इज्हार न करना, 3-किसी से सवाल न करना, 4-इसराफ न करना, 5-तकलीफ पहुंचे तो जजा फजा न करना ओर 6-अल्लाह से राजी रहना अगर इतनी बात आ जाए तो कमाई की जरूरत नही। इसकी मिसाल के लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं और हुजूर सल्ल0 और हजरत ईसा अलै0 है, अस्हाबे सुफफा हैं और लाखों मिसालें ऐसी हैं जिन्होने सिर्फ नमाज से काम चलाया है। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

19

कमाई की बुनियाद ये है कि कमाई से न मिलेगा

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे फरमाया ! अगर कमाना है तो उस पर भी पाबन्दी है कमाई की बुनियाद ये है कि कमाई से न मिलेगा, अल्लाह से नमाज पर मिलेगा पर जब आपके तरीका ए अमल से कमाऐंगें तब खुदा देगा अगर न कमाना हो तो गसब, इसराफ, सवाल, जजा, फजा और घबराहट न हो अगर कमाते हो तो यह बुनियाद है कि मै पैसे के लिए नहीं कमाऊंगा बल्कि आपके तरीका ए अमल को कमाई में चलाने के लिये कमाऊंगा, कमाना अमल को पूरा करने के वास्ते है, हम यकीन सीख रहे हों कि सिर्फ अल्लाह पालेगा। हराम से नही कमाना है, हलाल से कमाना है, सुअर, कुत्ता, बिल्ली इनका खाना हराम है, बकरी, गाय, मुर्गी, हिरन हलाल है पर इनमें भी हराम व हलाल बनेगा अगर बिस्मिल्लाह अल्लाह, अकबर कहकर जिब्ह किया तो हलाल वरना बकरी हराम हो गयी, इसी तरह बकरी को गर्दन के बजाये पेट काटकर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहा तो भी बकरी हराम हो गयी, बकरी थी तो हलाल पर तरीका ए अमल गलत होने से हराम हो गयी। पहले तो कमाई की किस्म है कि हलाल पर है या हराम पर है फिर हलाल में भी तरीका ए अमल हलाल है या हराम है ? अगर अल्लाह के रब होने का यकीन है तो आपका तरीका ए अमल चालु करने पर आवें खुदा की रिजा के लिए कमाइए, फजाइल के शौक और मसाइल की पाबन्दी के साथ कमाइए। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

20

आप सल्ल0 के तरीके पर अल्लाह पालेगें

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे फरमाया ! إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ जो बात नमाज में कही, वही कमाई में कहो, अब कमाई, तिजारत, जराअत में जब राब्ता खुदा की जात से हो तो दुनिया में चमकना और फलना-फूलना होगा फिर जलजला, सैलाब, बमबारी में दुकान और घर का बाल बांका न होगा क्योकि महबूब का तरीका ए अमल है, चाहे दुकान मिटटी की हो पर आप सल्ल0 का तरीका ए अमल है तो एटम से ज्यादा ताकतवर है फिर कमाई की बुनियाद पर घर चलावेंगे। कुछ लिबास हराम और कुछ हलाल हैं, खाना का तर्ज कुछ हराम, कुछ हलाल हैं। इस यकीन को सीखो कि अल्लाह रब हैं, आपके तरीका ए अमल पर पैसे खर्च करेंगे, लिबास और गिजा की तर्तीब आपके तरीके पर होगी तो अल्लाह पालेगा। आपके तरीके का झोंपड़ा किसरा के किले से बेहतर है, मुश्रिकीन, मुलाहिदीन, फुस्साक व फुज्जार की ढ़ाई लाख की कोठी से बेहतर है। पांच रूप्ए की झोपड़ी में वह खैर है जो पचास लाख की कोठी में नही है, इसका नाम ईमान है। आपके तरीके का सवा रूपए का कुरता मजेदार होगा यहुद व नसारा के तर्तीब वाले पचास लाख के कपड़े से उसमें वह मजा नही है। आप सल्ल0 के तरीका ए अमल पर अल्लाह पालेगें और यहूद व नसारा के तरीके पर घर का नक्शा आया तो फिर खुदा बिगाड़ेगा। शादी के तरीके, वलादत व मौत के तरीके में भी अपने तरीके बदल कर आप सल्ल0 के तरीके लो अगर तुमने इन घरों को यहूद व नसारा के तरीके पर रखा तो पानी की बौछार और जमीन का झटका उसे तोड़ देगा अगर आपका तरीका है तो एटम बम भी नहो तोड़ सकेगा। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

21

इस काम से हमे अमलों से परवरिश लेने का जहन बनाना है

20 अप्रेल 1960 बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मौलाना इलयास रह0 का कौल है कि इस काम से हमे अमलों से परवरिश लेने का जहन बनाना है, जहन हमारे बनाने से ना बनेगा जहन खुदा के बनाने से बनेगा अगर हमारा जहन अमलों से परवरिश लेने का बन गया तो खुदा लोगों का भी जहन बना देगें। (मज्मुआ बयानात जिल्द.2)

22

तमाम मसअलों को अमल के रास्ते से हल कराना

12 अप्रेल 1962 बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इब्तेदाए इन्सानियत से मेहनत के दो रास्ते चले आ रहे हैं जो इंतिहाए इन्सानियत तक चलते रहेगें पर कभी कोई गालिब रहेगा और कभी कोई गालिब रहेगा। इनमे से एक रास्ता ये है कि तमाम मसअलों को अमल के रास्ते से हल कराना। माल, रोटी, कपड़ा, मुल्क, इत्मिनान, गलबा, सुकून और सेहत वगैरह अपने आमाल से हासिल करना और दूसरा रास्ता ये है कि तमाम मसअलों का हल माल के रास्ते से हो कि मुल्क, ओहदें, गलबा, गिजाएं और सेहत वगैरह माल के रास्ते से हासिल करना आगे फरमाया ! दुनियॉ मे इन्सानों के सामने जितनी शक्लें सूरतें हैं इनका इन्कार لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ से है कि 20 साल की मेहनत मे दुकान से पलना नजर आता है इसके मुकाबले का यकीन لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ है कि मैं दुकान से नही पलता बल्कि खुदा के पालने से पलता हूँ। (मज्मुआ बयानात जिल्द.3)

23

आमाल से परवरिश का रास्ता इस्लाम है

12 अप्रल 1962 बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! आमाल से परवरिश का रास्ता इस्लाम है जो अंम्बिया अलै0 की कुरबानियों के बाद चालू होता है। इब्राहिम अलै0 ने हजरत हाजरा और हजरत इस्माईल अलै0 को इस यकीन पर जंगल बियाबान मे डाला कि बगैर जाहिरी असबाब के खुदा पालते है और यही दुआ मॉगी

“ ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे रब ! मै अपने बीबी और बच्चे को इस मैदान मे माल कमाने और चीजें हासिल करने के लिये नही डाल रहा हूँ अगर माल कमाने और चीजें हासिल करने का मकसद होता तो इस जंगल बियाबान मे ना डालता बल्कि मैं इन्हे इसलिये यहॉ डाल कर जा रहा हूँ ताकि “नमाज कायम करें” जब ये दोनो मेरे मक्सद को पूरा कर दें तो फिर लोगों के दिल आप इनकी तरफ फेर दें।” (मज्मुआ बयानात जिल्द.3)

24

आमाल वालों को माल व मुल्क और किले की जरूरत नही है

12 अप्रेल 1962 को ही बगंले वाली मस्जिद मे आगे फरमाया ! अम्बिया अलै0 ने मुल्क व माल की बुनियाद पर मेहनत नही की है और हुजूर सल्ल0 ने भी मुल्क व माल की बुनियाद पर मेहनत नही की हॉलाकि उस वक्त भी मुल्क व माल और आमाल दोनो की बुनियादें थी पर सहाबा किराम रजि0 को आमाल की बुनियाद पर उठाया मुल्क व माल रास्ते मे जिस तरह माल से रोटी पानी, कपड़े, सेहत और हिफाजत वगैरह मिलती है उसी तरह आमाल से भी ये तमाम काम होते हैं, आमाल वालों को माल व मुल्क और किले की जरूरत नही है। (मज्मुआ बयानात जिल्द.3)

25

असबाब-ए-अमल खुदा ने इन्सानो को बराबर तक्सीम किये है

1 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अल्लाह पाक ने कामयाबी के असबाब सारे इन्सानो को बराबर दिये हैं और जिन नक्शों से कामयाबी-नाकामी का कोई तआल्लक़ नही है वो इन्सानो को कम या ज्यादा दिये हैं, ऑख, कान, जुबान, हाथ, पैर, रूह और शर्मगाह सबको बराबर दिये हैं ये सारे असबाब-ए- अमल खुदा ने इन्सानो को बराबर तक्सीम किये है। इन्सानी सरमाया जितना मुल्क के सदर के अन्दर है उतना ही सरमाया जेलखाने मे बन्द मुजरिम के अन्दर भी है।

दो ऑखें फकीर के पास भी हैं और बादशाह के पास भी।

एक जुबान ताजिर के पास भी हैं और काश्तकार के पास भी।

दो कान मजदूर के पास भी हैं और मालदार के पास भी।

आज इन्सान जिन मुसीबतों और बलाओं का शिकार है वो धोखे की मेहनत मे मुब्तिला होने की वजह से है, इन्सानों ने आज कामयाबी नक्शों मे करार दे रखी है खुद अपनी जात मे नही, बस यही इनकी सबसे बड़ी हिमाकत है।

26

नाकामी की मेहनत ये है कि इन्सान रात दिन नक्शे बनाने मे लगा रहे

1 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! नाकामी की मेहनत ये है कि इन्सान रात दिन नक्शे बनाने मे लगा रहे कि हिफाजत का नक्शा बन जाये, परवरिश का नक्शा बन जाये, पैदावार का नक्शा बन जाये। न अमल का कोई मेयार कायम रहे न खुदा की जात का यकीन दिल मे बाकी रहे बस नक्शे ही के एतबार से बोले, उसी के एतबार से सोचे और उसी के एतबार से देखे, जिसका सोना-जागना नक्शे ही के एतबार से होगा और जा इस नुक्ते पर मेहनत करेगा वो नाकामियों का शिकार होगा, ये चाहे जम्मूरियत मे रह रहा हो, चाहे डिक्टेटर मे रह रहा हों। आज हमारे सामने जितने भी ऐश करते फिर रहें वो कल को मुसीबतों का शिकार बनने वाले हैं, आज जितने बाअख्तियार नजर आते हैं कल को बे अख्तियार बनने वाले है, मुल्क व माल के नक्शों पर मेहनत नाकामी की मेहनत है।

27

कामयाबी लेने की आला किस्म

1 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! कामयाबी लेने के लिये अदना किस्म की मेहनत ये है कि इन्सान नक्शों को छोड़कर उनका यकीन दिल से निकाल और फिर नक्शों के खिलाफ यकीन हासिल करके अमल की तरतीब पर आये फिर इन अमलों को इस खास यकीन के साथ अपने नक्शों मे चलाये ता ये कामयाबी की अदना किस्म होगी और आला किस्म की मेहनत ये है कि इन्सान नक्शों को बिल्कुल लात मार कर अपने अन्दर उन अमलों को चुन-चुन कर पैदा करे जो इसे कामयाबी तक पहुँचा दें तो फिर इसकी बगैर नक्शा- ए-परवरिश के परवरिश होगी और बगैर नक्शा-ए-हिफाजत के हिफाजत होगी। नक्शों पर लात मार कर अल्लाह से कामयाबी लेने के लिये हम अपनी जात पर दिन-रात मेहनत करने वाले बन जायें तो ये कामयाबो लेने की आला किस्म होगी।

28

अल्लाह वाले इल्म को पढने़-पढ़ाने वाले इस यकीन से नही पढते-पढ़ाते कि इस इल्म की मशगूली पर अल्लाह हमारा सारा खर्चा उठायेगें

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को ही मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! आज स्कूलों मे इन्सानो की तज्वीज की हुई किताबों से तालीम दी जा रही है, तुम किसी स्कूल के मास्टर से पूछो कि तुम क्या करते हो?

तो वो जवाब देगा कि मैं बच्चों को तालीम देता हूँ।

उससे कहो कि तालीम देने से तो रोटी नही मिलती ?

तो जवाब देगा अरे अहमक हुकूमत की तरफ से तय की हुई किताब की तालीम देता हूँ जिस पर हुकूमत मुझे तनख्वाह देती है। ये तालीम भी ऐसी कि ये भैंस है, ये बिल्ली है, ये कुत्ता है इसे पढ़कर बतला रहा है, स्कूल के मास्टरों को तनख्वाह इस बात की मिल रही है कि ये गधे को गधा बतला रहे है, ये कुत्ते को कुत्ता बतला रहे है कागज पर बतला रहे हैं हालॉ कि ये जो पढ़ा रहे हैं बच्चे बगैर पढ़े वो जानते हैं कि आखिर तक बेतूकी तालीम कि होता अल्लाह से है पर ये मख्लूक से होने को बता रहे हैं, इन्सानों मे अल्लाह के रसूल सल्ल0 सबसे बड़े हैं पर ये दूसरों को बड़ा बतला रहे हैं। आज अल्लाह वाले इल्म को पढने़-पढ़ाने वाले इस यकीन से नही पढते-पढ़ाते कि इस इल्म की मश्गूली पर अल्लाह हमारा सारा खर्चा उठायेगें कि ये है कुरआन, ये है हदीस, ये है मसअले- मसाएल इन्हे पढाओ मै तुम्हारा खर्चा उठाऊॅगा कि हम लोगों को कुरआन सिखायेगें अल्लाह तआला मकान देगें, जमीन देगें, हमारा खर्चा उठायेगें। अल्लाह ने पहले भी इसी तालीम पर हुकूमतों को झुकाकर दिखलाया था अगर इस यकीन के साथ हम पढ़ने-पढ़ाने पर आ जाये तो आज भी हुकूमतों को झुकाकर दिखलायेगें।

29

पढ़ाने से रोटी का कैसे इन्तिजाम हो

17 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! पढ़न-पढ़ाने वालों के लिये मदरसों मे भी यकीन के सीखने सिखलाने का कोई इन्तेजाम नही, सिर्फ नहव, मन्तिक और फलसफा पढ़ते रहते है, सात साल मदरसे मे ये पढ़ा पर खुदा की कसम ! एक चीज ऐसी नही जिससे ईमान तैयार हो, आठवें साल मे देखें तो फसाहत व बलागत को तलाश करते रहते है, मिश्कात शरीफ मदरसा मे वापस कर दी और फिर किताबुल ईमान को उठा कर न देखा, नवें साल ईमान पर कुछ मुख्तलिफ फर्क की बहसें देखीं और अब निकल गये सात साल वाली पढ़ाई मे जो पढ़ा था उसे पढ़ाने तो इस पढ़ाने से अब रोटी का कैसे इन्तिजाम हो ? राटी के लिये ये पढ़ाने वाली शक्ल लेकर बैठ गये। इसलिये अल्लाह से होने को, अमल से होने को, उसकी बड़ाई को, उसकी कुदरत को, उसकी सिफात को इतना सुनो कि सुनते सुनते दिल मे उतर जाये, ये इल्म पर मेहनत है।

30

मालदार के पीछे कुत्ते की तरह फिरेगा

7 अप्रेल 1962 बाद नमाज फज्र बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जिस शख्स को इस काम से हिदायत ना मिली वो मालदार के पीछे कुत्ते की तरह फिरेगा और अगर हिदायत मिल गयी तो मालदार कुत्ते की तरह इसके पीछे फिरेगें, इस काम से दोनों तरह के लोग बनेंगें। (मज्मुआ बयानात जिल्द 3)

31

सिर्फ कमाने पर ही नही मिलेगा खाने पर भी मिलेगा

6 मई 1962 को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अम्बिया का रास्ता आमाल के जरिये से चीजें लेने का है जिससे दुनियॉ व आखिरत दोनो जगह मिलेगा, जितना साल भर की कमाई से मिलता है आमाल के दुरूस्त कर लेने पर उससे कहीं ज्यादा 10 दिन मे मिलेगा चाहे कमाई की शक्ल कम से कम हो। हमारे दिल व दिमाग मे माल से मिलना खत्म हो जाये और आमाल से मिलना समा जाये कि खेती से नही मिलता बल्कि खेती मे हुजूर वाले अमल से मिलेगा और हर जगह के हर अमल पर जरूर मिलेगा सिर्फ कमाने पर ही नही मिलेगा खान पर भी मिलेगा बस खाने को आमाले सालिहा बना दो।

(मज्मुआ बयानात जिल्द.4)

32

कमाई से मिलने का हमारा यकीन खत्म हो

6 मई 1962 को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! तब्लीग मे दो वजह से निकाला जा रहा है जिसमे पहली बात ये है कि कमाई से मिलने का हमारा यकीन खत्म हो, दूसरी वजह ये है कि हुजूर वाले आमाल से मिलने का यकीन बने कि हुजूर वाले आमाल पर खुदा हमे पालेगें। कमाई की सबसे बड़ी शक्ल आमाल हैं, नक्शों और शक्लों से कमाना ये छोटी शक्लें हैं कुरआन ने आमाल को कसब कहा है। (मज्मुआ बयानात जिल्द.4)

33

मस्जिदें तुम फकीरो से, भिख मॅंगगों से भीख मॉंगने के लिये नही बनवाई गयी हैं

1 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन्सानियत के अन्दर खुदा की कुदरत से फायदा हासिल करने के लिये दिल से लेकर आजा-जवारे तक जिस्म के हर अजू पर मेहनत करनी होगी। ये मस्जिदें तुम फकीरो से, भिख मॅंगगों से भीख मॉंगने के लिये नही बनवाई गयी हैं बल्कि ये मस्जिदें तुम फकीरो को खुदा के खजानों से दिलवाने के लिये बनाई गयी है। जिस गनी की तरफ इस घर की निस्बत है, वो वजीरो को, सदर को, आलिम को, मालदारो को और बादशाहों को भी फकीर करार देता है।

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ

जरा जवाब दो कि गनी का घर फकीरों से लेने के लिये बनता है या फकीरों को देने के लिये बनाया जाता है ? ये मस्जिदें वजीरों को, फौज को, जमींदारों को, मालदारों को देने के लिये ही बनी हैं कि यहॉं से मिलेगा, ये मस्जिदें माल की तक्सीम और चीजों की तक्सीम के लिये ही बनी हैं।

34

मेहनत करने के दो रास्ते है

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! मेहनत करने के दो रास्ते है एक दुनियॉं से फायदा हासिल करने की मेहनत और दूसरी दुनियॉं के बनाने वाले से फायदा हासिल करने की मेहनत। दुनियॉं से लेने वालों को भी दुनियॉं बनाने वाले ही से मिलता है लेकिन दुनियॉं के ऐतबार से मिलता है और दुनियॉं के बनाने वाले से लेने मे दुनियॉं का बनाने वाला अपने ऐतबार से देता है। दोनो रास्तो मे शख्सी, मुल्की और आलमी ऐतबार से मेहनत होती है, इन्सान जिस रूख पर मेहनत करेगा उसे उसी रूख से दुनियॉं से या दुनियॉं बनाने वाले से फायदा मिलेगा।

35

तुम्हारे पास कोई भी नक्शा न होगा तो खुदा तुम्हे कामयाब करके दिखायेगें

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को ही मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! अल्लाह की जात सारी शक्लों से पाक है इसलिये उसी से होने का यकीन बने कि बगैर शक्ल वाले अल्लाह से होता है, अल्लाह जो चाह लेते हैं वह हो जाता है अगर खुदा तुम्हे तौफीक दे कि शक्ल से जहन हटकर अमल का जहन बन जाये और अपने अमलों को पाकीजा बनाने मे लग जाओ तो अगर तुम्हारे पास कोई भी नक्शा न होगा तो खुदा तुम्हे कामयाब करके दिखायेगें। इन्सानो का माल से अमल की तरफ रूख मोड़ने के लिये नबियों ने एक मेहनत की और एक मेहनत करायी, तुम दुनियॉं मे खुदा वाले अमलों पर मेहनत करो ये यकीन जमाओ कि हम इन अमलों से पलेगें।

36

सारे निजामों मे फरिश्ते फैले हुए है

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को ही मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! अल्लाह से बरायेरास्त फायदा बराये कायनात न होगा बल्कि बराये मुहम्मद सल्ल0 फायदा होता है, जिस नबी के रास्ते ने तमाम अम्बिया के रास्तों को रोक दिया है वो कैसे रूस व अमरीका को जूतियॉं न बना देगा। जरा अक्ल-समझ का इस्तेमाल करो, सारे निजामों मे फरिश्ते फैले हुए है, सूरज, पहाड़ या दरिया, बारिश, खेती, हिफाजत-ए-इन्सानी और तक्सीम-ए-रिज्क वगैरह कि इब्राहिम अलै0 के पास पहाड़ों का फरिश्ता और हवा का फरिश्ता दोनो आ गये मगर इब्राहिम अलै0 ने इन दोनो से मदद लेने को इंकार कर दिया कि मैं तो सिर्फ अकेले खुदा की तरफ रूजु करने वाला हूॅं किसी बने हुए की तरफ नही कि मेरे मसअले को मेरा बनाने वाला ही हल करेगा आखिर

खुदा ने अपनी जात से हुक्म देकर आग को ठंडा कर दिया। पहाड़ और दरिया ये सब मुशाहिद शक्लें हैं उन पर मुसल्लत फरिश्ते गैर मुशाहिद शक्लें हैं, इब्राहिम अलै0 ने जब दोनो किस्म की शक्लों से यक्सूई कर ली तो खुदा ने आग को आग रखते हुए उसमे बाग की सिफत पैदा कर दी थी। لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰه का यकीन हो कि 1-कायनात से नही होता अल्लाह से होता है 2-अल्लाह से बराये कायनात लेना कामयाबी का धोखा है, अल्लाह से बराये मुहम्मद सल्ल0 लेना असल कामयाबी है।

37

फकीर से फकीर आदमी हर वक्त कामयाब बन सकता है

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इस्लाम अल्लाह के खजानों से दुनियॉ व आखिरत मे कामयाबियॉ हासिल करने के तरीकों का नाम है, इन्सान के बदन के हिस्सों के इस्तेमाल का वो तरीका जिससे जब तक ये दुनियॉ मे है यहॉ फायदा हासिल करे और कब्र मे जन्नत मे फायदा हासिल करता रहे है। ये तरीका आसान है, आसान इसलिये है कि इसमे कायनात के किसी सरमाये की जरूरत नही पड़ती, फकीर से फकीर आदमी हर वक्त कामयाब बन सकता है। इस तरीके का तआल्लुक इन्सान की जान से है और जान लगाने से ही इन्सान के अन्दर इस्लाम आता है, हकीकत मे जान के इस्तेमाल का नाम ही इस्लाम है। मकान, कपड़े, जमीन, आसमान दीन नही बनेगे बल्कि हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान के इस्तेमाल के तरीके दीन बनेगें। चाहे सदर हो, वजीर हो, गोरा हो, काला हो, किसी कौम का हो उन सबके सर से लेकर पैर तक जो बदन के आजा हैं उनके इस्तेमाल के एक खास तरीके को इस्लाम कहते हैं अगर उस खास तरीके पर हाथ, पैर, ऑख, कान और जुबान का इस्तेमाल करना आ गया तो इन्सान कामयाब हो जायेगा।

38

अपने बदन के आजा के अमल को दुरूस्त कर लिया तो हम कामयाब होगें

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को हो बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हक तआलाशानुहू ने हर आदमी को कामयाबी के असबाब देने मे कोई तफरीक नही की, कामयाबी के असबाब जहाज और रेलें नही है, गेहूँ, जौ, ज्वार नही हैं, कारखाने, कोठी और दुकान नही है, सोना,चॉदी, हीरे और जवाहरात नही है, कामयाबी के असबाब आपके सर से लेकर पैर तक के बदन के आजा से निकलने वाले अमल हैं। वही दो कान, दो ऑखें सबकी है, इन ऑखों, कानों से जो अमल निकलेगे उन पर कामयाबी या नाकामी होगी अगर फकीर अन्धा हो सकता है तो वजीर भी अन्धा हो सकता है अगर हमने मेहनत करक, जान लगाकर, जान झोंककर, मेहनत करके अपने बदन के आजा के अमल को दुरूस्त कर लिया तो हम कामयाब होगें और अगर खुदा न ख्वाशता अपने बनने की फिक्र न की तो दुनियॉ आखिरत मे नाकाम।

39

इन्सान की बीमारी ये है कि आदमी अपने जैसे मोहताजों के हाथ मे अपनी हाजता का इन्तेजाम समझता है

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! खुदा आदमी को जो कुछ भी देते हैं उसकी मेहनत पर देते हैं अगर आपने माल पर मेहनत की तो माल मिल जायेगा लेकिन आप भी मोहताज और माल भी मोहताज कि अन्धे को रास्ता दिखलान के लिये अन्धा साथ मे कर दिया, लगंड़े को लगंड़ा दे दिया, भूखे को भूखा दे दिया, लगंड़े को लगंड़ा देने से लगंड़ापन बढ़ गया या इलाज हो गया ? माल भी मोहताज है अगर इस पर कुत्ता पेशाब कर जाये तो ये माल उस कुत्ते की टांग नही पकड़ सकता, इसी माल से मकान बना लिया तो वो मकान भी माल की तरह ही मोहताज है। माल से भैंसें, गाय, बकरी ले आये वो भी मोहताज, एक मोहताज मिला तो हाजतों मे और इजाफा हो गया। इन्सान की बीमारी ये है कि आदमी अपने जैसे मोहताजों के हाथ मे अपनी हाजतों का इन्तेजाम समझता है, ये खुश है कि तेरे पास इतनी भैंसे हैं, इतना नकदी है, किसी दफा मे पुलिस ने धर लिया तो सारे मोहताज घर पर मौजूद है और ये जेलखाने मे कि सौ हाथ की दूरी पर इसका घर है और ये कब्र मे पड़ा हुआ है जहॉ इसकी पिटाई हो रही है कि वहॉ कोई काम नही आता।

40

वजीर-ए-आजम की हैसियत एक बड़े चूहे से ज्यादा नही हैं

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अल्लाहु-अकबर कहा तो बड़ा चूहा भी कहा जाता है, बड़े के बारे मे ये नही है कि उससे तुम्हारे मसअले का कोई तआल्लुंक हो कि बहुत बड़ा कारखाना या बहुत बड़ा मुल्क, ये सब ऐसे हैं जैसे बहुत बड़ा चूहा, अब एक छोटे से बिल्ली के बच्चे ने कहा म्याऊँ, ऐसे ही ये जितने बड़े हैं कलेक्टर साहब, वजीर साहब, जमीनदार साहब, खुदा-ए-पाक की कसम ! जो आदमी खुदा के गैर को बड़ा इकरार देते हैं वो ऐसे हैं जैसे चूहे को बड़ा मानने वाला अगर एक फरिश्ता म्याऊँ कर दे तो वजीर-ए-आजम की हैसियत एक बड़े चूहे से ज्यादा नही हैं।

41

अगर वजीर या सदर हुजूर सल्ल0 के अमल के खिलाफ बोल रहा है तो वो ऐसा है जैसे गधा बोल रहा है

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! "अश्हदुअन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" अगर तुम कामयाब बनना चाहते हो तो उस बड़े ने जिसके करने से सब कुछ हो रहा है उसने मुहम्मद सल्ल0 को अपना कासिद बनाकर तुम्हारे पास वो तरीका ए अमल देकर भेजा है जिससे सारे इन्सानो को कामयाबी मिलेगी। बुजुर्गो पर भी ये शर्त आयेगी कि अगर वो हुजूर सल्ल0 के अमल के खिलाफ कोई अमल कर रहा है तो वो बुजुर्ग नही हो सकता, अब तो सिर्फ हुजूर सल्ल0 का अमल ही नमूना है। कोई सलातीन वजीर बन जाये, साईन्सदा बन जाये, मशाएख बन जाये हम इनमे से किसी एक के भी कहने पर नही चलेगें सिर्फ हुजूर सल्ल0 के कहने पर चलेगें अगर वजीर या सदर हुजूर सल्ल0 के अमल के खिलाफ बोल रहा है तो वो ऐसा है जैसे गधा बोल रहा है। कुत्ते के भौकने पर अगर कोई अपना रूख मोड़ दे तो वो मंजिल तक नही पहुँच सकता, ये कान गधों की आवाज सुनने के लिये नही हैं तो गधे जैसे आदमियों की बात कैसे सुने, ये कान तो सिर्फ हुजूर सल्ल0 की बात सुनने के लिये हैं, जब ये ऑख गधे-कुत्ते देखने के लिये नही है तो गधे-कुत्ते जैसे इन्सान को कैसे देखे।

42

जितने मुल्क व माल के नक्शों से बड़े बन रहे हैं खुदा तेरे सामने इनको जलील करके दिखायेग

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जिस्म के सारे आजा को मुहम्मद सल्ल0 के तरीके पर इस्तेमाल कर ले तो आज जितने मुल्क व माल के नक्शों से बड़े बन रहे हैं खुदा तेरे सामने इनको जलील करके दिखायेगें, ये सब तेरे सामने हाथ जोड़-जोड़कर अपनी हाजतें कहेगें कि अल्लाह से मेरे लिये दुआ कर दो। तू जिस रास्ते से गुजर जायेगा कारें-मोटरें रूक जायेगीं, पार्लियामेन्ट से गुजर जाये तो गर्दनें झुक जायेगी, इसलिये कहते हैं कि तीन चिल्ले दे दो तो कहते हो कि साहब मैं तो जमीनदार हूँ, क्या मतलब कि मैं जमीनदार हूँ ? कि मेरे पास अभी वक्त नही है किसी और को पकड़ लो, अरे ! कोई और जायेगा तो वो कामयाब होगा लेकिन तू तो मुसीबतों मे मुब्तिला होगा।

43

हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह को देखा है इसलिये वो बीना हैं

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हजरत मुहम्मद सल्ल0 को जो सबसे पहला हुक्म मिला है कि ऐ नबी आप उन लोगो को डरायें जिन्होने छोटों को बड़ा समझ रखा है कि अगर ये इन्ही को बड़ा समझकर चलते रहे तो आफतें और मुसीबतें इन्हे घेर लेगीं। सबसे पहली मेहनत और सबसे पहली आवाज हो यही है, सबसे पहले बच्चे के कान मे जो आवाज दी गयी اَللّٰهُ اَكْبَرُ की तो इसमे बहुत बड़ी कामयाबी का राज है बस त् खुदा की बड़ाई को

पहचान जा कि वो इतना बड़ा है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने अल्लाह को देखा है इसलिये वो बीना हैं ओर हम सब नाबीना है, देखने वाले ने ये बतलाया कि खुदा की बड़ाई के ऐतबार से अपनी चौबीस घन्टे की जिन्दगी के अमल ठीक करो, जो बोलने को बतलाया वो बोलो, जो देखने को बतलाया वो देखो, जो सुनने को बतलाया वो सुनो, जो करने को बतलाया वो करो, पहले दिन से जो आवाज कान मे पड़ी है आज तक वो आवाज खुदा कान मे पहुँचा रहे हैं पर तू कहे कि मेरा जमीदारा टूट जायेगा, अच्छा तो आप हो गये जमीदारा चलाने वाले। अरे गधे ! तेरे हाथ मे कुछ नही है, तेरी हैसियत मनी के कतरे की भी नही है, खुदा ने तुझे बनाया है अगर वो तेरी टांग तोड़दे तो क्या करेगा ? बाहर तो धोखा है ऑखों से दिखायी कुछ दे रहा है पर हकीकत मे ये सब कुछ खुदा के करने से हो रहा है।

44

क्या तुम ये तमन्ना करोगे कि तुम गधे बन जाओ

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मुहम्मद सल्ल0 के तरीकों को नापसन्द करने वाले गधों को खुदा वजारत की कुर्सी पर बिठाये तो क्या तुम ये तमन्ना करोगे कि तुम गधे बन जाओ ? मुहम्मद सल्ल0 के तरीकों से हटकर, अल्लाह के यकीन से हटकर आदमी गधे से ज्यादा हकीर है, कुत्ते और सुअर से ज्यादा हकीर है तो क्यों गधा बनने के पीछे पड़े हुए हो। तुम तो ये तय करो कि चाहे हमारे पास कुछ न रहे हमे तो आदमी बनना है, इसके लिये चार महीने कुछ भी नही अभी तो उम्रों की, सालों की जरूरत पेश आयेगी।

45

आसमान से पके-पकाए खाने उतर आये

14 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अपने आपको सारे चक्करों से निकालो फिर खुदा से मॉगो इन्सानियत के सारे मसअले हल होंगें पर सबसे पहले मेहनत करनी पड़ेगी कि हमारा रूख सबकी तरफ से रब की तरफ मुड़ जाये अगर इस्लाम वाली जिन्दगी आ जाये जिस जिन्दगी पर दुआ करने से मुर्दा सवारी जिन्दा हो जाये, आसमान से पके-पकाए खाने उतर आये अगर वो जिन्दगी आ जाये तो ये सब तुम्हारी पूजा करते फिरेंगें, वो तो बेचारा माथा टेकने को तैयार है लेकिन तुम्ही नही चाहते कि ये तुम्हारे सामने झुके, इन्होने ख्वाजा मुईनुददीन चिश्ती रह0 के किस्से सुने तो वहॉ जाकर माथा टेक दिया। ये झुकने वाला आज हमे क्यों मार रहा है ? ये इसलिये मार रहा है कि तुम हमे अपने सामने क्यों नही झुकवाते कि ऐ मुसलमान तू हमे अपने आगे क्यों नही झुकवाता आज हम सॉप, बन्दर, दरिया के आगे झुक रहे हैं अरे ! हम तो तेरे बुजुर्गो के नाम तक पर झुकने को तयार है तू वलियों की तरह क्यों नही बनता ?

तू सूरज की तरह रौशन बन हम उसके आगे नही झुकेगें तेरे आगे झुकेगें।

तू दरिया की तरह सखावत से बहने वाला बन हम दरिया के आगे नही झुकेगें तेरे आगे झुकेगें।

तू सालेह बन, वली बन,

तू दुआ वाला बन, हुजूर सल्ल0 वाली जिन्दगी वली बनाने की मशीन है।

46

माल मेहनत-ए-इन्सानी से नही मिलता

18 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! माल मेहनत-ए-इन्सानी से नही मिलता, ना चीजें माल से नही मिलती और ना ही चीजों से इन्सान की जिन्दगी नही बनती बल्कि रसूलुल्लाह सल्ल0 वाले अमलों से खुदा दुनियॉ की जिन्दगी बनाते है और आखिरत भी बनाते है। अमल पर आखिरत मे मकानात मिलेगें दुनियॉ मे नही मिलेगें ये ख्याल गलत है, बस इस ख्याल से ही सारी गलती शुरू हुई है। अमल पर तो दुनियॉ व आखिरत दोनो जगह की जिन्दगी बनती है और माल का रास्ता वो है जिसमे दुनियॉ की थोड़ी बनती है पर बाद की सारी बिगड़ जाती है। अमलों पर अल्लाह

मुल्क देगें, माल व जायजादे देगें, बागात-इज्जत-गल्बा-इत्मिनान व सुकून देगें और हिफाजत करेगें, दुनियॉ मे दुनियॉ की बिसात के एतबार से देगें और आखिरत मे आखिरत की शान के एतबार से देगें।

47

यकीन की कमजोरी की वजह से दिलों मे शिर्क है

18 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अमल आखिरत को सामने रखकर बनता हैं लेकिन हम दुनियॉ को सामने रखकर चल रहे है, इसो वजह से रात-दिन हमारी चीजे हमारे पास से जा रही है कि किसी ने मुकददमा डाल दिया, किसी की भैंस खो गयी, किसी की जमीन जाती रही, किसी की दुकान मे आग लग गयी, किसी के मकान मे चोरी हो गयी, यकीन नही सीखा इसलिये कह रहे हैं कि हमारी जमीन हिन्दु ने कब्जाकर ली, यकीन की कमजोरी की वजह से दिलों मे शिर्क है अगर ईमान होता तो क्या कहता ? तब ये कहता कि अमल की खराबी की वजह से खुदा ने हमसे जमीन वापस ले ली। दिलों मे शिर्क होने की वजह से ये पुलिस वालों से कह रहा है कि साहब ! मेरा तो कोई कुसूर नही मै बेकुसूर हूँ, ये जमीन वाकई मे मेरी है कुसूरवार तो वो है जिसने मेरी जमीन पर कब्जा किया है हालॉकि वो तो खुदा ही के हुक्म से दबा रहा है, खुदा एक की दूसरे से छिनवा कर हमे दिखा रहा है ताकि पता चल जाये कि हमारी जिन्दगी गलत है। सहाबा किराम की जमीने दस साल पहले छूटी थी दस साल बाद वापस मिल गयीं, हमे 18 साल हो गये हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की तक्सीम को पर मुसलमानो के हाथ से रोजाना जा ही रहा है मिल नही रहा। पहले रिश्वत नही देते थे अब वो भी देने लगे तो और चीजें हाथ से निकल रही हैं। उस वक्त झूठा बयान दिया था तो पहले का अब भुगत रहे हैं अब का आगे भुगतेगें, यहॉ तक होते-होते एक दिन फकीर बनकर खड़े हो जायेगें।

48

नफस ये चाहेगा कि इन्सान शक्लों की तरफ मायल हो

19 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! दो जिन्सो के मज्मुए का नाम इन्सान है, एक जिन्स इसके अन्दर रूह की है और एक जिन्स है जिस्म। ये जिस्म शक्लों के रास्ते बड़े लम्बे-चौड़े निजाम के साथ दुनियॉ मे लाया गया है पर ये छोटा सा जिस्म मॉ के पेट मे तैयार पड़ा है लेकिन रूह के बगैर इसकी गाड़ी रूकी हुई है कि रूह आ जाये तो गाड़ी आगे बढ़े, अल्लाह के हुक्म पर ही इस जिस्म मे रूह डाली जायेगी वरना ये जिस्म इस्कात हो जायेगा। इस रूह को भेजने वाले अल्लाह, लाने वाला फरिश्ता और आने वाली रूह, जिस्म अलग जिन्स है और रूह अलग जिन्स है, इन्सानों पर जो भी हाल अल्लाह की तरफ से आयेगा वो इसकी रूह पर आयेगा पर जाहिर इसके जिस्म पर होगा। जिस्म के अपने तकाजो का नाम नफस है, हालात के आने पर रूह कुदरत की तरफ मुतवज्जाह करेगी क्यों कि ये कुदरत के रास्ते से आयी है और जिस्म शक्लों की तरफ मुतवज्जाह करेगा, नफस ये चाहेगा कि इन्सान शक्लों की तरफ मायल हो क्यों कि ये जिस्म खुद शक्लों से निकल कर आया है। जमीन और आसमान के दरम्यान फैली हुई शक्लों की तरफ ये नफस का माददा जिस्म को इस तरह खीचता है जिस तरह मकनातीस (magnet-चुम्बक) लोहे को अपनी तरफ खींचता है, जिस्म बेचारा कोई चीज ही नही अगर इसमे रूह न हो फिर ये जिस्म न खाने-पीने का, न उठने-बैठने का, बस अल्लाह के गैर की तरफ मुतवज्जा करना ही इस जिस्म का काम है कि आपको माल की तरफ, चीजों की तरफ, सोने-चॉदी की तरफ, सवारी और महलों की तरफ मायल करे। इसी माददे पर कदम बढ़ाने से रूह बिगड़ती है, जितना ये नफस के खीचने पर शक्लों से उम्मीद करेगा उतना ही इसकी रूह बिगड़ती चली जायेगी।

49

करंट तार मे घुसता है करंट के अन्दर तार नही घुस सकता

19 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! यकीन की खराबी और अमल की खराबी ये दो चीजें हैं जो रूह को स्याह और बदबूदार करती है। यकीन और अमल की दुरूस्तगी रूह को खुशबूदार और नूरानी करती है। तुम्हारे यकीन का और अमल का रूह के बनने वाली शक्ल पर आना बस इस पर खुदा पहले इस दुनियॉ मे तरतीब बदलेगें ताकि लोग खुदा को मान जाये। जिस्म वह जिन्स है जो किसी तरह भी रूह मे नही घुस सकता जैसे तार मे करंट

घुसता है करंट के अन्दर तार नही घुस सकता इसी तरह रूह मे कोई चीज या कोई शक्ल नही घुस सकती। दवाऐ रूह मे नही घुसेगीं जिस्म मे फैल जायेगीं, जो रूह से चलता है वो रूह पर असर डालता है, तुम्हारा चलना रूह से चला है और जिस्म से जाहिर हुआ है। अमल की तहरीक रूह से चलती है और अमल जिस्म से जाहिर होता है अगर हमारे अमल रूह की लाश के है तो रूह बिगड़ जायेगी कि पैसे तो तकिया मे और बुख्ल बाहर बस रूह मे स्याही पहुँच गयी अगर कुरआन को सामने रखकर तक्सीम कर दिया तो रूह मे नूर आ गया, इस रूह के बनने-बिगड़ने के लिये अल्लाह ने कुरआन नाजिल किया है।

50

मौजूदा को नजर अंदाज करने पर कामयाबियाँ मिलेंगीं

20 सफर 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जिस तरह लोग आज माल के रास्ते पर चल रहे है, जब इसी तरह तुम अमल के रास्ते पर चलोगे तो अल्लाह तआला शानुहू कामयाबियाँ देगें, कुछ अरसे बाद देखोगे कि माल के रास्ते वाले तो हो गये खत्म कि कुछ डूब गये, कुछ जल गये, कुछ धंस गये और अमल वाले एकदम चमक गये लेकिन इस रास्ते पर चलने से पहले आने वाली जिन्दगी की तहकीक करनी होगी। मौजूदा नक्शे वालो की नाकामी आपको तब नजर आयेगी जब आपके सामने कारून, फिरऔन और शददाद की जिन्दगी का नक्शा होगा। य अगला पिछला दौर जब सामने रखकर चलोगे तो अमल वाले रास्ते पर चलना आसान होगा, मौजूदा को नजर अंदाज करना, मौजूदा को देखकर न चलना कुरआन पाक मे इसी वास्ते अगला भी बहुत कुछ बतलाया और पिछला भी बहुत कुछ बतलाया।

51

अमल के रास्ते से जिस दिन तुम्हारी जिन्दगी बनेगी तुम्हे उस दिन तक पता नही होगा

20 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अमल के रास्ते से जिस दिन तुम्हारी जिन्दगी बनेगी तुम्हे उस दिन तक पता नही होगा कि आज तुम्हारी जिन्दगी बननी है, तुम यूँ समझ रहे होगे कि बस जी आज तो जिन्दगी खत्म हो रही है, अब तक की जिन्दगी का बनना नही दिखायी दे रहा अचानक समन्दर मे बारह सड़के बनती है, बनी इसराईल पार होते है और फ़िऔन डूब जाता है, अब दुनियाँ को उनकी कामयाबी और नाकामी दिखायी दी।

52

हमारे अमल ऐसे बन जायें जैसे अमलों पर खुदा पालता है

20 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अपने अमल को ऐसा बनाओ जैसे अमल खुदा को पसन्द हैं, चीजों से निगाह हटा लो दुकान चाहे जैसी हो, माल वाला रास्ता चमकीला रास्ता है जो शराब की तरह धोखे का रास्ता है, हमे माल वाले रास्ते मे नही फंसना, हमे तो अमल वाले रास्ते पर चलना है। हमे इज्जत, कूवत, गल्बा, रोटी, कपड़ा, हिफाजत और ऐश वगैरह अमल वाले रास्ते से लेना है। अब अपने अपने अमल बनाने की कोशिश करो कि हमारे अमल ऐसे बन जायें, जैसे अमलों पर खुदा पालता है। जब तक आपका अमल ऐसा न बने तब तक परेशानी दूर नही होगी, पैसा हाथ मे आने से भी फौरन कामयाबी नही मिलतीं पैसे से भूख और प्यास दूर नही होती, पैसे से मकान बन जायेगा, रोटी तो मिल जायेगी पर रास्ते मे अगर किसी ने पैसा छीन लिया और मारपीट कर अस्पताल मे डाल दिया तो न मकान बन पाया और न रोटी मिली।

53

हिदायत क्या है

20 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! एक तरफ मेहनत के बाद माल और एक तरफ मेहनत के बाद हिदायत, हिदायत क्या है ? माल भी खुदा देता है, चीजें भी खुदा ही देता है, मेरे अमल अच्छे होंगें तो माल भी खुदा ही देगा और चीजें भी खुदा ही देगा। जिस तरह माल वालों को ये सब कुछ माल से मिलता दिखायी दे रहा है, आपको ये सब कुछ अमल से मिलता दिखायी देने लगे, इसे हिदायत कहते हैं अगर आपको चीजें माल मे मिलती दिखायी दे तो ये

जलालत है, अमल जलालत के साथ होगा तो इस पर खुदा के यहॉ से मिलने का दरवाजा नही खुलेगा। सारा सिलसिला जो माल मे दिखायी दे रहा है वो अमल से दिखायी देने लगे तो ये हिदायत है कि मैं अमल ठीक करूँगा सब मेरे आगे झुक जायेंगें, जैसे मालदार माल पर शेखी बघारता है कि वो किसी मसले को नही सोचता, कत्ल तक के मुकददमो पर मुतमईन रहते हैं कि सौ मसले माल से हल हो जायेंगें, उसी तरह से ये सारे मसले हमे अमल से हल होते दिखायी देने लगें तो ये हिदायत है।

54

मुकाबला आखिर तक है

20 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! एक मेहनत पर हिदायत मिलेगी और एक मेहनत पर माल मिलेगा। हिदायत मिलने के बाद अमल के नक्शे बनेगें कि इबादत, मआशरत, कमाई के अमल यूँ ठीक कर लो क्यों कि इबादत, मआशरत, कमाई के अमलों मे ही कामयाबियॉ होंगीं। आपके सामने ये हो कि ये जो हुकूमत परेशान हो रही है, इसकी परेशानी की वजह ये है कि इसक अमल खराब हैं। अपनी सारी कामयाबियॉ अमलों के ठीक करने मे दिखलायी दे रही हो, मुकाबला आखिर तक है। जैसे दो लाईने एक साथ चलती हैं पर कभी दोनो लाईने आपस मे नही मिलती अगर कहीं ले जाकर माल की लाईन से अमल की लाईन को जोड़ दिया तो अमल की लाईन रूक जायेगी और गाड़ी गिर जायेगी। अमल से दरवाजा जब खुलेगा जब माल की लाईन के मुकाबले मे अमल की लाईन चल जाये, जब अमल की लाईन चल जायेगी तो दूसरी लाईन वालों को चिड़ायेगी, वो हाथ दिखायेंगें कि ये जा रहे है।

55

माल और अमल मे चौबीस घन्टे की जिन्दगी का मुकाबला है

20 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! माल और अमल मे चौबीस घन्टे की जिन्दगी का मुकाबला है, पचास पचास हजार का मकान बना रहा है और इसके शहर के अन्दर बेवाऐं बैठी हुई है, लड़कियॉ जिना का शिकार हो रही हैं, शरीफ औरतें रंडियां बन रही हैं, साहब जादे पचास हजार की जमीन खरीद रहे हैं, ये माल का रास्ता है अमल का रास्ता नही है।

56

खिलाफत वाली जिन्दगी तब ही बनेगी जब चीजों से पलने का जहन खत्म हो

21 सफर 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! तब्लीग मे निकल कर अमलों से पलने पर मेहनत करनी है कि मेहनत से माल नही, माल से चीजें नही, चीजों से परवरिश नही बल्कि खुदा अमलों से पालेंगें। माल से अमल नही बल्कि अमल से माल है, माल से चीजें नही बल्कि अमल से चीजें है, चीजों से पलना नही बल्कि अमल से पलना है, जिनको चीजों से पालता है उन्हे थोड़े दिन पालता है फिर ज्यादा दिन परेशान करता है और जिन्हे अमलों से पालता है उन्हे थोड़े दिन परेशान करता है फिर हमेशा पालता है, इसलिये यकीन बदल लो कि मैं ईमान की दावत दूँगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा, मैं अल्लाह का जिक्र करूँगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा,मैं इल्म हासिल करूँगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा, मैं बन्दा-गाने खुदा की खिदमत करूँगा, मेरा खुदा मुझे पालेगा पर खिलाफत वाली जिन्दगी तब ही बनेगी जब चीजों से पलने का जहन खत्म हो।

57

ये अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम है

21 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! ईमान के हल्के और तालीम के हल्के से फारिग होकर जिन नक्शों मे जाना है उन नक्शों के अमलों से पलने के लिये मेहनत करो, ये अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम है। इन जानवरपने की जिन्दगी गुजारने वालों को समझाना कि तू जानवरपने से निकल और खुदा की खिलाफत वाली जिन्दगी की तरफ आ तो खुदा कामयाब कर देगा, ये समझाना अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम है, ये बात समझाने खुदा फरिश्तों को

नही भेजता बल्कि फरिश्तों को तो इन जानवरों के घरो मे आग लगाने भेजता कि इनके मकानो में आग लगा आओ, सैलाब से इनकी बस्तियॉ डुबो दो। फरिश्ते तो ईमान की मज्लिस मे, इल्म की मज्लिस मे, जिक्र की मज्लिस मे और नमाजों मे आकर खुद शामिल हो जाते हैं। इसलिये इन जानवरों को समझा कर अल्लाह की तरफ मोड़ने की मेहनत करो, ये अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का काम है।

58

सब चाहेगें की ये हमारी रोटी खा ले

21 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! ईमान की मज्लिस के अन्दर बैठने की कसरत से इन्सानी जवाहरात खुलेंगें फिर ये खुदा की नियाबत की जिन्दगी की तरफ पलटा खायेगा और इन्सानी जिन्दगी बनाने पर आ जायेगा। सबकी जिन्दगी बनाना चाहेगा तो सब उससे मुहब्बत करगें, सब चाहेगें की ये हमारी रोटी खा ले, हमारे बैल ले ले। आज मांगते हो तो दूसरे लोग इंकार करते है पर कल तुम इंकार करोगे कि जी हमे जरूरत नही है अगर थोड़े से झोपड़े पर कनआत कर ली, थोड़े से कपड़े पर कनआत कर ली, थोड़े से साज-सामान पर कनआत कर लो, तो कल को खुदा लोगों के दिलों को तुम्हारी तरफ पलटेगें, दुनियॉ इस रास्ते पर चलने वालों के सामने गर्दन झुकाने पर मजबूर होगी।

59

पहले अमल है फिर पैसा है

21 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! आज उमूमी जहन ये है कि पैसे पहले बाद मे अमल हालॉकि पहले अमल है फिर पैसा है। आप दुकान बनाकर पहले अमल करेंगें फिर पैसा मिलेगा कि आप दुकान के लिये अपने हाथ-पैर-जुबान-कान-आखॅ- दिमाग को पहले इस्तेमाल मे लाते हैं फिर पैसे मिलते है। ये बदन के आजा का इस्तेमाल ही तो अमल है पर लोग इससे गाफिल हैं, इनके इस्तेमाल के बाद ही तो पैसे मिलते है अगर ये अमल ठीक न किया तो खुदा आखिर तक सब बिगाड़ कर फेक देगें अगर तुमने किसी के चार पैसे दबा लिये दो पैसे पर साढ़े सात सौ नमाजे चली गयी अगर माल के हासिल करने के अमल खराब हों तो तुम्हारा हज, तुम्हारे रोजे, तुम्हारी नमाजे, तुम्हारे सदका-खैरात मुहॅं पर फेककर मारे जायेंगें। तुम कह रहे हो कि बाल-बच्चों को पालना दीन है तो क्या कम तौल कर, मिलावट करके, धोखा देकर मिलने वाले माल को खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ? झूठ से कमाया हुआ माल खिलाकर बच्चों को पालना दोन है ? सूदी कारोबार का माल खिलाकर बच्चों को पालना दीन है ?

60

सबसे बड़ा अमल दावत है

21 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! ये जहन बनाओ कि माल से जिन्दगी नही बनेगी अमल से जिन्दगी बनेगी, ये जहन बनाने के लिये ईमान की दावत, ईमान का सीखना, इल्म हासिल करना, मसले सीखना, नमाजें पढ़ना ये बड़े-बड़े अमल हैं और ये इतने बड़े अमल हैं कि इन अमलों पर फ़िऔन की हुकूमत डूबी है, मायदा आसमान से उतरा है, सूरज वापस आया है तो इनसे बड़े कोई अमल नही हैं। वजारत, सदारात, तिजारत, ये सारे अमल बहुत छोटे ह, अमल वो बड़े हैं जिन अमलों को अल्लाह ने करने का हुक्म दिया है, अल्लाह पहले खुद दावत दे रहे है इसलिये दावत नमाज से बड़ा अमल है। अल्लाह ने नमाज न पढ़ी, हज न किया पर अल्लाह ने इनकी दावत दी है इसलिये सबसे बड़ा अमल दावत है। अल्लाह दावत देने पर सबसे ज्यादा पालत हैं अगर यकीन के साथ ये उस अमल को करेगा जिस अमल को करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है तो इस अमल पर बहुत कुछ मिलेगा।

61

नमाज से परवरिश का जहन नही है

21 सफर 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! वो नमाज कौन सी है जिस नमाज के अमल मे लाने से तुम्हारे मॉगने पर तुम्हे रोटी मिलेगी ? वो हुजूर सल्ल0 वाली नमाज है कि नमाज के अमल को अन्दर-बाहर से हुजूर सल्ल0 वाला

बनाओ, बाहर से हुजूर सल्ल0 वाली शक्ल और अन्दर हुजूर सल्ल0 वाली कैफियत। तेरा नमाज से परवरिश का जहन नही है इसलिये तेरे आजा बिगड़े हुए है, इन्सान नमाज बनाने की उस दिन मेहनत करेगा जिस दिन इसे मालूम हो जायेगा कि नमाज से परवरिश होगी। ऐलान हो रहा है कि सफ मे बिछी हुई दरी नापाक है इस पर नमाज नही होगी पर ये उसी पर नमाज पढ़ रहे हैं, इन सबके जहन मे ये है कि परवरिश तो जमीदारा से होगी, परवरिश तो तिजारत से होगी, परवरिश तो वजारत से होगी, परवरिश तो सदारत से होगी, फौजो के हाथों मे जो जंगी नक्शा है उससे कामयाबी होगी, अरे कामयाबी उस जंगी नक्शे से नही होगी बल्कि कामयाबी नमाज से होगी, ये यकीन का मोड़ है, यकीन बनाओ कि मैं नमाज पढ़ कर खुदा से जो मॉगूगा खुदा हमे वो देगें।

62

फ़िऔनी हुकूमत का जवाल नमाज मे नजर आयेगा

19 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! आप रूह के एतबार से अमल करने वाले बने इसके लिये सबसे पहले अल्लाह का नूर अपने दिल मे लेना पड़ेगा इसी नूर से इन्सान अमलों म कामयाबी देखेगा। चॉद-सूरज की रौशनी मे तुम्हे अमल से कामयाबी नही दिखायी देगी, अल्लाह के नूर से अमल मे कामयाबी दिखायी देगी, तेरे दिल के अन्दर वो रौशनी आयेगी जो जन्नत मे हमेशा बाकी रहेगी और या तेरे दिल मे वो अन्धेरा आयेगा जो हमेशा तेरे दिल मे बाकी रहेगा। यह नूर बढ़ते-बढ़ते ऑखों तक जाता है फिर इस नूर से नजर आयेगा कि मैं नमाज पढ़कर खुदा से मॉगूगा तो खुदा मेरा कर्ज उतारेगा, मुझे इस परेशानी से निकालेगा। जब दिल मे नूर आ जायेगा तो खुदा की कसम फ़िऔनी हुकूमत का जवाल नमाज मे नजर आयेगा, सारे नबियों के किस्से नमाज के है, बॉझ औरत से बच्चे का पैदा होना नमाज मे नजर आयेगा, जब तक हमारे दिल मे ये है कि खाली नमाज से क्या होगा माल भी तो चाहिये समझ लो दिल मे नूर नही है।

63

हम तो अपनी दुआ ही से मर रहे है

18 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हम नमाज मे कह रहे हैं कि ऐ अल्लाह !
اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ मुझे नबियों वाले रास्ते पर चलाईयो और **الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ** कारून, फिरऔन, शददाद व हामान के रास्ते पर न चलने दीजियो, ये दूआ मॉगे फर्जो मे और तहज्जुद मे भी पर बाहर जाकर ये मेहनत वही करे जो कारून व शददाद ने की। ऐ अल्लाह ! मुझे धोखा-झूठ-सूद और जुल्म के रास्ते पर न चला लेकिन मेम्बरी व वजारत या जायजाद मे लगा हुआ है अब या तो अल्लाह इसकी दुआ को इसीके मुॅह पर फेककर मारे तो कारोबार चले और अगर अल्लाह इसकी दुआ कुबूल करलें तो इसकी जमीन छिने या दुकान मे आग लगे या ये जेलखाने मे जाये, अल्लाह दुआ कुबूल करें तो हमे ऐश मे से निकाले, हमारा माल खत्म करे कि हम दुआ तो करे जिन्दगी के नक्शों को बिगाड़ने की
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَऔर मेहनत करे नक्शो के बनाने की, हम तो अपनी दुआ ही से मर रहे है।

64

अरब के बददुओं को कैसर व किसरा के नक्शे दिलवाये

18 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मुसलमान अगर नबियो के रास्ते पर न चला तो नमाज ही कुबूल न होगी, नबियों के रास्ते ने बनी इस्राईल को मुल्क व माल दिलवाया, आसमान से खाने उतर वाये, अरब के बददुओं को कैसर व किसरा के नक्शे दिलवाये कि हमे कारून, फिरऔन,शददाद व हामान के रास्ते पर मत चला **الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ**हुकूमत-ओहदें और मुल्क से जिन्दगी बना रहे है और दुआ ये मॉग रहे हैं कि ऐ अल्लाह मेरी जिन्दगी मे मोड़ पैदा कर दे, मुझे नबियों के रास्ते चला अगर वजारत चाहते हो तो भी ठीक है पर नमूना के लिये युसूफ अलै0 हो कि ऐ अल्लाह वजारत चाहता हूॅ लेकिन इस तरह चाहता हूॅ जिस तरह युसूफ अलै0 को आपने दी थी।

मैं आपसे रोटी और कपड़ा चाहता हूँ जिस तरह सुलेमान अलै0 को आपने दिया था, फिरऔन की तरह नही चाहता कि पहले तो मिल गया फिर दोजख मे डाल दिया। जो तुम चाहते हो उसी को हम तब्लीग मे यूँ कहते है कि तुम्हे जो लेना हो लो पर नबियों के रास्ते से लो ताजिरो के रास्ते पर न मरो इसमे नुकसान है, यही तुम्हारी दुआ है कि कौमे-ए-शुऐब से शुऐब अलै0 की तरफ जिन्दगी मुड़ जाये, कौमे-ए-सबा से इब्राहिम अलै0 की तरफ जिन्दगी मुड़ जाये, जैसे उन्होने रेत मे जिन्दगी बनवा कर दिखलायी। तुम मकासिद न तोड़ो बस रास्ता बदल दो, अमल करके अल्लाह से मॉगना ये नबियों वाला रास्ता है, चीजों पर मेहनत करके अल्लाह से मॉगना ये मुश्रिको वाला रास्ता है।

65

बातिनी इल्म चाहिये खारजी इल्म नही

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! नमाज इल्म पर पूरी उतरे इसके लिये बातिनी इल्म चाहिये खारजी इल्म नही। खारजी इल्म किताब के अन्दर का है और बातिनी इल्म सीने के अन्दर का है जैसे तवाफ करते हुए किताब मे पढ़ते जा रहे हैं ये खारजी इल्म है। एक इबादत वह है जिसमे गैर को बातिनन छोड़ना शर्त है खारिजन नही और एक इबादत वह है जिसमे गैर को बातिनन-खारिजन छोड़ना पड़ता है। इल्म पहले हुजूर सल्ल0 के अन्दर आया फिर अन्दर से बाहर आया, इसी वजह से जिब्राईल ने आकर आपको तीन बार खूब जोर से भीचा, इससे बराय-ए-रास्त कुरआन को अन्दर उतारा गया, किताब मे लिखकर कुरआन न दिया अगर इक्रा के मायने ये हों कि किताब मे से देखकर पढ़ो तो हुजूर सल्ल0 ने इस लिहाज से पढ़ा नही है। इक्रा सबसे पहले हुक्म है, इस हुक्म को 13 साल मक्का मे पूरा किया फिर सुलह-हुदैबिया तक के छ साल मदीना मुनव्वरा के मजीद गुजरे, 19 साल तक इस इक्रा को पूरा करते रहे लेकिन सुलह मे हुजूर सल्ल0 लफज अल्लाह तक पढ़ना न जानते थे।

66

नमाज हिदायत का नूर लेने के लिये है

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! नमाज हिदायत का नूर लेने के लिये है, नूर लेकर नमाज पढ़ो, नमाज पढ़कर मॉगो जो मॉगोगे वही मिलेगा, रोटी, कपड़ा, मकान, हिफाजत और इत्मिनान जो मॉगोगे मिलेगा, खुदा कह रहे हैं कि मेरे बन्दों के साथ अच्छा सुलूक करके दिखाओ मैं पालूँगा, इल्म वालो का एहतराम करो और जाहिलों को समझाओ उन पर शफक्त करो तो मैं पालूँगा, जब तेरा यकीन जमीन से लेकर आसमान तक जितने छोटे बड़े नक्शे फैले हुए है उन पर से हट जाये तो झोपड़ों मे किले वालों को झुकाकर दिखाऊँगा। माल का रास्ता अख्तियार करोगे जब भी अल्लाह पालेगें और अमल के रास्ते पर मेहनत करोगें जब भी अल्लाह ही पालेगें, माल के रास्ते पर मेहनत करोगें नाराज होकर थोड़ा सा थोड़ी देर के लिये देगें और अमल पर मेहनत करोगें तो रजा के तौर पर हमेशा के लिये देगें। सबसे पहले खुदा के गैर से यकीन हटाने के लिये मेहनत करो कि हम नमाज पर और कलिमे पर मेहनत करेगें हमारा अल्लाह राजी होकर हमे पालेगा।

67

बीस-बीस साल हो गये तब्लीग मे फिरते हुए पर यकीन नही बदले

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! यकीन के साथ कलिमे की तरफ बुलाना सीख जाओ, अभी तक जो तब्लीग हो रही है कि बीस-बीस साल हो गये तब्लीग मे फिरते हुए पर यकीन नही बदले इसलिये कि अभी हमने यकीन बदलने का इरादा ही नही किया है। दुकानदार ने यकीन नही मोड़ा अगर यकीन आ जाये तो फिर मस्अला यह होगा कि अगर इस हुकूमत ने हमारी बात मान ली तो फूले-फलेगी और अगर न मानी तो जाकर डूबेगी।

68

अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये कायनात रास्ता नही है

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! अल्लाह से फायदा हासिल करने के लिये कायनात (दुनियॉ और दुनियॉ का सामान) रास्ता नही है बल्कि आमाल-ए-मुहम्मद सल्ल0 रास्ता है अगर अन्दर-बाहर मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल

होगें तो खुदा कामयाब कर देगें वरना नही। जैसी जिन्दगी उन्होने गुज़ारी है उस जिन्दगी मे खुदा से इस्तेफादा है, सारे अम्बिया के रास्ते खत्म हो चुके है अब तो सिर्फ मुहम्मद सल्ल0 वाले रास्ते से ही खुदा से फायदा मिलेगा। अब मेहनत होगी शक्लों से होने के गलत यकीन को निकाल कर खुदा से होने की तरफ और आमाल-ए-मुहम्मद सल्ल0 से हाने की तरफ। खुदा ने कलिमा और नमाज दिया, कलिमे वाले यकीन को दिल मे गाड़ने के लिये नमाज पर मेहनत करो, जैसे सियासत, जरआत ,तिजारत, डाक्टरी, डराईवरी, पहलवानी, तैरना इन्सान के इस्तेमाल की मुख्तलिफ शक्लें हैं, ऐसे ही नमाज भी इन्सान की एक खास शक्ल है जिसमे इन्सान खुदा के एतबार से इस्तेमाल होता है।

69

खुदा से लेने के एतबार से इस्तेमाल का नाम नमाज है

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! आज इन्सान का इस्तेमाल चीजों के एतबार से है कि आलात-ए-तिब के एतबार से इस्तेमाल डाक्टरी है, लोहे के एतबार से इस्तेमाल लोहारपन है लेकिन खुदा से लेने के एतबार से इस्तेमाल का नाम नमाज है। इसी इस्तेमाल से फौजों, हथियारों, राकेटों के मुकाबले मे खुदा की कुदरत के दरवाजे खुलेगें, जिस दिन चाहेगें साइन्सियात को मिटटी कर देगें और हमारे आमाल की ताकत को जाहिर कर देगें जैसे सॉप को जब चाहा लाठी बना दिया या लाठी को सॉप बना दिया। बड़े दरख्त से छोटा सा दाना निकाला छोटे से दाने से कितना बड़ा दरख्त निकाल दिया, कायनात का यकीन निकालना इस्तेफादा-ए-कुदरत के लिये शर्त है।

70

कामयाबी की शुरूआत नमाज से होगी

1 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! आज मस्जिद मे आने वाले नमाजियॅा का अमल से पलने का जहन नही है बल्कि नक्शों और चीजों से पलने का जहन बना हुआ है। याद रखना कामयाबी की शुरूआत नमाज से होगी, दुनियॅा व आखिरत की सारी फलह व बहबूद और हिफाजत नमाज पर है।

हजरत नूह अलै0 के जमाने मे अक्लियत चमकी और अक्सरियत डूबी सारा किस्सा नमाज का है, नबियों के जमाने मे जो नक्शों की तब्दीली है वो सारी नमाज पर है। जिसके नक्शे बने हुए थे उनके नक्शे बिगड़े और जिनके नक्शे बिगड़े हुए थे उनकी जिन्दगी बनी, ये सारी बुनियाद नमाज पर थी। वो नमाज जिस नमाज से नमाजी खाता था, नमाज से पीता था, नमाज से हिफाजत लेता था,

वो वजीरों के मुकाबले मे बगैर वजारत के कामयाब,

वो कोठी-बंगले वालो के मुकाबले मे बगैर झोपड़ी के कामयाब,

इसकी जरूरत पर आग गुलजार हो जायेगी, पानी मे सड़के उतर आयेगा, दुश्मनों की निगाहें और दिल बिठा दिये जायेगें, ये सब उनके साथ होगा जो नमाजी नमाज से पहले तीन मेहनतें करे और नमाज के बाद भी तीन मेहनतें करे।

71

नमाज के अमल मे रूह, ऑख, कान, जुबान, हाथों, पैरों, दिल व दिमाग के लिये अहकाम है

11 मई 1956 को बगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! नमाज क्या है ? मुजददिद अल्फसानी रह0 ने अपने मक्तूब मे लिखा है कि इन्सान नमाज के अमल मे वुजू और कुरआन वगैरह मिलाकर 600 अरकान की तामील करता है, नमाज के अमल मे रूह, ऑख, कान, जुबान, हाथों, पैरों, दिल व दिमाग के लिये अहकाम है, य अहकाम नमाज के अन्दर से तआल्लुक रखते है। नमाज के बाहर के अहकाम जिन आमाल पर नमाज मौकूफ है उन्हे अमल मे लाये बगैर नमाज से फायदा नही उठाया जा सकता। (मज्मुआ बयानात जिल्द. 5)

72

हिदायत के मिलने पर अल्लाह जल्लाशानुहू हमे माल देगें

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हिदायत किसका नाम है ? जो चीजे माल से मिलती दिखायी देती है, वो सारी की सारी चीजें आमाल से मिलती दिखलायी देने लगें इसका नाम हिदायत है। मेहनत का मैदान अभी हमने माल को बना रखा है हिदायत को नही, हिदायत को तो हमने चिड़िया का बच्चा समझ रखा है। जब हम हिदायत वाली मेहनत करेगें तब हिदायत मिलेगी, हिदायत के मिलने पर अल्लाह जल्लाशानुहू हमे माल देगें, अल्लाह जल्लाशानुहू हमे चीजें देगें और इसी मेहनत पर कामयाबी देगें। कुरआन हिदायत है, यह हिदायत की किताब है इसके अन्दर जो बतलाया गया है अगर वो तुम्हारे दिल मे आ गया तो समझो हिदायत मिल गयी और अगर नही आया तो नही मिली। कुरआन मे अव्वल तो अकवाल के जरिये सब कुछ आमाल से मिलना बतलाया है, अकवाल के जरिये ये बतलाया कि माल से चीजें नही मिलती, चीजों से हिफाजत नही होती, चीजों से इज्जत नही मिलती, अल्लाह जल्लाशानुहू ही जिन्दगी बनाते है और वही बिगाड़ते हैं, हिफाजत वही करते है और वही मुतमइन करते हैं। अल्लाह जल्लाशानुहू ने अपने अकवाल के अन्दर पूरी की पूरी कामयाबियॉ जो चीजों मे नजर आतीं है वो अमल मे बतला रखी है, पूरे कुरआन के अन्दर अव्वल से आखिर तक जिन्दगियों का बनाना और जिन्दगियों का बिगाड़ना, खुशखबरियॉ और धमकियॉ हैं। अक्सरियत थी पर अमल खराब थे तो जिन्दगी बिगाड़ दी, सनअत वाले थे पर अमल खराब थे तो सनअत वालो को खत्म कर दिया। इब्राहीम अलै0 और उनके साथियों के अमल अच्छे थे तो उनको कामयाब कर दिया।

73

कुरआन मे हिदायत है तो हमारी जिन्दगी कैसे बन जाये ?

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! एक मेहनत माल की है और एक मेहनत हिदायत की है, जहॉ दो का मुकाबला पड जाये वहां हिदायत वाली मेहनत कर ले, माल वाली मेहनत छोड़ दे। जो बात कुरआन मे है वो बात हमारे दिल मे आये जैसे, ताकत इन्जेकशन मे है तो इन्सान ताकतवर कैसे होगा ? कि इन्सान ताकतवर तब होगा जब इन्जेकशन की तकलीफ उठा कर इन्जेकशन की दवा अपने अन्दर ले ले, अब अगर ये चारपाई पर पडा-पडा कहता रहे कि हमारे पास 1 हजार इन्जेकशन है तो इतना कहने से इसके अन्दर ताकत नही आयेगी। कुरआन मे हिदायत है तो हमारी जिन्दगी कैसे बन जाये ? हमारी जिन्दगी जब बनेगी जब हिदायत हमारे अन्दर आ जाये। इन्जेकशन लगने की तकलीफ से हम अलग हट जाये तो दवाई अन्दर न जायेगी, इसी तरह हिदायत की मेहनत से तकलीफ हो ओर हम भाग जाये तो हिदायत न मिलेगी।

74

चीजों से कुछ नही होता

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हिदायत वो रोशनी है जिस रोशनी मे हर चीज साफ-साफ दिखायी देती कि नमाज से, सच से, जिक्र से यूॅ कामयाबी मिल जायेगी, इन्साफ से, दुआ मॉगने से यूॅ हो जायेगा, ये सब कुछ हिदायत की रोशनी से दिखायी देगा। तवक्कुल पर-तक्वा पर-हक पर-हक की हिमायत करने पर ये होगा, पैसे से कुछ नही होता, वजारत से कुछ नही होगा। वो दिखायी दे जो कुरआन दिखा रहा है इसके लिये कुरआन की रोशनी आपके दिल मे हो, आपको साफ- साफ दिखायी देता हो कि चीजों से कुछ नही होता अगर ये बात आ गयी तो समझो दिल मे हिदायत की रोशनी आ गयी।

75

नबियों की मेहनत का नूर दावत है

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हिदायत की मेहनत क्या है ? हिदायत की मेहनत के लिये मस्जिदे बनवाई और अम्बिया वाली सारी बरकात, अनवारात, और मददे उन अमलों पर है जो हिदायत के लिये दिये गये हैं। हमारे जितने तबकात है, मजदूरी, मुलाजमत, हुकूमत के इन सबके लिये पहली मेहनत यही है और ये सारी लाइनों में चलने की घुट्टी है अगर यह घुट्टी नही पी तो माल वाली मेहनत को मुकददम कर देगा और हिदायत वाली मेहनत को मुअख्खर कर देगा, वह अमल जिनकी मेहनत करने से अल्लाह पाक आंखों की रोशनी अता फरमायेगें और आंख जो चीजें मे देखती हैं अब इसे वो अमलों में दिखलायी देगा।

सारे नबियों की मेहनत का नूर दावत है यह सारे नबियों की मुस्तरका मेहनत है सबसे पहले अल्लाह ने दावत दी

إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي

अल्लाह ने दावत दी मूसा अलै0 को फिर यही दावत मूसा अलै0 ने फिरऔन का जाकर बताया। अल्लाह ने मूसा अलै0 को सबसे पहले लकड़ी से अजदहा और अजदहा से लकड़ी बनाकर दिखा दिया बाद मे उसी लकड़ी से पत्थर से बारह चस्में निकाल दिये और उसी लकड़ी से समन्दर मे 12 रास्ते बना दिये।

76

आंख पर कस्टम नही लगता

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन्सान चीजों के बनाने में चाहे जितनी मेहनत करे, उतनी चीजे नही बना सकता जितने अमल बना सकता है अगर अमल बनाने पर आ जाये तो चीज उतनी नही बना सकता, चीजें मुस्तिकल नही होती अमल मुस्तकिल हो सकता है।

आप अगर किसी दूसरे मुल्क जाओ तो आंख पर कस्टम नही लगता पर चीजों में बहुत सा हिस्सा वो है जो आप दूसरे मुल्क नही ले जा सकते। मकान नही ले जा सकते, कारखाना नही ले जा सकते, बाग नही ले जा सकते कुछ रूपये ले जा सकते है बाकी नही ले जा सकते। आप अगर अपने अमलों को ले जाना चाहे तो पूरे के पूरे बिला कस्टम हर मुल्क के अन्दर ले जा सकते हैं। इन्सान अमल के जरिये कामयाब बनना सीख जाये तो जहां जाये मजे की जिंदगी गुजारेगा, शहरों मे होगा, जंगल मे होगा, जहॉ होगा कामयाब होगा, कब्र में, बरजख में, महशर में, कामयाब होगा। जुबान लेकर जा रहा है तो जुबान की गालियां भी और जिक्र भी ले जायेगा, अमल को जितना बना सकता है उतना किसी और चीज को नही बना सकता और अमल को लेकर जितना फिर सकता है उतना किसी और चीज को लेकर नही फिर सकता है।

77

कायनात चीजों की मशीन है

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! चीजों का होना भी तकरीबे अमल है और चीजों का न होना भी तकरीबे अमल है, अमल बन गया तो कामयाबी मिल जायेगी। कायनात चीजों की मशीन है आर इसका मौजू चीजों का बनना है इसी तरह इन्सान अमल की मशीन है और इसका मौजू अमल का बनना है। देखने में यह नजर आता है कि ये छोटी मशीन (इन्सान) बड़ी मशीन (कायनात) के ताबे है लेकिन हकीकत में ये बड़ी मशीन (कायनात) इस छोटी मशीन (इन्सान) के ताबे है अगर छाटी मशीन (इन्सान) के अमल बेहतर हो जायेगे तो आलम के अन्दर चीजों का वजूद भी बढ़ेगा, हिफाजत, ताकत, सेहत और तकसीम भी बढ़ जायेगी अगर अमल खराब हो जाये तो चीजे घटनी शुरू हो जायेगी, जलजला आया, सैलाब आया यानी हिफाजत वाली चीजों में से हिफाजत निकाल ली जाती है, सेहत वाली चीजों में से सेहत कम कर दी जाती है, अमल बिल्कुल खराब हो जाये तो सेहत की चीजों में से सेहत खत्म कर दी जाती है।

78

इन्सानी मशीन की चीज अमल हैं

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अम्बिया तश्रीफ लाये और बतलाया कि अमल पर क्या होता है कि अमल की खराबी पर जिंदगी बिगड़ती है और अमल के सहो होने पर जिंदगियां बनती है। चीजो की मशीन से जो कुछ बनकर तैयार हुआ वह चीजें हाथ में है और इन्सानी मशीन से जो चीजें तैयार हुई वह खराब तो खुदा अब जिंदगी को बिगाड़ कर दिखलाएगे। एक तरफ काएनाती मशीन के नक्शे हाथ में है और दूसरी तरफ इन्सानी मशीन की चीज अमल तो जिनके अमल अच्छे है उनको कामयाब करके दिखाया और जिनके अमल खराब थे उनकी जिंदगी को बिगाड़ा। इसी बुनियाद को सारी दुनिया में चलाने के लिये बएक वक्त मुहम्मद सल्ल0 को तमाम जुबानो, तमाम मुल्कों, तमाम कच्चे और पक्के मकानों, कवी और कमजोर के लिये नबी बनाकर भेज दिया। अब अगर इस दुनिया में कामयाबी, इन्साफ, रहम, अखलाक मुहब्बत की हकीकत, खून की हिफाजत के मुबारक दिन को देखना चाहते हो कि सैलाब न आये, लहलहाते बागात को देखना

चाहते हो कि पैदावार हजारों गुनी बढ़ जाये तो अमल पर मेहनत का मैदान कायम करो, अम्बिया ने कभी चीजों पर मेहनत नही की बल्कि अमल पर चीजें दिलवाकर दिखलाई।

79

अमल से मुल्क लेकर दिखलाया

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हजरत सुलेमान अलै0 ने अमल से मुल्क लेकर दिखलाया छोटी से हुकुमत में लम्बा चौड़ा खर्चा करके अजीब किस्म के घोड़े मंगवाये, उनके देखने में मस्त हुए और नमाज का ख्याल न रहा तो नमाज कजा, हजरत सुलेमान अलै0 खिलवत में जाकर रोये कि अमल मालिक की मंशा के खिलाफ हो गया तो खुदा ने सुलेमान अलै0 का कुसूर माफ कर दिया कि अब मांगों क्या मांगते हो तो कहा !

"ऐ खुदा ऐसा मुल्क मांगता हूं जो मुझ से पहले न बाद किसी को मिले"

ऐ मुल्क परस्तों और मुल्क के दीवानों, देख लो अगर अमल करके मुल्क मांगें तो मुल्क यूं मिलता है।

80

कुछ तुम देख रहे हो यह बहुत छोटा है

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इंसानियत की मेहनतों के रूख को मोड़ने के लिये हूजूर सल्ल0 की दुनिया में तशरीफ आवरी हुई, आप सारी दुनिया के इंसानों को हिदायत के अमल की तरफ मोड़ने के लिये तशरीफ लाये और इसी के लिये मस्जिदे बनायी गयी, यह मस्जिदे यकीन बदलने के, इल्म के और खुदा के ध्यान वाली नमाजों के अमल के लिये बनी थी। दुनियॉ में जितने किस्म के आदमी बसते है सबके लिये एक आवाज अल्लाहु अकबर यानी जो कुछ तुम देख रहे हो यह बहुत छोटा है, इससे किसी दरजे में भी कुछ नही होता जा बड़ा है उसे सब कुछ होता ओर वो अपनी जात से करता है। पानी से नही होता बल्कि उस खुदा की कुदरत से होता है जिस खुदा की कुदरत से पानी बना है, जहां से तुम होना देखते हो, होने का ताल्लुक वहां से नही है बल्कि होने का ताल्लुक कुदरत से है। सिफात का सिफात स ताल्लुक है, पैदा करना सिफत है, पैदा करने का ताल्लुक अल्लाह की कुदरत से है, पैदा करने की सिफत चीजों से नही है, पैदा करने की सिफत कुदरत से है। छोटे से कुछ नही होता बड़ा करता है, वह अपनी कुदरत की सिफत से बीमार करता है और अपनी कुदरत की सिफत से सेहत देता है। अपनी कुदरत से चाहे आग में जलाये या अपनी कुदरत से चाहे आग को गुलजार बना दे। तिजारते, मिल, वजारते, ऐंटम, राकेट, बहुत छोटे हैं, अल्लाह बहुत बड़े है। जो छोटा है उससे होता ही नही जो बड़ा है उससे होगा "अल्लाहु अहद" और तो और सब उसके मोहताज है पर उसको किसी की जरूरत नही है, अब जो बड़ा है और करता है उसकी तहकीक करो।

81

नमाज खुद दूसरे अमलों पर मौकूफ है

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मुहम्मद सल्ल0 का मौजू यह नही था कि सोने चॉदी को बतलाये बल्कि सोना-चॉदी-हीरे-मोती से कुछ नहा होता, तुझे जो इन चीजों मे नजर आ रहा है, यह तेरे देखने का नुक्स है, इसी नुक्स को दूर करने के लिये मुहम्मद सल्ल0 को भेजा। आज इस जमाने में शोर शराबा ज्यादा हो गया तो अल्लाह ने अमल ठीक करने के लिये लाउडिस्पीकर लगवा दिये, कान में आवाज पहुंचा दी कि नक्शो को छोडकर आ जाये, अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर की आवाज लगवा दी। अब अमल ठीक कैसे होगें ? क्यों कि नमाज खुद दूसरे अमलों पर मौकूफ है अगर दूसरे अमलों को किये बगैर नमाज पढ़ी जायेगी तो नमाज का तसव्वुर कायम होगा हकीकत न आयेगी। आप सारी तारीख से आंख बन्द करके यूं कहे कि खाली नमाज से क्या होता है ? तो मै भी यह कहता हूं कि ईमान के सीखे बगैर खाली नमाज से क्या होगा। मुहम्मद सल्ल0 ने नमाज से पहले जो अमल बतलाये हैं वह अमल करो, लोग कहते हैं कि काम कराने के लिये वजीर का ताअल्लुक चाहिए तो वजीर का ताल्लुक ओर नमाज का क्या जोड़। पाखाना और फूल को मिला दिया फूल की हैसियत खत्म हो गयी, जहां वजीर से नमाज का जोड़ा बिठाया बस नमाज की जान निकल गयी, जब पैसा और नमाज

मिला दी तो नमाज की जान निकल गयी। नमाज के लिये तीन मेहनते पहले हैं और तीन मेहनते हैं बाद में पहली तीन मेहनते, 1 यकीन बदलने की 2 इल्म की 3 ध्यान की।

82

इन्सान के जिस्म पर जो कुछ होगा वह रूह के ताअल्लुक से होगा

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जिस तरह जिस्म के एक-एक हिस्से में रूह शरायत किये हुए है उसी तरह जमीन, आसमान और उसके अन्दर के नक्शों मे अल्लाह की माशियत और उसके इरादे शरायत किये हुए है, जिस तरह इन्सान के जिस्म पर जो कुछ होगा वह रूह के ताअल्लुक से होगा अगर स्याह बाल बन रहा है तो रूह के ताल्लुक से और अगर खाल में कोई बात है तो वह भी रूह के ताल्लुक से और इन्सान का बढ़ना इसका नशो नुमा, जिस तरह रूह से ताल्लुक रखता है इसी तरह सातों आसमान व जमीन में जितने नक्शे है चाहे वह सियासी हो या हुकुमती उनमें अल्लाह की माशियत और इरादे फैले हुए हैं, उनसे वह होगा जो अल्लाह चाहेगें। जिसकी जिंदगी को बनाना चाहेगें बना देगें और जिसको बिगाड़ना चाहेगें बिगाड़ देगें, لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ जो वह चाहेगें वह होगा और अगर यह सब न हो तब भी जो अल्लाह चाहेगें वह होगा अगर एक शख्स के पास इज्जत व हिफाजत की कोई शक्ल नही है सिर्फ शक्ल इंसानी है, उस पर भी अल्लाह की माशियत फैली हुयी है, चाहेगें इज्जत देगें, चाहेगें महबूब बना देगें, इस एक शक्ल पर अल्लाह जो चाहेगें वह होगा।

83

जब आदमी अपनी अक्ल पर आता है बस वहीं मार खाता है

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन्सानों को अपने मसलों के हल का धोका लगता है कि यह मसला हल हो गया कि बीमारी आयी इसने दवा खायो और बीमारी दूर हो गयी, भूख आयी इसने खाना खाया भूख दूर हो गयी, ये मसले का हल नही है इसलिये कि बीमारी फिर आयेगी, भूख फिर आयेगी सारा मुल्क भी हाथ में हो तो भी ये मसाएल के हल का धोखा है कि यह कामयाबी नही नाकामी है। हुकूमत की शक्ले हाथ म नही मगर अल्लाह ने सेहत व आफियत से नवाज दिया तो यूं कहा जायेगा कि यह कामयाब है मगर कामयाबी खाली मुल्क व माल की शक्लें हासिल करने से नही होती बल्कि कामयाबी अल्लाह के हाथों में है यही हक तआला शानुहु ने हमें दिखलाया है।

हजरत आदम अलै0 के पास कोई शक्ल नही खाली अपना वजूद पर अल्लाह ने चाहा तो हजरत हव्वा अलै0 को बना दिया, जन्नत को बना दिया और जब हक तआला शानुहु ने चाहा तो दोनो को बिगाड़ दिया। जब आदमी अपनी अक्ल पर आता है बस वहीं मार खाता है कि दोनो जन्नत मे मजे कर रहे थे, ये अब्दी और आरजी दाखिला था। एक दरख्त से रोक दिया कि उसे मत खाओ, शैतान फिर रहा था कि मुझे तो खलीफा बनाया नही हांलाकि मै तो इबादत गुजार था किसी फरिश्ते का सज्दे करने को कहा होता तब पर भी ठीक था मगर यह आदम मिटटी से बने और बगैर इबादत किये हुए, उनको सज्दा।

84

शैतान हमेशा उल्टी पुल्टी पढ़ायेगा

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अल्लाह तआला ने हजरत आदम अलै0 का बहुत तज्किरा किया है कि हम तो तुम्हारे पालने वाले है मगर शैतान हमेशा उल्टी पुल्टी पढ़ायेगा इसलिये देख लो तुम्हारे अब्बाजी के साथ ऐसा किया। जिस तरह हजरत आदम और हव्वा की जिंदगी सिर्फ एक हुक्म के तोड़ने से मुसीबतों मे आयी उसी तरह जब कोई इन्सान अल्लाह तआला का हुक्म तोड़ेगा तो फिर उस पर मुसीबतें आती है जैसे हव्वा और आदम के ऊपर आयी कि जन्नत के कपड़े उतारकर एक को मश्रिक में नंगा डाला और एक को मगिरब में और कहा कि जाओ जन्नत से महरूम। दुनियॉ में डाल दिया गया 40 साल दोनो मियां बीवी को गुजरे यानी सालों का चिल्ला एक हुक्म तोड़ने पर, न कपड़ा, न खाना कुछ नही रात दिन रोते फिरते कि अल्लाह का हुक्म टूट गया। 40 साल तक हजामत नाखून और कंघी करने का वक्त न आया, जब 40 साल तक रोते रहे तो अल्लाह को रहम आया और उनका रूख बैतुल्लाह की तरफ कर दिया जहां लोग हज को जाते है। बाल खूब बढ़े हुए दोनों ने एक दूसरे को न पहचाना बस दोनो एक दूसरे की हरकत देख रहे थे, यहां तक कि दोनो अरफात के मैदान में दाखिल हो गये। करीब हुए तो दोनो ने एक दूसरे को पहचाना लिया अब दोनो एक दूसरे को लिपट कर रोये दोनो ने हाथ

उठाकर अराफात के मैदान मे दुआ की कि ऐ हमारे रब अगर आपने मग्फिरत न फरमायी और हमसे राजी न हुए तो हम टोटे वालों में होगें। अल्लाह ने कहा जाओ मगर अब हमारा हुक्म न तोड़ियों चाहे तुम्हारा खाना जाये, जमीन जाये, मगर हुक्म हाथ से न जाये।

85

दोनो रास्ते एक दूसरे के मुकाबले पर हैं

13 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अम्बिया अलै0 के जरिये दुनियॉ मे दुआ वाला रास्ता चलाया गया जो खुदा को पसंद है, खुदा ने इस रास्ते पर चलने वालों की जिंदगी को बनाने और कामयाब करने का फैसला कर रखा है और एक रास्ता माल वाला है इस रास्ते पर चलने वालों की खुदा ने जिंदगी को बिगाड़ने और नाकाम करने का फैसला कर रखा है। इस तरह ये दो रास्ते हुए एक माल का रास्ता और एक दुआ का रास्ता और दोनो रास्ते एक दूसरे के मुकाबले पर हैं।

माल का रास्ता

मेहनत करके माल हासिल करे,
माल से अपने घर में सामान भरे,
और सामान से जिंदगी बनने का यकीन करे,
हालॉकि खुदा के यहॉ सातों जमीन व आसमान और इनके दरम्यान के सामान की कोई कीमत नही, अल्लाह ने जिसको बेकीमत कहा है उसका बेकीमत होना तुम्हारे दिल में बैठ जाये।

दुआ का रास्ता

कीमती क्या है ? कि अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल0 के आमाल को कीमती बतलाया हैं उनमें से एक-एक अमल पर इस सारी दुनिया से ज्यादा इनामात मिलेगें इसलिये यह यकीन सीखो कि यह अमल कीमती हैं। यकीन सीखने के लिये तुम दुआ के रास्ते पर मेहनत करो, दुआ के रास्ते की मेहनत ये है कि तुम चीजों व माल को अमल पर कुर्बान करते हुए इन अमलों को खुदा के सामने पेश करके दुआ करो। आज एक बोरी गेहूँ कुरबान करके मिटटी में मिलाते हो तो एक बोरी की सैकड़ो बोरियां बन जाती है यह नमूना है अगर तुम चीजों को अमलों पर कुरबान करने वाले बन गये तो दुआ से काम बनाने वाले हो जाओगें मगर तुमने अमलों को चीजों पर कुरबान किया है कि यह खेती भी बेकीमती है यह गेहूं भी बेकीमती है, बेकोमत को बेकीमत के लिये कुर्बान किया इसलिए खुदा ने तुमको बेकीमत कर दिया। कल को घर में आग लग गयी, खून के मुकदमा में नाम आ गया तो अब दुआ मांगोगे पर तुम ने चीजों पर अमलों को कुरबान किया है, दुआ के लिये तुमने क्या किया है ? हॉ अगर तुम चीजों को अमल के लिये कुरबान करते तो दुआ कुबूल होती।

86

चीजें अमल बनाने के लिये मिली है

13 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मुहम्मद सल्ल0 के अमल हासिल करने के लिये पैसे को सच्चाई पर, अमानत पर, इन्साफ पर, दयानत पर कुरबान करो, ये है चीजों का अमल पर कुरबान करना। जब तुम्हारी निंगाह में पाखाने की कीमत नही है तो पाखाने को बदन पर मलने वाला कैसे कीमती हो जायेगा, जिसने दुनिया समेटी वह तो खुद ब खुद बेकीमत बन जायेगा। आज हमने कीमती चीज को निसार करके बेकीमत को अपने चारों तरफ लपेट लिया तो हमारी हैसियत गिर गयी। अल्लाह कहते है कि मुझे रब मानकर मेरी इबादत करो तो चीजों को अमल पर कुर्बान करना सीखो, चीजें चीजें बनाने के लिये नही मिली हैं बल्कि चीजें अमल बनाने के लिये मिली है। सारे नबियों ने अपने-अपने जमाने में अपनी-अपनी उम्मत से कहा कि इस दुनिया की कीमत एक मच्छर के पर के बराबर नही अगर खुदा के यहॉ दुनिया की कीमत एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो काफिर को एक घूट पानी न मिलता।

87

कश्ती भंवर में फंसी है

13 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! यह चीजे जिनको तुम जानते हो इन पर मेहनत करते-करते इनकी वकाअत, इनकी हैसियत दिल में बैठ गयी है, इसकी वकाअत हमारे दिल से निकल कर मुहम्मद सल्ल0 वाले अमलों की हैसियत दिल में आ जाये। आज हमारी कश्ती भंवर में फंसी है अगर अल्लाह थोड़ा सा नाराजगी का इजहार कर दे तो सारी दुनिया हलाक हो जाये क्यों कि दुनियॉ मे तखरीब का माददा और तखरीब के हालात बहुत तैयार हो गये हैं, अब मसला लोहे पीतल और सोने से आगे निकल गया है।

88

ईमान को सीखने की मेहनत करो

13 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! तुम दावत के जरिये ईमान को सीखने की मेहनत करो, बैठकर सोचने के जरिये ईमान की मेहनत करो, तालीम और अल्लाह के जिक्र में रहते हुए नमाजों मे खुदा का ध्यान लाने की मश्क करो, इन सारे कामों को करते हुए तवाजो की मश्क करो, ये करने के काम है। दुनिया समेट कर कोई बड़ा नही बनता इससे जो बड़ा बनने की कोशिश करता अल्लाह उसे छोटा बनाते है और जो छोटा बनने की कोशिश करता है अल्लाह उसे बड़ा बनाते है ये अल्लाह का जाब्ता है पर हम उल्टी ही चाल चलते हैं। जो खादिम बनता है अल्लाह उसे मखदमू बनाते है जो मखदूम बनना चाहता है अल्लाह उसे खादिम बनाते हैं, एक मकान पर जान लगायी थी उसकी वुकअत है दिल में, एक बकरी पर जान लगायी उसकी वुकअत है दिल मे, ईमान के लिये जान नही लगायी तो उसकी वुकअत नही है।

89

खुदा किसी के लिए कब क्या चाहते हैं ?

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! तुम्हारे पास शक्लें चाहे हो या न हो या दोस्त के पास हो या दुश्मन के पास हो, इन शक्लों से वह होगा जो अल्लाह की चाह होगी। शक्लों से न इज्जत होगी न जिल्लत होगी, अल्लाह के चाहने से हिफाजत होगी, अल्लाह के चाहने से खून बहेगा, शक्लों की अहमियत खत्म हो गयी, अब इस बात पर गौर करना पड़ेगा कि अल्लाह रब्बुल इज्जत क्या चाहते हैं ? तिजारत की शक्ले चाहे औरों के पास चली जाये कोई परवाह नही। जिस तरह पूरे मुल्क ने जो चाहा वह नही हुआ, इसी तरह मुल्क के अन्दर की शक्लों सें जो तुम चाहोगे वह न होगा और खून के आंसू रोना पड़ेगा, गर्वनर को अपनी गर्वनरी में, ताजिरों को तिजारत में, जिन लोगों को ये समझने की खुदा तौफीक दे दे कि़ अल्लाह के चाहने के जाब्ते क्या हैं ? खुदा किसी के लिए कब क्या चाहते हैं ? खुदा किसी के लिये इज्जत कब चाहते हैं ? खुदा किसी के लिये तंगी कब चाहते हैं ?

शक्ले चाहे जैसी हो शक्लों के अन्दर जिन्दगियों मे जो कामयाबियां नाकामियॉ आयेगी वह अल्लाह की चाह पर आयेगी और अल्लाह की चाह का फैसला उस शक्ल के अन्दर आदमी के अमलों पर होगा। सारे कुरआन पाक में अल्लाह ने अपनी चाह के जाब्ते खूब तफसील से एक-एक जुज पर बताये है वजूद तो वह होगा जो अल्लाह चाहेगें अगर तम्हारे अन्दर मुहम्मद सल्ल0 के उसूलों से हटकर अमल आयेगें तो नाकामी आयेगी और अगर तुम्हारे अन्दर मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल आयेगें तो अल्लाह कामयामी चाहेगें।

90

जलजला आता है तो हर शक्ल में घुसता है

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हाकिम और महकूम, माल वाले और गरीब, बड़े बागों वाले और छोटे-छोटे काश्त वाले ये सारी शक्ले बराबर है। शक्लों में रहने वाले जितने इंसान है ये सारे एक शक्ल के अंदर खड़े हुए है, शक्लों से या शक्लों मे उनकी अपनी चाह से कामयाबी नही होगी, जब जलजला आता है तो हर शक्ल में घुसता है, ठंडी हवाएं आती है तो हर शक्ल में घुसती है, अल्लाह की तरफ से जब कामयाबियां या नाकामियां आयेगीं वह हर शक्ल में घुस जायेगी। तिजारत करते हो तो अल्लाह ने तिजारत मे जो अमल बतलाये हैं उन अमल के पाबंद बनोगे अल्लाह तुम्हारी कामयाबी चाहेगें, इनको तोड़ कर चलोगें तो अल्लाह नाकामी चाहेगें। अल्लाह ने शक्ल मे अमल की पाबंदी लगायी है तुम किसी भी शक्ल की तरफ चलों उस शक्ल में इस बुनियाद पर चलों कि मेरे अमल ऐसे हों कि अल्लाह मेरी मुवाफिकत पर आ जायें।

91

बन्दे को हमेशा बन्दगी की लाईन दी जाती है

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मस्जिदे अमलों की मेहनत के लिये बनाई गयी है, मस्जिदों में आओ बाहर जो तुम्हे दिखाई दे रहा है वह धोखा है अगर हकीकत को मालूम करना चाहते हो तो गैबे खुदा को इत्मिनान से पहचानो, अमलों को मालूम करो, कुदरत को, माशियत को, खजानों को, कवाएद व जवाबित को पहचानो। मालूम करो कि वह कौन से अमल है जिन पर अल्लाह तुम्हारे खून बहने को चाहेगा और वह अमल कौन से है जिन पर तुम्हारे खून की हिफाजत चाहेगें। इंसानों के कानों में आवाजे पहुंचायी गयी कि कामयाबो का ताल्लुक उसके अमल से है, हर शक्ल वाले को मस्जिदो में बुलाया। अब यही वक्त है अगर लाखों करोड़ों कामयाब बनना चाहते हो तो मस्जिद में आओ, सब बन्दे है बन्दे को हमेशा बन्दगी की लाईन दी जाती है। जो बन्दा है बन्दगी मे जितना बढ़ेगा उसके लिये बंदगी के जवाबित और सख्त होते चले जायेगें, बंदगी के मुकाम में सबसे आगे मुहम्मद सल्ल0 हैं।

92

कमाने के अहकामात सबसे छोटे हैं

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! लोग तंगी से, बीमारियों से, सैलाब और तूफान से परेशान है पर माल के कमाने मे घुसे हुए है हालॉकि कमाने के अहकामात सबसे छोटे हैं क्यों कि ये अहकामात अफराद से ताल्लुक रखते है पर दावत के, तालीम के, तरबियत के, गुरबा परवरी के, एखलाक के अहकामात मजमुआ से ताल्लुक रखते है, जब इन अहकामात की तामील होगी तो अल्लाह सबके लिये इज्जत और गिना को चाहेगें आर अगर ये अहकामात छ्टे तो सबके लिये जिल्लत और फक्र चाहेगें। जब ये अहकामात बडे हैं तो इन अहकामात के लिये शक्लों को छोड़ो, अल्लाह तुम्हारे लिये कामयाबियॉ चाहेगें।

93

मस्जिद का मुकाबला बाजार की शक्लों से है

3 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मस्जिद का मुकाबला बाजार की शक्लों से है, हर आदमी के घर से और हर आदमी के कमाई के शोबों से मस्जिद का मुकाबला है, जो आदमी अपनी कमाई मे और अपनी घरेलू शक्लों मे अपनी मर्जी वाले अमलों को शिकस्त दे दे अल्लाह उसकी कामयाबी चाह लेगें। जो बाहर की शक्लों को असल समझेगा अल्लाह उसके खिलाफ चाह लेगें, असल शक्लों का वजूद नही है असल अल्लाह का वजूद है, मेरी बात टूटे तो टूट जाये, मेरी ख्वाहिश टूटे तो टूट जाये पर अल्लाह की बात ना टूटे। जो मस्जिद को इस तरह गल्बा दे दे अल्लाह उसकी मुवाफिकत चाह लेगें अगर कोइ आदमी ये चाहे कि दुनियॉ व आखिरत के सारे मसायल मे अल्लाह की मशियत मेरे मुवाफिक हो जाये तो वो अल्लाह के हुक्म पर हर-हर शक्ल को छोड़ कर दिखलाये, अल्लाह की मशियत मुवाफिक हो जायेगी। शक्ल की जड़ तक दिल से निकाल फेको फिर अल्लाह आसमानों तक ऊँचा उठायगें, न शक्ल को खत्म करो ना शक्ल परस्त बनो बस शक्लों मे रह कर सही यकीन और अमल बनाओ और शक्लों के बाहर के हर हुक्म पर शक्लों को छोड़ दो, इस मेहनत से हम ऐसा बनाना चाहते है। जब आदमी ऐसा बन जाये तो अल्लाह अपनी कुदरत जाहिर करते हैं, दुश्मनो को भी बदल देते हैं या हलाक करते हैं या हिदायत देते हैं। बड़ी-बड़ी नामुनासिब शक्लों पर अल्लाह कामयाब कर देते हैं, इस काम का निसाब तो मश्क का है जब मश्क हो जाये तो कोई निसाब नही।

94

अल्लाह की बड़ाई बयान करने के वास्ते दूसरों की छोटाई बयान करनी पड़ेगी

4 माहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मुसलमानों को पहला हुक्म दिया गया ‘‘वरब्बुका फकब्बिर’’ का कि अल्लाह की बड़ाई बयान करो और अल्लाह से फायदे हासिल करने के लिये अमल को पाकीजा करो। हुजूर सल्ल0 ने अल्लाह की बड़ाई बयान करने के वास्ते इस हुक्म की तामील मे दूसरों की छोटाई बयान करनी शुरू कर दी, इसलिये कि अल्लाह की बड़ाई उस वक्त तक दिल मे कायम नही होगी जब तक मासिवा की बड़ाई दिलों से न टूटे कि हुकूमतों की, बागात की,

कारखानों की बड़ाई दिल से निकालो। अकेले अल्लाह ही बड़े हैं सारे इंसान मिलकर अल्लाह की जात के मुकाबले में बहुत छोटे हैं, चीटी शेर से छोटी हैं, पत्थर तो हिमालय से बहुत छोटा है अगर इसी तरह बड़ाइयां छोटाइयां कायम करो तो यहां पहुंचोगें कि जिबाईल का कद सबसे बड़ा है 14 हजार साल की मसाफत के बराबर है, सातों जमीन से लेकर अर्श इलाही तक हर खला की मसाफत पांच सौ बरस है पर अल्लाह के मुकाबले में जिब्रील बहुत छोटे। जिब्राईल को जब अल्लाह की अजमत और बड़ाई का ख्याल आता है तो सिकुड़ते-सिकुड़ते छोटी चिड़िया की तरह रह जाते है, अल्लाह के सामने इतने भी नही जितना जर्रा, ये मिसाल तो तुम्हारे समझाने के लिये है कि अल्लाह बहुत बड़े हैं। इस्राफील बहुत छोटे हैं, वो मलकुलमौत जो जिब्राईल की भी जान निकालेगा, इस्राफील की भी जान निकालेगा और मीकाईल की भी जान निकालेगा, खुदा पूछेगें अब कौन रह गया ? मलकुलमौत कहेगा कि मैं और आप। खुदा कहेगा तू भी मरजा तो वह भी मर जायगा, सातों जमीन व आसमान में जो सबसे बड़ी शक्ल बनती है वह इन फरिश्तों की बनती है। इसलिये जितना अल्लाह की बड़ाई बयान करोगें उतना तुमको मकान मिलेगे, दूध शराब की नहरे मिलेगी, जितना तुम्हारा वक्त अल्लाह की बड़ाई करने में लग जायेगा उतना ही तम्हारे अन्दर से बने हुए का खौफ दूर होगा।

95

दुकान बहुत छोटी है, मै बहुत छोटा हूं

4 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! रोटी कैसे मिलेगी ? दुश्मन पांव कब चूमेंगे ? जमीन कैसे मिलेगी ? इसके लिये कुरआन का पहला हुक्म अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि दुकान बहुत छोटी है, मै बहुत छोटा हूं, मेरी मेहनत से क्या होगा ? जब मै अल्लाह की बड़ाई बयान करूंगा अल्लाह मुझे ये सब देगा। ये भीख मांगने वाले आते हैं जहां जाते हैं जब लोग उसको बड़ा कहने पर दे देते हैं तो जो वाकई में बड़ा है जब उसको बड़ा कहा जायेगा तो कितना मिलेगा। जब छोटे को बड़ा कहन पर मिल जाता है अगर अल्लाह को बड़ा कहा तो ? सहाबा किराम रजि0 ने मक्का मे खड़े होकर अल्लाह की बड़ाई बयान करना शुरू की तो अल्लाह ने कैसर व किसरा को उनके कदमो के नीचे डाल दिया।

96

सारे नबी अल्लाह के मुकाबले में छाटे हैं

4 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हुजूर सल्ल0 जितनी बातों के ऐंतबार से नबियों में बड़े हैं इसी तरह अल्लाह जितना हमारे बड़े हैं उतने ही ऐतबार से मुहम्मद सल्ल0 के बड़े है। चीटी, मच्छर, शेर, पहाड़ आसमान एक दूसरे से बड़े छोटे हैं, अम्बिया की बड़ाई कि वो मखलूकात मे बड़े है लेकिन खुदा की जात के ऐतबार से उनकी कोई हैसियत नही। अम्बिया को मारने की ताकत नही, नबियों की बड़ाई इस तरह की नही कि वो खुदा की जात में कही आवे जैसे खुदा के मुकाबले में हम छोटे है सारे नबी इसी तरह अल्लाह के मकाबले में छोटे हैं। बाप किसी बेटे की बात सुनता है बहुत से बच्चे है खुदा के साथ में वैसी छोटाई का ताअल्लुक है ऐसे छोटे हैं कि जो अल्लाह से मांगते है दे देते हैं वह बड़े हैं,

हजरत ईसा अलै0 के बारे में ईसाईयों ने कहा यह इतने बड़े हैं कि खुदा की जिस से हो गये। नही भाई अल्लाह कादिर हैं, अल्लाह खाालिक है ईसा अलै0 मखलूक है। एक आदमी अपनी लड़की आग में डाल दे तो कहोगे बड़ा जालिम है मगर अल्लाह चाहे तो सारे नबियों को आग में डाल दे, सब अम्बिया भी खुदा की मिल्क है। कुरआन मे जो पहली बात हमे मिलेगो वह यही है कि अपनी परवरिश और हिफाजत के वास्ते अल्लाह की बड़ाई को लेकर दूर-दूर फिरो, सहाबा ने इसी को काम बना लिया था।

97

मखलूक उस हकीर वजूद का नाम है जिससे कुछ नही होता

4 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इंसान की शक्ल छोटी जिन्स है जो मनी के कतरे से बनी है पर कहा ये जा रहा है कि ये हमारी युनिवर्सिटी के बहुत बड़े आदमी हैं, ये पन्नों के बड़े कारखाने के मालिक है, बड़ा कहते-कहते लाखो करने वाले करार दे दिये गये पर करने वाला इनमें से एक भी नही। इनसे यह हो जायेगा, डिप्टी कमिश्नर साहब यह कर देगें, बने हुए से होने का जहन क्यों बना ? इसलिये कि इनकी बड़ाइ का जहन बन गया है, छोटा होने से मुराद है कि इससे कुछ

नही होगा। हजार और करोड़ का फर्क बताने को करोड़ बड़े है पर करोड़ हजार सारे मिलकर जिंस तो छोटी ही है। अमेरिका मखलूक रूस इंडिया मखलूक, पहाड़ मच्छर मखलूक। मखलूक है ही वह जिन्स जो छोटी है पर जो इसे बड़ा जाने वो पागल हैं। सारी दुनिया जब लफ्ज मख्लूक ही में है तो इंसान भी मखलूक ही हुआ पर बोला यह जाता है कि ये बहुत बड़ा आदमी है यह मुल्क में यूँ कर देगा, खुदा के यहां मखलूक उस हकीर वजूद का नाम है जिससे कुछ नही होता। इसलिये मखलूक की बड़ाई दिल में से निकालो, मेरी एक बेचारे की क्या बिसात, सारे इन्सान मिलकर बहुत छोटे है अल्लाह बड़े है। खुदावन्द कुददुस से लेने की सूरत यही है कि उसकी बड़ाई के बयान करने वाले बन जाओ यही तुम्हारा काम है।

98

सब अपने-अपने नक्शों में परेशान है

4 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इस जमाने में चीजों पर बहुत मेहनत हो रही है और बावजूद इंतिहाई तरह-तरह की चीजे बन जाने के इन्सानी हालात बेहतरीन नही है बदतर है और हालात की बदतरी यह है कि इंसान मे जितने किस्म के तबकात है बड़े और छोटे, हुकूमत के मालदारी के, सब अपने-अपने नक्शों में अपने को परेशान पा रहे है, अपने को उलझा हुआ देख रहे है और जो कुछ वह करना चाह रहे है उसमे नाकाम हो रहे है। वजह इसकी यह है कि इंसान का इस वक्त दुनिया में मेहनत का जो रूख है वह चीजों के बनाने की तरफ है और इसे ही वह अपना मकसद समझता है कि हमसे दुनियॉ में कुछ चीजे बन जाये। इंसान अपना मकसद इसके सिवा कुछ नही समझता कि उसकी दुनियॉ की मुहब्बत से दुनियॉ में कुछ चीजों का इजाफा हो जाये, इंसान के इसी नुक्ते ने बावजूद इंतिहाई चीजों की कसरत ने इसको परेशानी के अन्दर मुब्तिला कर दिया है।

99

अल्लाह ने इंसान को अमल की मशीन बनाया है

4 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अल्लाह ने इंसान को चीजों के लिये नही बनाया बल्कि अल्लाह ने चीजों के बनने के लिये आसमान व जमीन की मशीने तैयार की है। जितनी चीजे बनती है उसी मशीन से बनती हैं, अल्लाह ने इंसान को अमल की मशीन बनाया है और इसको बतलाया कि चीजें चाहे इसके पास ज्यादा हो या थोड़ी हो चीजों की शक्लों से इसकी बेहतरी या बदतरी नही होगी बल्कि बेहतरी या बदतरी इसक आमाल से होगी, ये इंसान के अमल की खराबी का एक दायरा है।

100

यह यकीन के मुड़ने की आखिरी जगह है

5 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जो यकीन मुश्रिकीन, यहूद और नसारा का है वही हमारा यकीन है यानी खेती से काम चलेगा और दुकान से काम चलेगा, फर्क सिर्फ इतना है उन्होने खुदा को न माना हमने खुदा को मान लिया, हमने नमाज पढ़ ली उन्होने नमाज नही पढ़ी, जिंदगी बनाने का यकीन सबका वहीं पर है। यह यकीन नही कि अल्लाह की बड़ाई को बोलो अल्लाह पालेगें, ईमान व अमल की मेहनत करो अल्लाह पालेगें, जिस अक्ल से वह बोले उसी अक्ल से हम बोले, जिस यकीन से वह बोले उसी यकीन से हम बोले, दोनों मे कोई फर्क नही। आज तुम अल्लाह के रास्ते मे यकीन बदलने जा रहे हो, यह यकीन के मुड़ने की आखिरी जगह है। खेती से, दुकान से, मुलाजमत से पैसे मिल गये, पैसों से चीजें मिल गयी, यह यकीन निकालना है। हम ईमान और अमल के लिये फिरेगें अल्लाह पालेगें, तालीम करेगें अल्लाह पालेगें, अल्लाह का जिक्र करेगें अल्लाह पालेंगें, अल्लाह से होना बोलेंगें अल्लाह पालेंगें, गश्त करेंगें अल्लाह पालेगें, दूसरों की खिदमत करेंगें अल्लाह पालेगें।

101

इन्सान की एक छोटी सी हद

5 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! दुनियॉ मे जितने भी इन्सान है चाहे हाकिम हो या महकूम, मालदार हो या गरीब, उलेमा इकराम हो या आवाम, मशाएख हो या मुरीदीन, ये सारे के सारे जो कुछ हों पर ये सब इन्सान ही हैं, ये

इन्सान होने से नही निकल सकते, न तो ये फरिश्ते हो सकते हैं और न शैतान बल्कि रहेगें ये इन्सान ही। एक इन्सान अगर साइंस मे बहुत ऊँचा मकाम हसिल कर ले पर ये रहेगा इन्सान ही तो बाएतबार इन्सान होने के इन्सान को इस दुनियॉ मे उसकी आखोँ से बहुत थोड़ा सा दिखायी देता है और जो कुछ इसे दिखायी देता है, उसमे से बहुत थोड़ा सा इसकी समझ मे आता है फिर जो इसकी समझ मे आता है, उसके एतंबार से ये अमली कदम उठाता है, ये इन्सान की एक छोटी सी हद है। जब ये इन्सान इस छोटी सी हद पर मेहनत के लिये कदम उठाता है तो अल्लाह रब्बुल इज्जत इससे कहते हैं कि तूने सही नही देखा इसलिये तू सही नही समझा लेकिन ये इसी पर कदम उठाये तो फिर अल्लाह रब्बुल इज्जत इसे नाकाम करते हैं, चाहे ये कदम हुकूमत और साइसं वाले उठायें चाहे जरआत और तिजारत वाले उठायें, अल्लाह रब्बुल इज्जत उन्हे भी नाकाम करते हैं।

102

मसला अल्लाह के हाथ मे है

15 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इल्म अल्लाह का है जिसको चाहे जितना दे दे, हद इन्सानी मे कामयाब होने के लिये जो भी कदम उठायेगा अल्लाह की हिकमत का ये तकाजा होगा कि उसको नाकाम करें। जितने अम्बिया अलै0 आये उन्होने हद इन्सानी से आगे बढ कर अल्लाह रब्बुल इज्जत ने उन्हे जो बतलाया, उसकी बुनियाद पर उन्होने मेहनत का मैदान कायम किया। अल्लाह रब्बुल इज्जत ने नबियों तक को ये जता दिया कि जो बोल तुम्हारी जुबान से निकल गया, ये सही नही है। मक्का वालो ने सोचा कि हुजूर सल्ल0 को किस तरह लाजवाब किया जाये कि अस्हाबे कहेफ का किस्सा बताओ ? हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! कल बताऊँगा, दिल मे ये नही था कि मैं खुद बताऊँगा बल्कि ये था कि अल्लाह बता देगें तो मैं उनको बता दूँगा पर इन्शाअल्लाह न कहा, अब वहय न आयी। अल्लाह ने इसी पर सूर कहफ नाजिल की कि आइन्दा यूँ मत कहो कि मैं बता दूँगा बल्कि जब कोई बात कहो तो इन्शाअल्लाह ज़रूर कहा करो, क्यों कि मसला अल्लाह के हाथ मे है।

103

आज बहुत कमाते हैं फिर भी रोते हैं

16 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जितने भी दुनियॉ मे इन्सान है सौ फीसद को अल्लाह ने जान दे रखी है और बहुत सों को माल भी दे रखा है पर माल किसी को कम दिया और किसी को ज्यादा दिया। अल्लाह ने इन्सान पर इस बात को मौकूफ कर दिया कि जो जान और माल को अल्लाह और अल्लाह के रसूल की बतलायी हुई जगह पर खर्च कर दे, अल्लाह लोगों के दिलो मे उनकी मोंहब्बत डाल देंगें, लोगों के कुलूब उसकी तरफ खिचेंगें। लगाने वाले की भी कामयाबी और जिन पर लगाया जायेगा उनकी भी कामयाबी, दुनिया की भी कामयाबी और आखिरत की भी कामयाबी। जो इन्सान जान और माल को वहां खर्च न करे जहां अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने बतलाया है तो उनकी जानों मे अदावते आयेंगी, इक्तसादियात की तंगी आ जायेगी और बरकत जाती रहेगी। कभी ऐसा होगा कि जानवर मर गये, पडोसी ने दावा कर दिया, दुकान मे आग लग गयी, आज बहुत कमाते हैं फिर भी रोते हैं कि हमारे पास कुछ भी नही है कि रूपये मे चौदह आने हुकूमत खींच लेती है। सहाबा किराम ने अपने आपको उस पर डाल दिया जहां अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने बतलाया कि जान और माल को यहां खर्च करो। सहाबा किराम ने अपनी ख्वाहिश के खिलाफ जान और माल को वहां खर्च करके दिखलाया जहां अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने बतलाया था तो आज तक उनकी मोहब्बतें बाकी हैं, आज भी दुनियॉ का अक्सर हिस्सा उनसे मोंहब्बत करता है।

104

ईमान और अमल के सिखलाने पर पैसा लेना हराम है

16 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! सहाबा किराम को खुदा माल इसलिये देते थे क्यों कि वो दूसरों पर लगाते थे और तुम अपने पर लगाते हों, वहॉ एक एक मौके पर एक एक आदमी ने दस दस हजार आदमियों का खर्च उठाया है। जैसे एक मौके पर हजरत उस्मान रजि0 ने छ सौ टन खजूरें दे दीं, किसी ने पूरा पूरा तो किसी ने आधा आधा माल दे दिया। कोई दिन ऐसा नही था कि मदीना मे सौ पचास आदमी न आते हों, रोजाना साद बिन उबादा रजि0 अस्सी आदमियों को अपनी मेहमानी मे ले जाया करते थे। दावत मे खर्च, तालीम मे खर्च, आने वालों को खिलाना, जाने वालों को हदिया देना, किसी

से अगर छडी भी ले ली ता आप सल्ल0 ने फरमाया ! कि तूने दोजख की आग ले ली कि ईमान और अमल के सिखलाने पर पैसा लेना हराम है अगर सहाबा जैसा अमला तैयार हो जाये तो खुदा दुनियॉ का माल समेट कर इनके कदमो मे डाल दें, इसीलिये सहाबा किराम के यहॉ नकदी तक्सीम करने का बहुत रिवाज था। उन्होने ये तय कर लिया था कि

जैसा हुजूर सल्ल0 का मकान है अपना भी वैसा ही रखना है,

जैसा हुजूर सल्ल0 का लिबास है अपना भी वैसा ही रखना है,

जैसा हुजूर सल्ल0 का खाना है वैसा ही खाना खाना है,

अब खर्च कहॉ करें ? ये कुरआन और हदीस से पूछ रहे है तो जहॉ खर्च करने को बताया जा रहा है, वहॉ खर्च कर रहे हैं।

105

इंसान का जिस्म कुदरत से बन रहा है

16 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया !इन्सानों के जितने भी हालात या मसाएल हैं उनका ताल्लुक इस जमीन व आसमान या उनके अन्दर की चीजों से नही है बल्कि हक तआला शानहु के एहकामात से है। हक तआला शानहु ने एक तरफ चीजों के बनाने का सिलसिला कायम फरमाया तो दूसरी तरफ इंसान भी उसी निजाम से बन रहा है। जिस तरह चीजो के बनने मे अल्लाह के अलावा किसी की शिरकत नही, न जमीन की शिरकत, न आसमान की शिरकत और ना ही किसी सामान की शिरकत बल्कि जो कुछ भी बन रहा है खुदा की कुदरत से बन रहा है चाहे जमीन मे बनाए या हवाओं मे बनाए। इसी तरह इंसान का जिस्म भी कुदरत से बन रहा है इंसान का जिस्म इंसानो से नही बन रहा है जिस तरह दरख्त कुदरत से बन रहें हैं बींज से नही बन रहे हैं और न उनके बनने मे इन्सानो की कोई शिरकत है, ये नही है कि इन्सान मेहनत करते हैं तो अल्लाह बनाते है बल्कि अल्लाह ही सब कुछ बनाते है। दूसरा सिलसिला हालात के बनने बिगड़ने का है,

कामयाबी व नाकामी, इज्जत व जिल्लत, खौफ व अमन, सेहत व बीमारी और फसाद व राहत के हालात अल्लाह पाक चीजों से नही बनाते, हालात खुदा के हुक्म पर चलने और ना चलने पर आते है। जब हालात हुक्मों से आते हैं तो बगैर चीजों के कामयाबियों के आ सकते है और चीजो मे नाकामियों के हालात आ सकते हैं।

106

अल्लाह की तरफ से इन जिस्मों मे हालात आते हैं

16 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन्सान के जिस्म मे अल्लाह के हुक्म से रूह दाखिल की जाती है अगर जिस्म से रूह बनती तो जब तक इन्सान का जिस्म बाकी रहता रूह भी बाकी रहती। इन्सान की रूह जिस्म मे उस वक्त तक बाकी रहती है जब तक अल्लाह चाहते हैं वरना फरिश्ते को भेज कर रूह निकला लेते हैं। मकान, जमीन और हुकूमत के नक्शे ये एक जिस्म है अल्लाह की तरफ से इन जिस्मों मे हालात आते हैं, इन जिस्मो मे कामयाबी के हालात लाने के लिये अल्लाह रब्बुल इज्जत ने हमारे हाथ मे अपने अहकामात दिये हैं। ये नही कि

हजार मन गल्ला हो तो ये हुक्म दे दो,

हजार रूपये की आमदनी हो तो ये हुक्म दे दो,

हजार इलाकों पर हुकूमत हो तो ये हुक्म दे दो,

चीजों के एतबार से अल्लाह पाक अहकामात नही देते, कुरआन पाक दुनियॉ भर के इन्सानों के हाथ मे देकर अहकामात अता फरमा कर जिन्दगी गुजारने के लिये एक इन्तिजाम किया। अल्लाह का ये बडा जबरदस्त इन्तिजाम है, सुबह से शाम तक इसमे ये देखते रहो कि कौन सा हुक्म पूरा किया और कौन सा हुक्म छोड़ दिया, हर एक के साथ मे दो फरिश्तें मुर्कर्रर कर दिये चाहे जितने दरवाजे बन्द करके बैठ जाओ ये दोनो फरिश्ते हर वक्त तुम्हारे साथ मौजूद हैं साये की तरह पीछे लगे हुए हैं। बैठे बैठे लिखते रहेंगें, हुक्म पूरा किया तो दाहिने हाथ वाले ने लिख लिया, हुक्म तोड़ दिया तो बायें हाथ वाले ने लिख लिया। ये फरिश्ते कोठियों के पहरों से नही रूकते, चौबीस घन्टे इनका यही काम है कि खुदा के अहकामात कितने तोड़े और कितने पूरे किये और फरिश्ते आते है, असर की नमाज से फज्र की नमाज तक फिरते रहते हैं। आदमियों को भी देखते हैं लिखाई भी देखते हैं, सुबह ही सुबह अभी सूरज भी नही निकला कि आसमान पर कच्चा चिटठा पहुॅच गया। अब फज्र की नमाज से अस्र की नमाज तक साथ लगे हुए हैं एक मसले को भी नही छोडते बस इसी पर आसमान से फैसले आते हैं।

107

जिन्दगी का खुलासा माल कमाना है

21 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हमारी इस वक्त की जिन्दगी का खुलासा है माल कमाना और कमाने से जो माल मिले उसे अपना समझना फिर उस हाथ आये हुए माल को फरीजा समझ कर अपने ऊपर और अपने बीबी-बच्चों पर खर्च करना और इसे ही हम असल काम समझ रहे हैं फिर बचे-कुचे पैसे से सदकात, खैरात या और दीनी कामों मे खर्च करने को बाद का काम समझते हैं कि ये बचे-कुचे पैसे से खर्च करने के काम है हक तआला शानुहू ने मुसलमानों पर से इसी वास्ते आज अपना हाथ खीच लिया है। इसलिये कि आज हम जिस रास्ते पर चल रहे हैं यह रास्ता यहूद-नसारा-मुश्रिकीन व बुतपरस्तों का रास्ता है, हुजूर सल्ल0 ने हमे वो रास्ता सिखलाया था जिस पर खुदा के खजाने हमारे लिये खुल गये थं और मुल्क दर मुल्क हमारे पैरो मे लाकर डाल दिये गये थे।

108

जान लगा कर माल बढ़ाना और माल बढ़ा कर नक्शे बनाना

12 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! मेहनत की दो किस्मे हैं और हर किस्म मे मेहनत के दो दर्जे है, हर किस्म के साथ हक तआला शानुहु क मामलात जुदागाना है। एक किस्म तो वो है जो दुनियॉ मे रायज है कि पहले दर्जे मे मेहनत करके माल तक पहुंचना है, माल पर यकीन करना, माल से चीजें हासिल करना फिर चीजों को तर्तीब देकर, चीजों के नक्शों से पलना। इसमे इन्सान का यकीन भी माल ही का है, तर्तीब इस्तेमाल भी माल ही के एतबार से है, अमल का मेयार भी माल ही के एतबार से हैं, ये रास्ता इन्तेहाई रजील, इन्तेहाई घटिया और अल्लाह के यहां इन्तेहाई मबगूज है। इस रास्ते मे इन्सान को धोखा ये लगता है कि हम कामयाब बन रहे हैं और ये इसी से खुश होकर बस रात-दिन इसी को तर्तीब पर चलता रहता है कि जान लगा कर माल बढ़ाना और माल बढ़ा कर नक्शे बनाना, जब इन्सान गुलु के दर्जे मे पहुँचता है तो तमाम आमाल का मेयार गलत हो जाता है और यकीन की तमाम हुदूद बिगड जाती है। अब इस इन्सान पर हक तआला शानुहु अजाब मुसल्लत करते हैं कि सबसे पहले कामयाबी के हकायक से इसे महरूम कर देते है। इज्जत की शक्लों मे इसे अटका कर, जिल्लत मे मुब्तला कर दिया जाता है अगर इन हालात के बिगड़ने से इसकी ऑख नही खुलती तो अल्लाह जल्ला शानुहू उसकी चीजों को बिगाड़ते है।

109

जानवरों की जिंदगी पर चलने के लिये इंसान को कुछ नही करना पड़ता

4 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जानवरों की जिंदगी पर चलने के लिये इंसान को कुछ नही करना पड़ता क्यों कि आंखों से नक्शे दिखाई देते हैं और नक्शों के जज्बात इनके अंदर भरते हैं बस जानवरों की जिंदगी पर चलने के लिये इतना काफी है। दूसरी जिंदगी के लिये रियाजत व मुजाहदा करना पड़ता है, अपने अन्दर के तखरीबी व तामीरी माददो को पहचानने की मेहनत करनी पड़ती है और तखरीबी माददों को दबाने की और तामीरी माददों को उभारने की मेहनत करनी पड़ती है। अब आप हमारी इस बात का अच्छी तरह गौर कर लेगें और इस बात को भी जो हमने पहले अर्ज की थी तो हम इंशाअल्लाह आइंदा मज्लिस मे बतायेगें कि तखरीबी माददों को दबाने के लिये और तामीरी माददों को उभारने के लिये किस तरह और किस मेहनत की जरूरत है।

110

किसी बिरादरी के बन कर जिंदगो मत गुजारों

5 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! तुम किसी कौम के किसी मुल्क के किसी वतन के किसी बिरादरी के बन कर

जिंदगी मत गुजारों, तुम सारी दुनिया वालों के लिये अल्लाह के बनकर जिंदगी गुजारों। तुम न बाप के हो, न मां के, तुम न भाई के, हो न बहन के, बस अल्लाह जिसका पैर पकड़ने को कहे उनके पैर पकड़ कर दिखाओ। हर मजलूम की मदद करो अगर

बाप ने किसी को नाहक दो थप्पड़ मारे तो मजलूम का साथ दो, जो पौध नई उठकर आयेगी बगैर इसके कि वह तिजारत, मजदूरी व मुलाजमत करे वह इसी यकीन पर उठेगी, शुरू से इन्सान के दिल व दिमाग में एक शक्ल बनती है। अरबी मदरसों में जाकर पढ़े तो वहां शक्लें बनी हुई है कि पढ़ने के बाद पढ़ायेंगें उससे पलेंगें, कालेजों में चले जाओ तो वहां भी शक्लें बनी हुई हैं, कालेजों में जाकर घुसते ही सामने आता है कि ये पढ़ लोगे तो फलॉ ने यह वादा कर लिया है और यह पढ़ लोगे तो फलॉ ने यह वादा किया है।

111

शुरू मे नियत ठीक की जाये और आखिर मे नियत को खुद खराब करार दिया जाये

ढाका, बांगला देश मे फरमाया ! सही नियत का मतलब (एख्लास) सिर्फ इतना नही है कि जब अमल करो तो नियत सही हो, बात यह है कि शुरू मे नियत ठीक की जाये और आखिर मे नियत को खुद खराब करार दिया जाये। जो अपनी निगाह मे खुद हकीर होगा वो कभी शोहरत नही चाहेगा, इसलिये अमल से पहले अपनी नियत को सही करना और बाद मे अपने आपको गिरा देना कि मैंनं ठीक नही किया। (मज्मुआ बयानात जिल्द.1)

112

लोग तुम्हे न जाने तो सलामती मे रहोगे

4 मुहर्रम 1384 हिजरी को ही मदीना मुनव्वरा मे फरमाया ! आम फिजा बने कि अल्लाह से लेकर अल्लाह के बन्दों को देना है, किसी की दावत कुबूल करें तो उसका दिल खुश करने के लिये कुबूल करें अगर उसका दिल न खाने से खुश हो तो उसका खाना न खाओ। तुम जहॉ थे वहॉ मुक्तदियों के रंग मे थे अब जहॉ जा रहे हो वहॉ इमामों की दौड़धूप है, तुम सारे काम अच्छे तौर से कर लो और लोग तुम्हे न जाने तो सलामती मे रहोगे अगर तुमने लोगों से अपने का तआर्रुफ करा दिया तो उसमे तुम्हारी हलाकत का खतरा ज्यादा है।

113

बिल्कुल आसान मसअला ये है कि हर आदमी की अपनी दुआ कुबूल हो

14 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! खुदा ने कुरआन-ए-पाक मे सारे मसअलों के लिये दुआऐं बतलायीं हैं, सारे नबियों कि दुआऐं अलग-अलग है, किसी की दुआ पर खाना उतर रहा है, किसी की दुआ पर पानी का चश्मा निकल कर सेहत मिल रही है। बॉझ औरत से बच्चा पैदा होना और हुकूमत के शर व जालिम के शर से बचने की दुआ, बरकत की दुआ, रोटी मिलने की दुआ अगर दुआ पर मसाएल आ जाय तो ये जो रात व दिन हमकमाई मे लगे हुए है और कमाई के लिये ये जो रात और दिन डन्डे बरस रहे हैं, ये सारे मसअले खत्म कि कोई बात नही दुआ करेगें, बिल्कुल आसान मसअला ये है कि हर आदमी की अपनी दुआ कुबूल हो। कुरआन मे बहुत सारी दुआऐं है, दुआऐं सारी कुबूल होंगीं लेकिन जब हमारा सबका अल्लाह की तरफ मोड़ हो जाये तब।

114

दुआ वाले और दुआ कराने वाले

14 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हुजूर सल्ल0 हर आदमी को दुआ वाला बनाकर गये पर हम खुद दुआ वाले न बनकर किसी से दुआ करने को कह रहे है, यह यहूद व नसारा की तक्सीम है कि इन्होने खूब खून पिया, खूब गजब किया, खूब जिना किया बस आठवें दिन गिरजा मे जाकर पादरी से दुआ करा रहे है। हम सौ साल तक ईसाइयों की गुलामी मे रहे और अब पंडितों की गुलामी मे हैं, ये भी इसी किस्म के आदमी हैं ये सब भी अमल से आजाद हैं बस गाय के नाम पर हजारो आदमी मार दिये आठवें दिन मन्दिर मे जाकर हाजिरी लगा दी। हुजूर सल्ल0 सबको को दुआ वाला बनाकर गये थे और इतना ही नही बल्कि हर एक को दुआ वाला बनने का रास्ता भी बतला कर गये थे, बस उस रास्ते को आज चालू करन की बात है। ये भी नही कि बुजुर्गो के होते हुए हम क्यों दुआ मॉगे, सारे सहाबा रजि0 के होते हुए ताबई दुआ मॉगता है और उसकी दुआ पर सवारी जिन्दा होती है। हुजूर सल्ल0 हमे ये रास्ता बताकर नही गये कि बाज लोग दुआ वाले बन जाये और बाकी दुआ कराने वाले।

115

दुनियॉ और आखिरत

18 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इस जमाने मे हम लोग दुनियॉ की जिन्दगी को चीजों से बनाना

समझते हैं और आखिरत की जिन्दगी को अमल से बनाना समझते हैं हमारी सोच ये है कि हुजूर सल्ल0 वाले अमल आखिरत मे काम देगें और हमारी दुनियॉ की जिन्दगी चीजों से बनेगी, इसलिये यकीन ये बना है कि जब माल होगा तब चीजें मिलेगी और माल तब आयेगा जब हम मेहनत करेगें फिर जितनी ज्यादा मेहनत उतना ज्यादा माल और जितना ज्यादा माल उतनी ज्यादा चीजें फिर जितनी ज्यादा चीजें उतनी ज्यादा अच्छी जिन्दगी, हमारी नाकामी की बुनियाद यही सोच है और यही सोच हमेशा की जहन्नम मे ले जाने वाली है। हालॉकि हुजूर सल्ल0 वाले अमल ही से इन्सान को दुनियॉ व आखिरत मे चीजें मिलेगी।

116

ईमान की दावत देते हुए चार अमल हैं

21 सफर 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हुजूर सल्ल0 वाले अमलों की मेहनत के लिये जानवरों वाले काम छोड़ दो, जानवरों के दस-बाराह काम हैं खुद खाना, बच्चो को खिलाना, बीबी को खिलाना, बीबी से सोहबत करना, मकान बनाना, बालाखाने-तहखाने बनाना, कपड़ों की सफाई, एक दूसरे पर गलबा पाने की कोशिश करना अगर आदमी की जिन्दगी इतनी है तो खुदा पाक की कसम ! खुदा के यहॉ इनका शुमार जानवरों मे होगा। इन्सान हुजूर सल्ल0 वाले अमलों पर तब पड़ता है जब उसका यकीन बदलता है इसलिये कि अमल की बुनियाद यकीन है, जब यकीन चीजों से अमल की तरफ मुड़ेगा तो खिलाफत वाली जिन्दगी बनेगीं। ईमान की दावत देते हुए चार अमल हैं जिनको ज्यादा करने से इन्सान जानवर पने से निकल कर खुदा की खिलाफत वाली जिन्दगी मे आता है। 1-ईमान के हल्के 2-तालीम के हल्के 3-अल्लाह का ध्यान 4-नमाज का एहतमाम, ये चार अमल फरिश्तों मे है, उनके यहा न मुल्क, न माल, न औरतें न बच्चे उनका एक-दूसरे से इन चीजों का कोई तज्किरा नही बस अल्लाह की बड़ाई करना, इल्म की मज्लिसों मे शरीक होना, नमाजों मे शरीक होना और खिदमत गुजारी करना, ये चार काम है जिनके करने से इतआत का माददा पैदा होता है, जो फरिश्तो की सिफत है, अमलों से पलने के लिये जानवरों वाले काम से निकल कर ये चार काम ज्यादा करो।

117

जो महबूब से मिलाये वो महबूब हुआ करता है

21 सफर 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! बिन देखे अल्लाह का ध्यान जमाना कि अदालत वाले अल्लाह के हाथ मे हैं, ये खुद नही लिखते अल्लाह जो चाहेंगें वही उनके कलम से लिखा जायेगा। उनका ध्यान देखकर भी न आये और खुदा का ध्यान बिन देखे आ जाये, ये ध्यान इतनी बड़ी कमाई है कि जो तमाम मुल्को के नक्शों को बदलवा देगी। भूख-प्यास या घर का कोई मसला या अगर तू नही कमाता है तो तय कर कि अपने हालात किसी को नही बताना है, बीज डालकर आये हो तो क्या उसी रोज खेती हो जायेगी ? अरे होते-होते होगी। फाके से और घर की तकलीफों से मुहब्बत कर लो अगर किसी के सामने हाथ न फैलायेगा, इसी पर अड़ा रहेगा, राजी ब रजा रहेगा, भूख से और तकलीफों से दिल लगायेगा तो खुदा के खजानों के दरवाजे खुल जायेगें अगर तूने लोगों से हाल जाहिर किया तो चार कौड़ियॉ मिलेगी पर खुदा के खजानों के दरवाजे बन्द हो जायेगें अगर हाल को किसी से न बताया तो अल्लाह की तरफ से अब माल आना शुरू होगा तो जैसी जिन्दगी थी अगर अब भी वही रखी कि फाकों से मुहब्बत रखता है, माल को खुदा की बताई हुई जगह पर खर्च करता है तो खुदा के खजाने तेरे होगें, जहॉ भी हाथ उठाकर जो मॉगेगा मिल जायेगा।

118

रस्म परस्ती के सोग मनाते है

4 मोहर्रम 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जब इंसानों में से हर इंसान अपनी जान व माल को अपने ऊपर खर्च करता है और दूसरे की जान व माल में से अपने लिये नफा खीचता है तो तफरूका कायम होता है। जुबानों-कौमो-मुल्कों के ऐतबार से लड़ते है जो कुछ हाथ में आ जाये वह लड़ाईयों पर खर्च करते हैं और मुसीबतें उठाते है। ऐसे इंसानों के सामने मुहब्बत के मनाजिर नही आते और कोई उनको प्यार करने वाला नही होता हैं, इस जिंदगी में जब कोई वजीर मरता है तो मिम्बर खुशियां मनाते हैं, मालदार मरते हैं तो उनके नीचे वाले खुशियां मनाते ह कि अब माल हमारे हाथ मे आयेगा रस्म परस्ती के सोग मनाते है और मजलिसों में खुशियां मनाई जाती हैं लोग नकली रोना रोते हैं और अन्दर से उनके दिल हंसते है।
दूसरी वह जिंदगी है जिसमें इंसान अपने मुकाम को हासिल करे दूसरों की जिंदगियां बनाने पर अपनी जान व माल को खर्च करे तो उससे इंसानी जिंदगियों के अंदर मुहब्बत कायम होती है। ऐसा इंसान जो अपने जान व माल से इंसानी जिंदगी में काम आता हो ऐसे इंसान के मरने को लोग पसंद नही करते दिल से रोते हैं और उसके लिये अपने जान व माल खर्च करने को पसंद फरमाते हैं। इसी अमली बुनियाद पर इंसाफ, रहम और सखावत जिंदा होती है, सारे कमालते इंसानी इसी से निकलते है। जब इंसान मेहनत करके इस जिंदगी के तरीकों को हासिल करते हैं तो खुश होकर अल्लाह भी हालाते इंसानिया को बेहतर बनाते हैं बरकत, राहत और उसअत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, परेशानियॉ व बलाये रोक दी जाती हैं।

119

मस्जिदों मे ईमान के तज्किरे और ईमानी मज्लिसे हों

29 मई 1962 लखनऊ मर्कज मे फरमाया ! हम इस जददो जहद के जरिये जिसका नाम तब्लीग पड़ गया है यही कोशिश करना चाहत हैं कि मस्जिदों मे फिर वही माहौल व नक्शा बने जो मस्जिद नबवी का था कि मस्जिदों मे ईमान के तज्किरे और ईमानी मज्लिसे हों, तालीम व तआल्लुम के हल्के हों, जिक्र व इबादत हों, ईमान व अमल की फिक्रें और इनके बारे मे मश्विरें हों और इनके तकाजों के लिये नक्ल व हरकत का मर्कज हों। गरज ये कि हुजूर सल्ल0 के जमाने मुबारक मे मस्जिद नबवी और दूसरी मस्जिदों मे चौबीस घटें जो कुछ होता था वही हमारी मस्जिदों मे हुआ करे। (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

120

इस्लाम सब रास्तों से ज्यादा आसान है

16 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! कामयाबी के अहकामात चीजों के एतबार से नही आते तक्वे के एतबार से आते है, जो लोग माल कमाने मे, खर्च करने मे, खाने मे खुदा के अहकामात को कामयाबी का जरिया बनाये अगर बाराह हजार की तादाद ऐसी हों जो किसी चीज के बनने बिगडने को सामने ना रखे बल्कि ये सामने रखें कि इस वक्त खुदा का जो हुक्म है वो पूरा हो, चाहे बच्चे रोए या हंसे, चाहे अब्बा जान राजी हों या नाराज हों फिर बाराह हजार को छत्तीस अरब के मुकाबले में खुदा कामयाब करके दिखाएंगे। फैसले जो आएंगे वो अहकामात पर आएंगे अगर पीर अहकामात तोडेंगे तो उनके खिलाफ अहकामात आएंगे अगर मुरीद अहकामात तोडेंगे तो उनके खिलाफ अहकामात आएंगे। इस रास्ते से चमकना बहुत आसान है, अल्लाह यूं नही कहते कि पहले इतना पैसा लाओ फिर हुक्म देंगे, जकात का हुक्म पूरा करने के लिये माल कमाना नही है, माल नही है तो माल के अहकामात तुम्हारे जिम्मे नही है, जिस्म के अहकामात देंगे हाल को बदलने की जरूरत नही है हर हाल के अन्दर हुक्म पर आ जाओ, इस्लाम सब रास्तों से ज्यादा आसान है।

121

ये मेहनत यकीन बदलने के वास्ते हैं

16 सफर 1382 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! ये मेहनत यकीन बदलने के वास्ते हैं असल चीज यकीन है, अमल असल नही है। अल्लाहुम मग्फिरलि हयियना व मयियतिना, ये दुआ तो मरने वाले के लिये है जो बेचारा मर गया है और जो जिन्दा हैं उनके लिये अल्लाहुम्मा मन अहयैतहु मिन्ना, कि ऐ अल्लाह हममे से जिसको जिन्दा रख इस्लाम पर और हममे से जिसको मौत दे ईमान पर मोत दे। ईमान पर मर गये तो जन्नत का लिबास पहना दिया जायेगा, अर्श के साये के नीचे पहॅुचेंगें। अमल खूब किये लेकिन ईमान पर न मरे कि रोजा भी रखा, जहॉ भी गये तब्लीग भी की, शहीद भी हुए पर कब्र मे लेटते ही आग बिछा दी गयी।

122

पहला मुकाबला होगा माल कमाने की मेहनत से

13 अप्रेल 1962 बाद नमाज फज्र बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! ये काम दो चीजें हासिल करने के लिये है पहली चीज हिदायत का हासिल करना और दूसरी चीज अमलों को सही करना है। आज पहली चीज नही है इसी वजह से कुरआन के हजारों तर्जुमों मे तसानीफ व तकरीरें हैं लेकिन 25 साल सुनने के बाद भी हराम से नही रूके, इसकी वजह ये है कि हिदायत हासिल नही की। सिर्फ कुरआन सुनने से अमल सही नही होता बल्कि अमल सही करने के लिये पहला मुकाबला होगा माल कमाने की मेहनत स कि माल कमाने की मेहनत से वक्त निकालो क्यों कि ऑख देख रही है माल कमाने से मिल रहा है अब तुम इसकी तरदीद करो कि माल कमाने से नही मिल रहा है बल्कि खुदा के देने से मिल रहा है इसको साबित भी करो। (मज्मुआ बयानात जिल्द 3)

123

क्या खुदा की तारीफ करके नही पला जा सकता है ?

बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जब तुम हुकूमत के काम मे लगोगे तो क्या हुकूमत तुम्हरा खर्च नही उठयेगी ? अगर वजीरों की तारीफ करके पला जा सकता है तो क्या खुदा की तारीफ करके नही पला जा सकता है ? (तज्किराह मौलाना यूसुफ रह0)

124

दुनियॉं इसके पीछे पीछे आती है

बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन्सान जब अपने आप पर मेहनत करते करते उस दर्जे को पहुँचता है जिस दर्जे पर खुदा राजी होकर उसके हाथ पॉव उठाने पर ही फैसले सादिर फरमा देते हैं फिर दुनियॉं इसके पीछे पीछ आती है, आज हम लोग दुनियॉं के पीछे भागते हैं और वो है कि हाथ ही नही आती। (तज्किराह मौलाना यूसुफ रह0 सफा 171)

125

ईमान किस चीज को कहते है

फरमाया ! जाहिर के मुताबिक यकीन करने का नाम ईमान नही है बल्कि जाहिर व रिवाज और मुशाहदाते इन्सानिया के बरखिलाफ खुदा की जात व सिफात का यकीन व उनकी मर्जी वाले आमाल और उनकी व उनके रसूल सल्ल0 की खबर पर यकीन जमा लेने का नाम ईमान है। (सवानेह हजरत जी रह0)

126

दुनियॉं मुर्दार है

फरमाया ! रसूल सल्ल0 वाले आमाल के बगैर दुनियॉं व आखिरत मे कभी भी कामयाबी हासिल नही हो सकती, कायनाती असबाब हुकूमत, तिजारत, जराअत वगैरह चाहे जितने हो जब तक इनमे रसूल सल्ल0 वाले आमाल की रूह ना आ जाये ये असबाब मुर्दा है। (तज्किराह हजरत जी रह0)

127

गैबी मदद

फरमाया ! अल्लाह तआला की गैबी मदद जातों और शख्सियतों की वजह से नही आती बल्कि ईमान, आमाल और औसाफ की वजह से आती है। अल्लाह तआला की नुसरत और गैबी मदद उसो वक्त तक साथ रहती है जब तक नजर बस अल्लाह पर हो और यकीन ये हो कि हमसे या किसी से कुछ ना हो सकेगा, जो कुछ होगा अल्लाह की कुदरत वाली मदद से होगा।

(तज्किराह हजरत जी नम्बर)

128

मुसलमानों मे ईमान व अमल की रूह और हकीकत आ जाये

फरमाया ! मुसलमानों मे ईमान व अमल की रस्म और सूरत मौजूद है दावत की इस मेहनत का मकसद ये है कि मुसलमानों मे ईमान व अमल की रूह और हकीकत आ जाये। आज मुसलमानों मे ईमान व अमल के मुन्तिशर अज्जाअ तो मौजूद ह बस इस मेहनत से ईमान व अमल हकीकत के साथ अपनी सही तर्तीब पर आ जाये कि अल्लाह तआला की मर्जी व मंशा वाले अमल के साथ आखिरत के मिलने वाले इनाम पर नजर रख के जिन्दगी गुजारने का मिजाज बन जाये।

(तज्किराह हजरत जी नम्बर)

129

यहूद व नसारा की चाल

फरमाया ! यहूद व नसारा मुसलमानों के हमेशा दुश्मन रहे हैं इन्होने अपनी मुआशरत और तहजीब के जरिये ईमान व अमल को इतना नुकसान पहुॅचाया हैं कि आज सुधार दुश्वार हो रहा है, अच्छे अच्छे दीनदारों को खबर नही कि इन्होने तारीखे इस्लाम मे, सीरते पाक मे और लुगते कुरआन मे ऐसे ऐसे बदलाव किये हैं कि अच्छे अच्छे अहले इल्म को धोखा लग गया है। (तज्किराह मौलाना यूसुफ साहब रह0 सफा 161)

130

चीजों पर भरोसा न करो शक्लों को माबूद न बनाओ

फरमाया ! शक्लों को माबूद न बनाओ, चीजों पर भरोसा न करो, सूरतो पर मुतवज्जाह न हो इनसे कुछ नही होता, जो कुछ होता है अल्लाह से होता है और अल्लाह आमाल पर करते है अगर हमने मेहनत करके अपने आमाल ठीक कर लिये और अच्छे आमाल आसमान पर भेजे तो वहॉ सं खर के फैसले आयेगें अगर बिगड़े हुए आमाल आसमान पर गये तो हलाकत, जुल्म, फसाद और निफाक के फैसले आयेगें लिहाजा इसी को जानो, इसी को पहचानो और इसी को मानो। (तज्किराह मौलाना यूसुफ साहब रह0)

131

मुसलमानों की जिहालत दूर करने का नुस्खा

फरमाया ! मुसलमानों की जिहालत दूर करने और मुसलमानों मे इल्म की जरूरत पूरा करने के लिये मुसलमानों मे चार जज्बे पैदा करने की जरूरत है। 1 ईमान को सुनने का जज्बा 2 ईमान को सुनाने का जज्बा 3 ईमान को सीखने का जज्बा और 4 ईमान को सिखाने का जज्बा। (तब्लीग का मकामी काम)

132

हालात का तआल्लुक आमाल से है

फरमाया ! हालात की बुनियाद मुल्क व माल और जमीन व जायजाद पर नही है बल्कि हालात की बुनियाद आमाल हैं, हुजूर सल्ल0 और सहाबा किराम रजि0 वाले आमाल हालात सवॉरने वाले आमाल है, मुल्क व माल, सोना चॉदी और जमीन व जायजाद की बदौलत हालात ठीक ना होगें जो हालात के ठीक होने का तआल्लुक इन चीजों मे समझता है वो धोखे मे है,

हकीकत ये नही है। अल्लाह तआला ने हालात को आमाल के जरिये से जोड़ा है हालात को चीजों के जरिये नही जोड़ा, इन्सान जैसे अमल करेगा वैसे हालात मुर्त्तब होगें। (सवानेह हजरत जी रह0 सफा 607)

133

परेशानियों से बचने का रास्ता

फरमाया ! जो अजाब खुदा की नाफरमानियों की वजह से आ रहा है या आने वाला है उसको तुम्हारे राकेट और ऐटम बम के गोले भी ना रोक सकेगें, इन अजाबात के रूकने का असल इलाज ये ह कि अपने अन्दर ईमान पैदा करके अल्लाह की तरफ रूजू करो, सिर्फ यही चीज तुम्हे और पूरे आलमे इस्लाम को बचा सकती है। (मक्तूबाते अकाबिर तब्लीग)

134

बाहर के मुल्कों मे जाने वाली जमातों के अफराद कैसे हो ?

फरमाया ! यूरोप व अमरीका के असबाब परस्त मुल्कों मे जाकर अल्लाह की तरफ मुतवज्जाह करने वाले ऐसे लोगों की जरूरत है जो इन मुमालिक की चमक धमक वाली जिन्दगी और उनके रहन सहन को देखकर अपनी राल ना टपकायें बल्कि खिलाफे इस्लाम जिन्दगी और रसूलुल्लाह सल्ल0 वाले आमाल के खिलाफ होता हुआ देखकर अपने ऑसू गिरायें।

(सवानेह हजरत जी रह0)

135

इज्तिमआत कैसे किये जाये

फरमाया ! इस काम मे इज्तिमआत ना बुनियाद हैं ना मकसूद बल्कि अपने नहज से ना होने की बिना पर मुजिर हैं इसलिये माहाना इज्तिमआत ना किये जाये। हर जगह हफतेवारी मकामी इज्तिमआत अपनी सही नवईयत यानी पूरी शब्बेदारी करते हुए औकात के मुतालबे के साथ किये जायें। (मक्तूबाते अकाबिर तब्लीग)

136

इस काम को करने वालों का यकीन कैसा होना चाहिये ?

फरमाया ! काम ये है कि काम करने वाले का उस जात पर यकीन कायम हो जाये जिसके करने से काम होगा यानी खुदा की जात पर और खुदा की हैसियत काम करने वाले पर ऐसी मुन्कशिफ हो कि अपनी जात और कोई दूसरी जात दिखायी ना दे फिर दूसरा यकीन ये हो कि जब मैं जाहिर और बातिन से हुजूर सल्ल0 वाले आमाल पर आ जाऊँगा तो अल्लाह रब्बुल इज्जत दुनियॉ व आखिरत मे अच्छे हालात लायेगा। (सवानेह हजरत जी रह0)

137

कमाना सीखने की चीज नही है हुक्म पर चलना सीखने की चीज है

फरमाया ! मेरे भाईयों ! कमाना सीखने की चीज नही है बल्कि हुक्म पर चलना सीखने की चीज है, तुम मस्जिद मे आकर हुक्म का यकीन सीखो, मस्जिद मे आकर अल्लाह की सिफात का यकीन सीखो, यकीन को बनाने के लिये हमे अमल दिये गये हैं कि अल्लाह के अलावा से होता ही नही "अल्लाहु अकबर" अल्लाह इतने बड़े हैं अगर मस्जिद मे न आये तो बाहर ये सुनोगे कि वजीरे आजम इतने बड़े हैं और सदर साहब इतने बड़े हैं और असल मे ये वजीर या सदर क्या है ? कि ये मनी के कतरे हैं जिन्हे अल्लाह ने फूलाकर इतना बड़ा कर दिया है और क्या है ? कि खून, पाखाना, पेशाब हैं जो सब

नापाक हैं। तुम मस्जिद मे आओ यहॉ बैठ कर अल्लाह की बड़ाई सुनो तब अल्लाह की बड़ाई दिल मे उतरेगी नही तो बने हुए को बड़ा समझते रहोगे और उनकी कोठी पर जाकर हाथ जोडेगों पर ये धोखा मौत के वक्त खुल जायेगा कि कौन बड़ा है।

138

माल का रास्ता और दुआ का रास्ता

फरमाया ! खुदा मौत से पहले ही माल वाले को परेशान कर देते हैं मुसीबतों, मुकददमों व बीमारियों से जिन्दगी

अजीरन कर देते हैं और इसके मुकाबले पर दुआ वाले को दुनियॉ ही मे चैन अता फरमा देते है। दुआ वाले की और इसकी नस्लों की जिन्दगी दोनो जहॉन मे बना देते हैं, देखने मे माल वाला रास्ता आसान है लेकिन हकीकत मे दुआ वाला रास्ता आसान है। माल मे खारजी असबाब की जरूरत है, माल के रास्ते मे पैसा, मकान, लिबास, औरत व वजीरों की खुशामद की जरूरत है, माल के रास्ते में दाखिली असबाब नही है। किसी के दिल मे ईमान हो या शिर्क हो उसे दुकान से पैसा मिल जायेगा, इख्लास हो या बदनियती उसे जमीन से गल्ला मिल जायेगा, मुस्लिम हो या गैरमुस्लिम उसे दवा से शिफा मिल जायेगी। जमीन हो, हल हो, बीज हो, पानी हो और इन्सानी मेहनत साथ हो ये जमीन से लेने की शर्तें हैं जो सब खारजी हैं, कोठी से राहत मिले, बच्चों से फरहत मिले, बीबी से रूहानी खुशी मयस्सर हो इन सब बातिनी कैफियत के लिये बातिनी शर्तें हैं जो दाखिली असबाब से मिलेगीं। (बयानात जिल्द 6)

139

जहिल इन्सानों का हाल

फरमाया ! जहिल इन्सानों का काम है माल कमाओ, माल से चीजें बनाओ, घर को चीजो से भरो। घर का कमरा दवाईयों से भर लिया आर अपना मुस्तकिल डाक्टर रख लिया पर जब सर के दर्द को इनमे से कोई दवा दूर ना कर सके तो ये नाकामी है। नाकामी व कामयाबी अन्दर के हालात हैं, खौफ अन्दर की नाकामी का नाम है अगरचे दवाईयॉ घर मे खूब है ये नाकामी है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

140

किस नमाज क अमल स कामयाबी है

फरमाया ! नमाज के जाहिरी आमाल तो यहूदी, नसरानी, हिन्दु व सिख अख्तियार कर सकते हैं इसलिये गैर मुस्लिम नमाज के जितने आमाल कर सकता (तक्बीर, कायदा, किरात, रूकूअ, सज्दा वगैरह) उतने आमाल मे कामयाबी नही है बस नमाज मे जितने आमाल गैर मुस्लिम नही कर सकता उनमे ही असल कामयाबी है। ईमान व एख्लास और अल्लाह क ध्यान के साथ हुजूर सल्ल0 के बताये हुए आमाल से लेने की उम्मीद और गलत आमाल की सजाओं के खौफ को कैफियत, ये कामयाबी को जड़े हैं जिन्हे गैर मुस्लिम नमाज के अमल मे नही कर सकता अगर गैर मुस्लिम अन्दर की ये चीजें हासिल करले तो ये गैर मुस्लिम नही बल्कि मुसलमान है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

141

नमाज की तैयारी मे जाहिर बातिन दोनों हैं

फरमाया ! नमाज से पहले नमाज की तैयारी है कि वुजू किया, पाक कपड़े पहने, घर छोड़ा, मस्जिद मे आकर किब्ला रूख होकर खड़े हो गये ये जाहिरी तैयारी है और जिन चीजों से निकल कर आये हो उनके यकीन व तलब को खुद मे से निकाल दो ये बातिनी तैयारी है। चीजों मे से निकल कर आ जाना तो आसान है लेकिन इनको दिल से निकाल देना मुश्किल है कि

"दिल के आईने मे है तस्वीरे यार, जब जरा गर्दन झुकाई देख ली"

चीजों से निकलना पहला कदम है ये हुजूर वाली जाहिरी खुजुअ की सूरत है और दूसरा कदम हुजूर वाले बातिनी खुशूअ की सूरत मे चीजों की तलब व यकीन को दिल से निकाल देना है। हुजूर सल्ल0 नबूवत के बाद तिजारत, जरआत, मुलाजिमत और मजदूरी मे नही लगे हम इन कामों से निकल कर जो हुजूर सल्ल0 के काम नही थे अब उन अमलों को करने गये जो हुजूर सल्ल0 के अमल थे। हम जहॉ से निकल कर आये हैं उनमे कामयाबी नही है जिन अमलों को अब हम करने के लिये आये हैं इनमे कामयाबी है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

142

मस्जिद नबवी की बुनियाद ईमान व तालीम के हल्के हैं

फरमाया ! बगैर बिस्मिल्लाह के वुजू के आजा धुलते हैं और अगर यकीन, तलब व ध्यान से बिस्मिल्लाह कह कर वुजू के

आजा धोये तो सारे आजा पाक हो जाते हैं। इस यकीन, तलब व ध्यान के लिये मस्जिद नबवी मे वो आमाल तज्वीज किये गये जिनसे अन्दर की ये माया तैयार हो, आज इन आमाल के ना होने की वजह से अन्दर की ये माया पैदा होनी बन्द हो गयी। नबूवत के चौदवें साल मे मस्जिद बनी, इन चौदाह साल मे जो सिखाया है उसे सिखलाने के लिये मस्जिद नबवी बनी थी कि अब मस्जिद मे कलिमा बोले, कलिमा सुनो, कलिमा समझो, कलिमा समझाओ। दुनियॉ मे अलग अलग चीजों से होने के बोल बोले जा रहे थे इधर मुसलमानों ने कलिमा बोलना शुरू किया कि मुसलमानों की पहली आवाज अल्लाह के बगैर तुम्हारी किसी चीज से कुछ ना होगा और अल्लाह से चीजा के बगैर सब कुछ होगा, दूसरी आवाज मुहम्मद सल्ल0 वाले आमाल पर अल्लाह बगैर मकानों, जहाजों, डाक्टरों, इंन्जेकशन और दवा के कामयाब करेगें। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

143

छ नम्बरों का मतलब वो नही है जिनको लोग समझते है

बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! इन छ नम्बरों का मतलब वो नही है जिनको लोग समझते है बल्कि इन छ नम्बरों का जो मतलब हम समझते और बतलाते है उसके मुताबिक करने और लगने से इन्शाअल्लाह वो बात पैदा हो जायेगी जो बात खुदा अपने बन्दों से चाहते हैं। (तज्किराह हजरत जी नम्बर)

144

मालदार के पीछे कुत्ते की तरह फिरेगा

7 अप्रेल 1962 बाद नमाज फज्र बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! जिस शख्स को इस काम से हिदायत ना मिली वो मालदार के पीछे कुत्ते की तरह फिरेगा और अगर हिदायत मिल गयी तो मालदार कुत्ते की तरह इसके पीछे फिरेगें, इस काम से दोनों तरह के लोग बनेंगें। (मज्मुआ बयानात जिल्द 3)

145

कलिमे वाला उंगली के इशारे से चॉद को तोड़ देता है

फरमाया ! इस لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ का वजन सातों जमीन व आसमान से और इनके दरम्यान की सारी चीजों से ज्यादा है यानी जिसके दिल मे इस कलिमे की हकीकत उतरेगी उस इन्सान से जमीन व आसमान और इनके दरम्यान की सारी चीजें दबेगी, इसका नमूना अम्बिया अलै0 हैं। हम चॉद पर नही गये, चॉद पर हमारा असर नही पड़ा पर कलिमे वाले मुहम्मद सल्ल0 की

उंगली के इशारे से चॉद दो टुकड़ों मे हो गया यानी कलिमे वाला उंगली के इशारे से चॉद को तोड़ देता है, कलिमे वाले यकीन के साथ नमाज पढ़ने से सूरज व चॉद की रोशनी वापस आ जायेगी, गये हुए बादल वापस आ जायेगें, दुनियॉ का सारा निजाम कलिमे से बदलता है, चीजों की सूरते और हकीकतें तक कलिमे से बदल जाती है। कलिमे वाले इब्राहिम अलै0 के लिये आग गुलजार बनी और हमेशा कलिमे वाले के लिये गुलजार बनती रहेगी कि अबु मुस्लिम खौलानी रह0 के लिये भी आग गुलजार बनी है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

146

कमाना, खाना, लिबास और मकान की तकलीफें उठाना कमाल है

फरमाया ! मेहनत करके चीजों का माहौल बनता है और मेहनत से आमाल का भी माहौल बनता है, आमाल की मेहनत मे आदमी अपनी जात पर तकलीफे उठाने के लिये तैयार रहे और खुदा से आफियत मॉगता रहे। तकलीफों से ना घबराये क्यों कि कमाना व खाना कमाल नही है बल्कि कमाना, खाना, लिबास और मकान की तकलीफें उठाना कमाल है इसलिये कि हुजूर सल्ल0 ने ये तकलीफें उठाई हैं, सारी कामयाबियॉ और कमालात हुजूर सल्ल0 वाले मुजाहदा, मशक्कत और तहम्मुल मे हैं। आज हमारा हर अजू बीमार है क्यो कि हर अजू से मुहम्मद सल्ल0 के खिलाफ अमल हो रहा है।

(मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

147

हालात और आमाल

फरमाया ! अल्लाह तआला ने इन्सान के हालात को चीजों से नही जाड़ा है बल्कि हालात को आमाल से जाड़ा है जैसे बोलने का जुबान से, सुनने का कान से, देखने का ऑख से तआल्लुक है चीजों से नही है। इन्सान पर हालात आमाल के एतबार से आते हैं अगर चीजों से हटकर आमाल दुरूस्त कर लिये तो अल्लाह तआला हालात अच्छे कर देगें और अगर इन्सान अपने आमाल खराब कर बैठे तो खुदा हालात भी खराब कर देगें। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

148

मस्जिद की आबादी

फरमाया ! मुहम्मद सल्ल0 ने सहाबा किराम रजि0 को बाजार के मुकाबले पर तैयार किया था, सहाबा किराम को बाजार की किसी चीज का आप सल्ल0 पहले नफा बताते फिर उसके मुकाबले पर उससे ज्यादा नफा मस्जिद के किसी अमल मे बताते, मस्जिद के आमाल मे इल्म का हल्का था, ईमान का मुजाकरा था, अल्लाह के ध्यान के लिये मुराकबा था और नमाज के वक्त पर नमाज का अमल था फिर इन्ही सब चीजों के लिये बाहर की नक्ल व हरकत थी। जिस तरह बाजार चीजों से आबाद किये जाते हैं हुजूर सल्ल0 ने बाजार के मुकाबले पर मस्जिद को इन आमाल से आबाद किया था। आज तो मस्जिद मे नमाज के लिये आने वाला ताजिर कहता है कि तुमने नमाज के बाद मुझसे मस्जिद मे रूकने को क्यों कहा ? मैं बाजारी आदमी हूँ अगर ज्यादा पीछे पड़ोगे तो मैं मस्जिद मे नमाज के लिये भी नही आऊँगा। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

149

अभी दुकानें और खेतियॉ नही करनी हैं

28 सितम्बर 1964 बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! खुदा की कुदरत आजाद है, उसकी कुदरत किसी मेहनत और शक्ल की पाबंद नही है कि आप चाहे अपनी महनत से मुल्क व पैसा हासिल कर ले तो ऐसा नही है, आपके चाहने से ये नही होगा बल्कि अल्लाह को अगर मुल्क व पैसा देना होगा तो देगें वरना नही देगें और मुल्क व पैसा देकर चाहे जिन्दगी बिगाड़ दें या बना दें। इसलिये सबसे पहले कलिमा لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ की आवाज लगानी पड़ेगी और इसी के साथ-साथ हमे इस बात की कोशिश भी करनी हैं कि जो आवाज हम लगा रहे है लोग भी इस आवाज को लगाने के लिये तैयार हो जायें, ये एक जबर्दस्त मेहनत है। अब इसको करते फिरो और मेहनत करते-करते कम अज कम तुम तो बदल जाओ, ये नही कि जब

सबका यकीन बदल जाये तब ही कुछ होगा, नही ! अगर तेरा यकीन ठीक हो गया और तू बदला तो तेरे बदलने पर खुदा दूसरों को बदलेगा। ये कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّٰهُ मेहनत करने के लिये है जैसे कलिमा दुकान मेहनत करने के लिये है, لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّٰهُ पर मेहनत करने के लिये एक काम दिया गया है जब तक कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّٰهُ की हकीकत न आये उस वक्त तक तुम ये न समझो कि तुम्हे दुकानें और खेतियॉ करनी हैं, नही ! बल्कि जब तक कलिमा لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّٰهُ न आ जाये उस वक्त तक तुम्हे दुकानें और खेतियॉ नही करनी हैं।

150

मेहनत का मैदान इबादत है

फरमाया ! इबादत पर तीन चीजों के साथ मेहनत करो 1 यकीन 2 इल्म और 3 ध्यान, आज दवाओं, कपड़ों, दुकानों और मुल्क व माल पर यकीन है, इल्म भी इन चीजों का खूब है, अब ऐसा आदमी नमाज को आया जिसे ना नमाज पर यकीन है ना नमाज के अमल से फायदे उठाने का इल्म है। नमाज के अमल से फायदे तो मेहनत से मालूम होते है पर इसकी सारी मेहनत बीबी बच्चों को खुश करने पर लग रही है, नमाज के लिये ना यकीन व एख्लास और ना इल्म, ध्यान भी बिचला हुआ, यकीन गलत और इल्म यूरोप और एशिया की चीजों का, ये इबादत की रस्म है इस बगैर रूह की इबादत स इसे कोई फायदा नजर नही आयेगा, जिस तरह बे रूह के इन्सान मे कोई फायदा नजर नही आता है। इसी वजह से लोग कहते हैं कि खाली नमाज से क्या होगा इसके साथ कुछ और भी तो हो, हम भी यही कहते हैं कि खाली नमाज से कुछ नही होगा बल्कि यकीन, इल्म और ध्यान के साथ वाली नमाज से होगा। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

151

नमाज के अमल से इन्सान नही बदलता

फरमाया ! मस्जिद मे जाकर आमाल का और उनके असरात का इल्म लो और आमाल क मुकाबले पर जो कायनाती शक्ले हैं उनकी खूब तरदीद करों, जाहिर मे चीजों से हटे हो तो बातिन से भी इनकी तरदीद करके हट जाओ। बीबी बच्चे, दुकान व माल और बैंक या खेती से तो निकल आये हो अब ये चीजें तुम्हारे बातिन से भी निकल जाये, तुम्हारा इन चीजों से निकल आना काफी नही है असल कोशिश इन चीजों का यकीन, तलब और मुहब्बत का अपने दिलों से निकालना है, खाली चार रकआत नमाज के अमल से इन्सान नही बदलता बल्कि यकीन, इल्म और ध्यान की मेहनत से इन्सान बदलता है, हुजूर सल्ल0 ने सहाबा किराम को इन्ही मेहनतो पर डाला था। (मज्मुआ बयानात जिल्द 6)

152

कलिमा-नमाज से सब कुछ हो जायेगा

28 सितम्बर 1964 बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हजरत मुहम्मद सल्ल0 की जिन्दगी को अपनाना ही वलायत है इसलिये सारी शक्लों को लात मारो और لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّٰهُ की शक्लों से लेना तैय करो, अब अल्लाह से कहो कि

"ऐ अल्लाह हमे भी वही नमाज सिखा जो तूने अबु बक्र रजि0 और औलिया किराम को सिखायी थी।"

अगर आज मुल्क मे जंग छिड़ जाये और बम गिरने लगें तो बता खाली मुल्क व माल से कैसे बचेगा ? ये अमरीका और रूस जो आज खुदा बने बैठे हैं जब वो खुद आग की लपटो से नही बच सकते तो उस आग से उनके परस्तार और उनके पूजने वाले, वो इस मुल्क व माल से कैसे बचेगें ? अगर तू ये नही जानता कि कलिमा-नमाज से सब कुछ हो जायेगा तो तू जाहिल है तू कुछ नही जानता।

153

मुल्क व माल के बगैर सब कुछ होता है

28 सितम्बर 1964 बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! कलिमा-नमाज के बगैर कुछ नही होता लेकिन मुल्क व माल के बगैर सब कुछ होता है अगर तू इसी जिहालत के साथ मर गया कि खाली कलिमा-नमाज से कुछ नही होता तो मुल्क व माल से

तेरे साथ कब्र मे क्या होगा ? कलिमा-नमाज से तू कब्र क अजाब से बच जायेगा या नही ? जहन्नम से बच जायेगा या नही ? अगर तूने ये कह दिया कि कलिमा-नमाज से क्या होगा ? तो कहीं कयामत मे अल्लाह तुझसे ये न कह दें कि तू ही कहा करता था कलिमा-नमाज से क्या होगा तो जा दोजख मे जा कि तेरे कलिमा-नमाज से वाकई कुछ नही होता।

154

मुल्क व माल के बगैर सब कुछ होता है

28 सितम्बर 1964 बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! पहले कलिमा-नमाज सीख लो, कलिमा ये है कि जितनी शक्लें ऑंखों से दिख रही हैं उनकी तरदीद दिल मे बैठ जाये कि इनसे नही होता लेकिन कायनात और कायनात के अन्दर की शक्लों की तरदीद हमारे दिल मे कैसे बैठे ? इसके लिये हमे क्या करना पड़ेगा ? इसके लिये हमे कलिमा-नमाज को लेकर फिरना पड़ेगा लेकिन फिरने के वक्त अपनी जुबान से होशियार रहना क्यों कि जुबान निफाक की जगह है अगर जुबान बोले पर दिल उस बोल की तस्दीक ना करे तो ये निफाक है जैस जुबान कहे कि जहर से नही होता और दिल कहे कि जहर खालूॅगॉ तो मर जाऊॅगा तो ये निफाक है इसलिये अपनी जुबान से हाशियार रहना, हॉ अगर जुबान ना बोले और दिल बोले तो ये ईमान है। जुबान भी बोल और जुबान के साथ दिल भी बोल तो भी ईमान है। जुबान बोल कि मेरी मेहनत से माल नही आता तो दिल मे कलिमा आता है इसलिये इन्कार करो कि किसी से नही होगा अल्लाह करेगें, वो चाहेगें पैसे से करेगें और चाहेगें तो बगैर पैसे के करेगें, उनका फेल किसी चीज पर मौकूफ नही है, कितने ही वजीर हमारी ऑंखें के सामने अस्पतालों मे सड़-सड कर मर रहे हैं सारा मुल्क उन्हे मरने से नही रोक पा रहा है।

155

मंदिर मे पहुॅचे तो मंदिर वाली बात

28 सितम्बर 1964 बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! आज लोग कहते हैं कि मियॉ कारखाना बना लो तो कामयाब होगे, तुम कहो कि कारखाने से क्या होगा ? यकीन ठीक करो कि अल्लाह करता है और अमल पर करता है अगर अमल ठीक होगें तो अल्लाह कर देगें, ये नही कि अब तुम भी इन्ही की तरह बोलने लगो कि हॉ भाई ! कामयाब होने के लिये कारखाना भी होना चाहिये, परवरिश के लिये जमीनदारा भी चाहिये, शिफा के लिये दवा भी चाहिये, ये तो वही बात हुई कि मंदिर मे पहुॅचे तो मंदिर वाली बात और गिरजा मे पहुॅचे तो गिरजा वाली बात कह दी, इस तरह बोलने से कलिमा नही आयगा बल्कि हर जगह ये बात कहो कि किसो से नही होता अल्लाह करते हैं और ये बात हमेशा अपने सामने रखो कि य नबियों वाला रास्ता है और नबी मुल्क व माल मे नही धुसते थे बल्कि उन्होने तो माल वालों से यूॅ कहा कि ऐ माल वालों माल को इस-इस तरह खर्च करो वरना बर्बाद हो जाओगे, यूसुफ अलै0 ने यूॅ नही कहा था कि तुम्हारे मुल्क से हो जायेगा बल्कि उन्होने यूॅ कहा था कि अगर तुम अपने मुल्क की फलाह चाहते हो तो मैं अल्लाह की मंशा को सामने रखकर उसके मुताबिक मुल्क को चलाऊॅगा तब ही तुम कहत से बच पाओगे।

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ

(सूर यूसुफ-55)

156

सबसे बड़ी हिमाकत

01 रबीउल अव्वल 1384 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! आज इन्सान जिन मुसीबतों और बलाओं का शिकार है वो धोखे की मेहनत मे मुब्तिला होने की वजह से है, आज इन्सानों ने कामयाबी नक्शों मे करार दे रखी है खुद अपनी जात मे नही, बस यही इनकी सबसे बड़ी हिमाकत है।

157

खुदा चीजों पर नाराजगी के तौर पर पालता है

01 रबीउल अव्वल 1384 हिजरी बंगले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अगर चौबीस घन्टे की जिन्दगी हजरत मुहम्मद सल्ल0 के तरीका ए अमल पर ले आयी जाये तो खाना भी आमद है, पहना भी आमद है। इसलिये नक्शों से मिलने का जहन तोड़ो अमल से मिलने का जहन बनाओ तो अल्लाह उन अमलो पर अपनी जात से हमारी परवरिश फरमायेगें, खुदा चीजों पर नाराजगी के तौर पर पालता है और अमल पर रजा के तौर पर पालता है। अब इस मशीन से जिससे अमल तैयार कर रहे हो तो दावत के, तालीम के, जिक्र के अमल तैयार करते हुए नमाज पढ़ो अल्लाह इसी पर तुम्हारी परवरिश करेगें अगर कमाई मे न भी घुसो तो थोड़ी सी मेहनत ये करनी पड़ेगी कि चाहे जितने फाके आ जायें किसी के सामने इज्हार-ए-हाल न करो, ख्यानत न करो, शिकवा-शिकायत न हो कि जिधर मौला उधर शाह दौला अगर कमाई करो तो समझ लो कि कमाई के अन्दर भी ईमान पर मिलेगा, कमाई मे ईमान का लो, कमाई मे इल्म का और जिक्र का लो। कमाई मे इस यकीन से जाओ कि हम कमाने से नही पलते खुदा पालता है, अब इस यकीन को महफूज रखकर दिखलाओ यानी जब तुम कह रहे हो कि औरतों से मुझे मुहब्बत नही नफरत है तो किसी वक्त आजमाईश के लिये तुम्हारे पास अकेले मे औरत लाकर बिठा दी जायेगी कि देखें अब क्या करते हो।

158

अल्लाह बड़ा है

اَللّٰہُ اَکۡبَرُ

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! एक आदमी के पास सौ बीघा जमीन है और सारे मुल्क की जमीन उससे बहुत बड़ी है फिर सारी दुनियॉ की जमीन उससे भी बड़ी है और सातों जमीन व सातों आसमान उससे बहुत बड़े है पर اَللّٰہُ اَکۡبَرُ अल्लाह सबसे बड़े है अगर अल्लाह चाहें तो

सारे नबियों को एक हुक्म से दोजख मे डाल दें कोई चूँ करने वाला नही,
सारे फरिश्तों को एक हुक्म से आग मे डाल दें कोई उफ करने वाला नही,
अब अल्लाहु-अकबर कहा तो छोटा-बड़ा चूहा भी कहा जाता है, बड़े के बार मे ये नही है कि जिसके कान मे लफज ‘‘बड़ा’’ पड़ गया उससे तुम्हारे मसअले का कोई तआल्लुंक हो कि बहुत बड़ा कारखाना या बहुत बड़ा मुल्क तो ये सब ऐसे हैं जैसे बहुत बड़ा चूहा, अब एक छोटे से बिल्ली के बच्चे ने कहा म्याऊँ, ऐसे ही ये जितने बड़े हैं कलेक्टर साहब, वजोर साहब, जमीनदार साहब, खुदा-ए-पाक की कसम ! जो आदमी खुदा के गैर को बड़ा इकरार देते हैं वो ऐसे हैं जैसे चूहे को बड़ा मानने वाला अगर एक फरिश्ता म्याऊँ कर दे तो वजीर-ए-आजम की हैसियत एक बड़े चूहे से ज्यादा नही हैं। मलकुलमौत से कहा जायेगा कि जा अर्श वाल फरिश्तों की रूह निकाल दे, निकाल दी। अब कौन बाकी ? हम चारों बाकी, जाओ उन तीनो की भी रूह निकाल लाओ। अब कौन बाकी ? जी आप बाकी और मैं बाकी, तू भी मर जा, वो भी मर गया। ये क्या बड़े हुए अरे बड़ा वो हुआ जिसके हुक्म से ये सब कुछ हो रहा है। तआरूफ के तौर पर छोटा-बड़ा बोला गया कि कारखाने, ऐटमबम, हवाई जहाज, राकेट छोटे हैं अकेला अल्लाह बड़ा है।

159

अल्लाह के ऐतबार से इस्तेमाल होना सीख ले

4 रबीउलअव्वल 1384 हिजरी को ही बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! अल्लाह की आवाज लो और अल्लाह की बड़ाई की आवाज ला, तौहीद की आवाज लो और कोई जगह ऐसी न छोड़ो कि अपनी बिसात भर मेहनत करके इस आवाज पर लोगो के कदम न उठवा लो। सारी जमीने, सारा मुल्क व माल सब कुछ तरे पैरों के नीचे होगा अगर इस काम की ताकत तुझे देखनी है तो इस काम को इस तरह करो जिस तरह जाहिल इन्सान सियासत पर, मुल्कगीरी पर, दुकानो और कारखानों पर मेहनत करता है कि बस रात-दिन उसी की धुन, सोते-जागते वही नक्शे अगर तू अपनी बोटी-बोटी कटवा दे या रात-दिन जंगलों मे मारा-मारा फिरे तो क्या तू खुदा की बड़ाई का हक अदा कर सकता है ? तेरे पास क्या है कि उसी की दी हुई एक हकीर सी जान और उसी के दिये हुए चन्द ठीकरे हैं, जब तू इस जान को और इन ठीकरों को उसी की बड़ाई बोलने मे लगा देगा फिर उसके खजानों मे जो कुछ है वो सब तुझे देने के लिये अपने खजानों के दरवाजों को खोल देगा। अब तू बाहर निकल कर चौबीस घन्टे अल्लाह के ऐतबार से इस्तेमाल होना सीख ले फिर वापस आकर इसी मेहनत को करने के लिये मस्जिदो मे ज्यादा वक्त लगा तो तेरा देखना ठीक होगा, तेरा बोलना ठीक होगा, तेरा सुनना ठीक होगा, तेरा सोचना ठीक होगा, तेरा चलना ठीक होगा।

160

आमाल खुदा के गैर के वजूद की बुनियाद पर नही हैं

6 जिलहिज्जा 1378 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! हुजूर सल्ल0 वाले अमल खुदा की जात से फायदा उठाने का जरिया है पर ये आमाल एक मेहनत चाहते हैं। ये आमाल खुदा के गैर के वजूद की बुनियाद पर नही हैं इसीलिये अमल से पहले गैर की नफी करायी गयी है कि لَا إِلَهَ कहलाकर ही إِلَّا اللّٰهُ कहलाया फिर इसके बाद مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ को तस्लीम कराया कि परवरिश करना, इज्जत व जिल्लत देना, सेहत व बीमारी देना, खौफ व अमन देने का तआल्लुक गैर से नही है बल्कि खुदा की जात से है। मुल्क व माल सामने रखकर आमाल नहो दिये गये है जो लोग ये देखेगें कि किस सूरत से माल बढ़ेगा, मुल्क व मकान मिलेगा तो ये लोग हुजूर सल्ल0 वाले आमाल पर नही चल सकेगें सिर्फ एक ही बात सामने रखकर हुजूर सल्ल0 वाले आमाल दिये गये हैं कि

لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ

पेट भरना, इज्जत व जिल्लत, सेहत व बीमारी और खौफ व अमन का तआल्लुक गैर से नही है बल्कि खुदा की जात से है और इनका तआल्लुक हुजूर सल्ल0 वाले आमाल से है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

161

गैर के वजूद का इंकार

6 जिलहिज्जा 1378 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे फरमाया ! لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ की मेहनत मे सबसे पहले गैर के वजूद का इंकार करके अल्लाह की जात का इकरार करना और لَا को तन्हा बतलाना अल्लाहुअकबर की मेहनत है। हुकूमत मे जो कुछ दिखलायी दे रहा है वो हुकूमत का जाती नही है बल्कि वो खुदा की जात मे मौजूद है लिहाजा

لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ

का मतलब ये हुआ कि गैरउल्लाह से राब्ता कायम करने के बजाये खुदा की जात से राब्ता कायम करो और अगर ऐसा कर लिया तो फिर तुम्हारे लिये ऐसा इन्तेजाम हो जायेगा जो खुदा की रजा मे है।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ

मे वजूद की नफी भी है, इस्बात भी है, वजूद का तआल्लुक कहॉ है और कहॉ नही है तो ये कलिमा गैरउल्लाह से हमारे तआल्लुक को तोड़कर खुदा की जात से तआल्लुक का कायम करता है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

162

खुदा की कुदरत बदल नही गयी है

6 जिलहिज्जा 1378 हिजरी को बगंले वाली मस्जिद मे ही फरमाया ! खुदा की कुदरत आजाद है सबके बगैर वो जो चाहे बना दें, जिस तरह जन्नत दोजख, फरिश्ते व आसमान, गल्ला व फल और जानवर व इन्सान, ये कुछ नही थे खुदा ने इन्हे महज अपनी क्वत से बना दिया, अब खुदा की कुदरत बदल नही गयी है शक्लों के वजूद मे आने की वजह जिस तरह उस वक्त खुदा की जात पर मौकूफ थी उसी तरह आज भी खुदा पर मौकूफ है। जरूरी नही है कि खेती होगी तो गल्ला पैदा होगा खुदा चाहे तो बगैर खेती के गल्ला बनाकर दिखला दें। (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

163

इन्सानों की हिदायत का जरिया कौन बनेगें

ढाका पाकिस्तान मे फरमाया ! माल वाले, हुकूमतें, ताजिर, अमीर या तायदाद वाले, इन्सानों की हिदायत का जरिया नही बनेगें बल्कि इन्सानों की हिदायत का जरिया वो बनेगा जिसे अपने ओहदे, अपनी इज्जत, अपने रिस्तेदार, अपने दोस्त, अपनी जान और अपना माल क़ुरबान करना आ जाये। (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

164

मुत्तकी बनने की पॉच शर्ते

ढाका पाकिस्तान मे फरमाया ! मुत्तकी बनने की पॉच शर्ते हैं, 1 ख्वाहिशात पर सब्र करना, 2 अल्लाह की मंशा पर पूरे उतरना और उनके हर हुक्म की तक्मील करना, 3 जान देने के अहकाम को बजा लाना, 4 माल देने के अहकाम पर पूरे उतरना, 5 गुनाह ना करना और गुनाह का इकरार देकर माफी मांगना, यही मुत्तकी है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

165

कौन सी औरत जानिया के हुक्म मे है ?

ढाका पाकिस्तान मे फरमाया ! शैतान की मआशरत की बुनियाद माल और औरतें हैं, ओरत ऐसा इत्र लगाये जिसमे खुशबू ना हो रंग मिला हुआ हो, जो औरत अपने घर के अलावा सजकर निकले वो औरत जानिया के हुक्म मे है।

(मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

166

जिन्दगी के मसाएल के लिये मेहनत के दो तरीके हैं

29 मई 1962 लखनऊ मर्कज मे फरमाया ! जिन्दगी के मसाएल के लिये मेहनत के दो तरीके हैं, एक तरीका ये है कि इस कायनात की जिन चीजों से मसाएल हल होते नजर आये सीधे उन चीजों पर मेहनत की जाये जैसे गल्ला हासिल करने के लिये जमीन पर मेहनत की जाये, दौलत हासिल करने के लिये दुकानों पर मेहनत की जाये यानी जो चीज इस दुनियॉ में जहॉ से हासिल होते हुए नजर आये उसके हासिल करने के लिये बस उसी शै पर मेहनत की जाये। ये तरीका आम इन्सानों को बल्कि हैवानों को भी पता है, दुनियाँ के सारे हैवानात का यही हाल है कि इनको जो चीज जहॉ से निकलते हुए दिखायी देती है उसको वहीं से हासिल करने की कोशिश करते हैं, इसके आगे पीछे वो कुछ नही जानते।

दूसरा तरीका अम्बिया अलै0 और इनके साथियों का है वो ये यकीन सीखते है कि सब कुछ अल्लाह के कब्जे अख्तियार मे है ये उसके जैरो हुक्म है कि जो गल्ला जमीन से निकलता हुए दिखायी दे रहा है वो अल्लाह के हुक्म से निकलता है,

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ

सेहत व शिफा जो बजाहिर दवा से हासिल होती हुई मालूम होती है दरअसल अल्लाह के हुक्म से हासिल होती है

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ इसी तरह माल जो बजाहिर तिजारत और दुकानदारी से हासिल होता हुआ नजर आता है दरअसल अल्लाह के हुक्म से मिलता है अगर अल्लाह ना चाहें तो ना मिले। गरज इस कायनात से जो कुछ होता हुआ नजर आता है अम्बिया अलै0 ने बतलाया कि ये उस चीज से नही होता बल्कि अल्लाह के हुक्म से होता है,

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ

إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

इसलिये उनका और उनके मानने वालो का तरीका ये है कि ये इन चीजों को आमाल और अख्लाक के रास्ते से हासिल करते है। इसलिये कभी कभी तो वो जाहिरी और दुनियावी असबाब को हाथ लगाये बगैर ही बिल्कुल मुअज्जना तौर पर अल्लाह तआला से बड़ी बड़ी तब्दीलियॉ करा लेते हैं।   (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

167

जाहिरी और बातिनी जिन्दगी का नक्शा बदलना होगा

29 मई 1962 लखनऊ मर्कज मे फरमाया ! इस काम के करने वालों को अपनी पूरी जाहिरी और बातिनी जिन्दगी का नक्शा बदलना होगा और इस सबके साथ ईमान व अच्छे आमाल और अख्लाक वाली जिन्दगी को हासिल करने क लिये अल्लाह के रास्ते मे मेहनत व मुजाहदा करना पड़ेगा।   (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

168

मस्जिदों मे मुहल्लों के सरमायेदारों की बात चलती है

29 मई 1962 लखनऊ मर्कज मे फरमाया ! मस्जिद दरअसल ईमान हासिल करने की जगह और ईमानी जिन्दगी की तालीम व तर्बीयत का मर्कज थी जहॉ हर वक्त ईमान अफराज माहौल और ईमान के तज्किरे होते थे और अल्लाह तआला के साथ जिन्दा तआल्लुक कायम करने के लिये नमाज का अमल था। नमाज पूरी जिन्दगी की हर नक्ल व हरकत मे अल्लाह तआला की फरमाबरदारी करते हुए हुजूर सल्ल0 की पैरवी की मश्क व तर्बीयत का एक निजाम है लेकिन अब मस्जिद मे मुहल्लों के सरमायेदारों की बात चलती है क्यों कि मुअज्जिन और इमाम साहब को वही तनख्वाह देते हैं और दूसरे इन्तेजाम भी वही करते है इसलिये मस्जिद मे उन्ही की चलती है और कुदरती तौर पर मस्जिदों मे उन्ही का मिजाज और तरीका होता है। (मज्मुआ बयानात जिल्द 1)

169

जुल्म का नारा न बनाओ

1 अप्रैल 1965 ई0 बाद नमाजे मगरिब बिलाल पार्क, लाहौर मे फरमाया ! तुम कौम के, वतन के और कबीले के बनके न चलो, अल्लाह के बनकर चलो परदेसियों और मकामियों का मसला हो तो उसे जुल्म का नारा न बनाओ, किसी को अगर सिंधी और पठान कहा तो यह जुल्म का नारा है। जब आदमी जुल्म करे जाहिलियत और असबियत पर मदद करे तो नमाज और रोजा मुंह पर फेंक कर मार दिया जाता है। मुस्लिम ने हिन्दू को मारा और तुमने मुस्लिम की मदद की तो तुम जालिम बने, हर मसले में वाकिया की तहकीक करा। सिंधी ने पंजाबी को पीटा, पंजाबी ने पठान का माल दबाया अब कहो कि जुल्म और इंसाफ का मसला है, मुसलमान से इंसाफ दिलाना है। इंसाफ वाले सरों पर आते है और जुल्म वाले पैरों पर गिरते है इंसाफ पर खुदा ऊपर लाएगा, नुबूवत की बुनियाद पर मदद होगी कौन मज्लूम है ? कौन जालिम है ? यह देखा जाएगा। (हजरत जी की यादगार तकरीरें)

170

हम किसी को अपनी तरफ नही बुलाते हैं

29 मई 1962 लखनऊ मर्कज मे फरमाया ! ना हम किसी को अपनी तरफ बुलाते हैं ना हम किसी तंजीम और पार्टी मे शामिल होने के लिये कहते हैं बल्कि मश्क और मुजाहदे के जरिये हुजूर सल्ल0 की लायी हुई ईमानी जिन्दगी हासिल करने और दुनियॉ मे इसको फरोग देने की दावत देते हैं कि मस्जिदों मे ईमान के तज्किरे और ईमानी मज्लिसे हों, तालीम व तआल्लुम का हल्के हों, जिक्र व इबादत हों, ईमान व अमल की फिक्रें और इनके बारे मे मश्विरें हों और इनके तकाजों के लिये नक्ल व हरकत का मर्कज मस्जिद हों गरज ये कि हुजूर सल्ल0 के जमाने मुबारक मे मस्जिद नबवी और दूसरी मस्जिदों मे चौबीस घटें जो कुछ होता था वही हमारी मस्जिदों मे हुआ करे हम बस इसी की दावत देते है,

(मज्मुआ बयानात जिल्द 1)